"अमृत सागर"

परम संत परम दयाल



स्वामी गोविन्द कौल

"अमृत सागर"

— —

सर्वाधिकार सुरक्षित
श्रीमती कमलावती काचरु

—०—

प्रकाशक :
महेन्द्र नगर आश्रम—सत्संग घर (जम्मू-तवी)

भाग—II

दूसरी आवृति
1985

मूल्य : 18/- रूपये



स्वामी गोविन्द कौल

गुरुर्ब्रह्मा, गुर्रविष्णू, गुरुर्देव, मश्हेवर: ।
गुरु साक्षात परब्रह्मा तस्मै श्री गुरुवे नम: ॥

विनम्र निवेदन

यह जगत असत्य है, अन्धकार है। मानव मात्र को अन्धकार से मुक्त होना है। सत्य को खोजना है। वास्तव में मानव-जीवन की यात्रा अन्धकार की ओर से प्रकाश के हेतु गमन की यात्रा है। परन्तु जैसा उपनिषदों में कहा गया है कि यह जगत उस परम की उस अनन्त असीम, शाश्वत, अच्युत. निर्विकार अविनाशी परब्रह्म की रचित लीला है। माया है। मानव यहां जन्म लेकर अपने निहित लक्ष्य को विस्मरण करके लीला से, माया से भ्रमित हो जाता है। वह काम, क्रोध, मोह, अहंकारादि विषयों में फंस कर इस नश्वर शरीर, विनाशी देह तथा तत्वों पदार्थों को ही जीवन का उद्देश्य मान कर अमूल्य तथा एक मात्र मोक्ष के साधन, इस जीवन को व्यर्थ व्यतीत करके आवागमन के चक्र में फंसा रह जाता है ।

नर देह एक उपलब्धि है। मानव के पास चिन्तन शक्ति है। मनन का बल है। इसी लिए इसे मानव कहा गया है। वह स्वयं का अध्ययन-चिन्तन कर सकता है। वह इस निष्कर्ष पर पहुंच सकता है कि वह क्या है और वह क्या हो सकता है। वह अपने अन्तस का मन्थन-अन्वेषण कर सकता है। मानव एक विधेयक है। वह एक बड़े सत्य, परम लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु संकल्प भी कर सकता है और समर्पित भी हो सकता है ।

प्रकाशित भक्ति रचनाएं, जिनके रचियता स्वामी गोविन्द कौल जी हैं। सत्य के पिपासु तथा उपासना के जिज्ञासु भक्त-जनों के लिए

सुमार्ग प्रशस्त करने में परम सहायक सिद्ध हो सकती है। इनके द्वारा जिज्ञासु अपने भीतर उस दिव्य को अनुभव करने हेतु भक्ति का बीजारोपण कर सकते हैं।

उस जगद्पिता परमेश्वर, परम ज्योति के समक्ष तनिक भी जाति भेद, बड़ा, छोटा, विद्वान, अज्ञानी किसी प्रकार का भेद भाव नहीं है। उसके समीप मानव का सबसे बड़ी सम्पत्ति विनम्रता, दया, करुणा सहानुभूति तथा परोपकार है।

इन रचनाओं द्वारा जो सन्देश आदरणीय स्वामी जी ने श्रद्धालुओं, पिपासु भक्त जनों को दिया है। उसे श्रद्धा पूर्वक ग्रहण करने से अन्त:करण की शुद्धि तथा विषयों का संक्रमण सम्भव है। स्वामी जी कहते हैं— मन से सब सकल्प हटावो।

वास्तव में यह मन ही है जो मानव को विकारों, विषयों की ओर ले जाता है और यही वह शक्ति है जिससे मानव अन्धकार से प्रकाश की ओर अग्रसर हो सकता है। स्वामी जी ने मन के संक्रमण पर अधिक बल दिया है।

मन की तीन अवस्थाएं तथा तीन ही धरातल हैं। मन की पहली अवस्था है। सामान्य सांसारिक और सामान्य भौतिक तथा पदार्थक ज्ञान की अवस्था। यह अवस्था अधिकता में है। दूसरी अवस्था है- अधोगमन। जैसे जल नीचे ही की ओर बहता है। उसी प्रकार मन भी नीचे की ओर गिरता है। यह बाहिर के सौन्दर्य, आर्कषण, क्षणिक आनंद, क्षणिक भोगों का ओर शाघ्रता से भागता है। परिणामार्थ मन एक सशक्त चालक तथा मानव उसका घोड़ा बन कर रह जाता है।

मन की उत्कृष्ठ तथा लक्षित अवस्था है अर्ध्वगमन। मन का ऊपर की ओर बहाव मन का ऊपर की ओर उठना। हमारे भारतीय दर्शन के

अनुसार उपासना— योग के तीन भागों को श्रेष्ठ तथा मानव की अवस्था तथा परिस्थितियों के अनुसार स्थापित किया गया है। वे मार्ग हैं भक्ति मार्ग अथवा भक्ति योग। कर्म मार्ग अथवा कर्म योग। ज्ञान मार्ग अथवा ज्ञान योग।

प्रारम्भ करने में यह तीनों मार्ग भिन्न दिखाई पड़ते हैं, परन्तु तीनों एक ही लक्ष्य को प्राप्त होते हैं। इन तीनों द्वारा मन ही का संक्रमण, उसका ऊपर की ओर गमन तथा संशोधन सम्भव कहा गया है। इसीलिए स्वामी जी बार-बार मन ही पर बल देते हैं।

स्वामी जी कहते हैं—

"वासनायि चठ मन प्रान जरु पठ रठ"

वासना को वश में करके मन तथा प्राण को केंद्रित करें।

क्रयायि जोरय मन गछि पावुन

मन, कर्म वचन द्वारा किए गए सद्कर्मों से मन पवित्रता सम्भव है।

मनि कासु चख तय दुय लोलो

मन की दुविधा तथा द्वन्द को समाप्त करके ही परमपिता का मिलन सम्भव है।

मनि रुखमनि वुथन ब्यहन दवन

भगवान को यों स्वयं में बसा लो जैसे रूकमणि उठते-बैठते, जागते-सोते भगवान कृष्ण का स्मरण धारण किए रखती थी।

पोष्य कर्य च्यतस त मनस चानि प्यठ पूज़ायि ना।

अपने मन रूपी पुष्प को भगवान के चरणों में समर्पित करने हेतु इसमें सुन्दरता तथा सुगन्ध भरो।

उस परम सत्य, परम पिता, सच्चिदानन्द की शरण में स्वयं को

आमूल समर्पित कर, कर्ता, कर्म तथा क्रिया उसी को जानकर उसी में लीन होना ही एक सच्चे भक्त की आकांक्षा तथा उसकी आसक्ति-भक्ति की पराकाष्ठा है ॥

सभी प्रकार की विधियों का, निवारण तथा मुक्ति हेतु किए गए भजन, तप, त्याग, योग साधन सभी की चरम सीमा एक मात्र समर्पण है। यही इस ग्रन्थ का सार है।

परन्तु समर्पण के तीन स्तर हैं। एक समर्पण एक पत्थर की भान्ति है जो स्वयं को सागर को समर्पित कर देता है, परन्तु वर्षों पर्यन्त निकालने पर वह कदापि आंशिक भी भीगा हुआ नहीं मिलता है।

दूसरे स्तर का समर्पण वस्त्र जैसा है। वस्त्र पानी को जल को सोख कर भीग तो जाता है, परन्तु अपना रंग तथा अस्तित्व नहीं छोड़ता।

तीसरा तथा उच्चतम समर्पण है खांड जैसा। खांड जल में गिरती है फिर धीरे-धीरे अपना अस्तित्व मिटा देती है। वह लीन हो जाती है। उसका आमूल विलय हो जाता है। और फलस्वरूप वह सारे जल को मीठा कर देती है। सच्ची भक्ति की चरम सीमा परम में लीन होना, विलय होना और शेष अपने पास कुछ न रखना है।

आशा है भक्त-बन्धु इस भक्ति रस से ओत-प्रोत काव्य संग्रह को धारण करके भक्ति-साधना के पथ पर अग्रसर होते हुए जन्म सफल करेंगे। उनके साथ पूजनीय मातेश्वरी जी की मंगल कामनाएं हैं। मातेश्वरी के साथ पृथ्वी नाथ पंडित जी का आर्शीवाद भी भक्तजनों के साथ है।

आपका :

एक भक्तिरस पिपासु





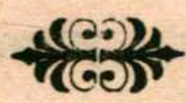
श्रीमती कमलावती काचरू



पृथ्वी नाथ पंडित जी

प्राण
नाद
दर
सुय
सम
अम
कुनु
सम
बुछ
सुय
ग्यर
सत
तीन
जि
वि
अन
जल
सन
पूर्ण
थ
अ

अनुक्रमणिका





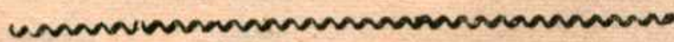
सतचित आनन्दह गोवेन्दह निस्पन्दह नमाहिम

चिदानन्दह सदानन्दह परमानन्दह नमामिहम

दीनदबन्दह दयास्यन्दह निर्द्वन्दह नमामिहम

सानि जुवह सदाशिवह गोवेन्दह नमामिहम







प्राण पानय

प्राण पानय तुरय दवन,
लोलऽ ग्यवन सू तऽ सू ॥

मऽठ जपऽमाल वस्य प्यथि ग्रन्थ,
खुलऽ सपुद नादऽ ब्यन्द,
अन्द लगुम दवन तऽ दवन ॥

कुन मोचि गन्जरि त्रे,
समताथि अमृत चि च्य,
अनुग्रह कोर परमऽ शिवन ॥

वुछत व सुय परमऽ ज्यूती,
वछतव तोहय ऋष्य पूती,
तत सीती होश थवन ॥

गुरूय युक्ती छय व्यशशीश,
च्यन बा गुरू उपदीश,
कुल कलीश वस्य छि प्यवन ॥

छ्यन नो छुय तथ सातस,
दोहस ब्यथि रातस,
युस यि ववन तस ति बवन ॥

गूव्यन्द टोठयोय च्य दयी,
करतऽ बा सहज़ऽ क्रयी,
तय च्य करिथ सत भवन ॥



नाद लायय

नाद लायय लोल हृच बो
सानि ईश्वरो वलो !
चानि चाने कोरम्य वंऽसे
रोस च्य क्या करो वलौ ॥ नाद

दिलम्य न्यूथम मच ब् करथस
छुख ति दिलाराम सोन !
द्विल बन्दय दिलबरय म्याने
क्या म्य दिल बऽरो वलो ॥ नाद

दुब: वंऽलिज फरेनय छम
याम याद छुहऽम प्यवान !
दिल फोलि पंपोष जन म्यान
म्यानि भासकरो वलो ॥ नाद

कमल पादन चानिय यय—
कमला पऽर पऽर लगी !
आयस अशि टऽर बरिथय
शेव शंकरो वलो ॥ नाद

वऽकफ म्यनिस च ह्यलस
खत खालस सऽर सय !
पतलारय पंऽपोरि गथ
कर च्य गाशरो वलो ।। नाद

ल लः बेमारे ब मऽरिस
चोन दर्शुन दस दवा !
त्यलि ति इखना यलि बः मरय
छुयना जरः ज़रो वलो ।। नाद

चानि वापत मच ब गऽमच
सऽच ब चानि छुस दऽरिथ !
गटि मंज़य गाश अनतम
आश आश्चरो वलो ।। नाद

दर्द दिलय बावि गूव्यन्द
कसच्य रोस वनतम च म्य !
लोल आमो बुकः बारेय
पनिन्य सथगोरो वलो ।। नाद



दर दिल

दर दिल बोज़ दर्दमन्दो
नाद लायय सानि गूव्यन्दो ।।

पान पुशरुम मोशरुम सोरुय
कुन कथि हुन्द कोरूम न गुरूय
मटि वन्य छुय सोनुय बोरूय ।।
सूर कोरनम चन्य लोल नारन
दम दमय छस च्य गारन
वादस चऽनिस छस प्रारान ।।
पथ च्य द्रायस कऽबील क्याने
चानि चाने कोरम्य लाने
म्योन हाल वन्य दयी ज़ाने ।। नाद
क्याज़ि लऽजथस बः लूक् पामन
हाल पनुनुय वन क्या खामन
चाख दिमना वनतम बः जामन । नाद
कुनि चोज़ुक नय ओस त्यलि गमय
योद्य गेलम्य ति आलमय
बस रोज़ खोश च्य हर दमय ।।
क्याः मे गुदरेव यि कुसू माने
बोज़न वालि सथ गोरः म्याने
यस न गुदरऽव सु क्मोह ज़ाने ।। नाद
छस बः बेताब न्यूथम सबरऽय
क्याह कुनि सातः ह्य ज़िहऽम खबरय
छावनि यिख कर लोलः बबरय ।।
वन्य छः आशा दयव यिख हालय
नाव चोनुय छुय दयालय
त्यलि वनय पनुन् अहवालय ।।

पानय पानस आलव लायन
ब्योन ब्योन फल बऽगरन मायन
खोश गूव्यन्द लोल: पूज़ायन ॥

यो म्य गुद्वरय्व ति कसू गुदरोव्व
अथि यिथिय लाला म्य रोव
गूव्यन्दन सन्थन नय त्रोब: ॥

गूव्यन्दन ओय लोलय ग्यवनय
नऽव नऽव वाणी छस नवनय
अनग्रह कोरमुत छुस शिवनय ॥



सुय बोय

सुय बोय अथ मंज़ कांह न शखय
चजम चखय दुयी मने ॥

चकर चुरासी लखय
मुकली यस भ्रम फासी छयने
छ्यनि तस मनि गंड़ तय शखय ॥

सुय बोय वीदच यि ह्यखत ऋखय
प्रज़ नाव पान सुय चय अने
सत च्यत आनन्द ज्योति अलखय ॥

माहक छ्यन म कर्य २ परवय
वुछ छांड़िथ छुसु ब्रोठकने
कर व्यचार प्राव सुख दि थकय ॥
त्राव दिहि अध्यास बोड़ फखय
गुणातीत शिव चय वुने
ज्ञान नार दज़ि वास नायि रखय ॥
गरूब मचि न्यन्दरि तुल हखय
बनि यस पानस तस नने
करन रोस्त तारय वोर हखय ॥ चजम
परत पान कुन व्यन्द प्राव सुखय
ज्ञान शिव सोर सनि वोगने
सोर पनुन क्या बावखय ॥ चजम
भो ज़ुव कर ज्याद बख बखय
पान सान ज़ान दय हनि हने
सहज़ भाव प्राव चली दुखय ॥ चजम
राग दोश सन्कल्प टूखय
कर व्यचार शोदी बने
नत मारञ्ज फजूल जखय ॥ चजम
व्यशवय भय त्राव्य रुद्य न फ्रखय
ज्ञान र व खोत ज़न पूरि कञ्ने
गूब्यन्दस मनि गट न अखय ॥ चजम



सम अमर्यंत

सम अमर्यंत के रिथ नोश
छिय मद होश मस्तानय ।।

न्यशत्रय क्याह् करि तथ बुद्ध
छु बोज़ पर सू न्यति शुद्ध
बीद सन्त अति गयि खामोश ।। छिय

चोलुय ज्यन मरुनुक ख्युत
पोतिम ब्रूठिम कोरमुत
सोर मुत कोर फरा मोश ।। छिय

दुयी परद थोदय तुल
वुछ पान ह्यथ दयी कुल
तुलख यलि त्यलि तोश ।। छिय

कचहरो दिथ कुञ्ग नो छु दय
सुयय च्य ह्यथ पानस पय
पोज़ वननस असि मो रोश ।। छिय

सोनुय जुव छु सदा शिव
ब्रिज्ञान र व वुदय गप
हृदय फोल ज़्न पम्पोश ।। छिय

पान मोठ मुत याद पोवथ
नत क्याह् प्रोवुथ त्रोवुथ
कथ प्यठ अद खस्यी बोश। छिय

अवांग मनस अगूचर
सुय वुय यि तस पूज कर
लाग दिह् अभिमान पोश ॥ छिय

रुस छाज्याव सु असो
चठ व्यचार भ्रम फासो
वीद गुरु वाक्यन थव गोश ॥ छिय

वनि हे न गूव्यन्द यूत नोन
आन चलिथ वुछुन कॅह् न ब्योन
प्रेमुक छुस आमुत जोश ॥ छिय



अमर्यंत च्यतस

अमर्यंत च्यतस कर पान च्यतस
च्यतस बीद नो द्रावय हो ॥

दृशस मनस बोज़ तय च्यतस
च्य मंज़ अत्यन्त अभावय हो
सन्त वीद गन्यान तति हारतस ॥ च्य

वुठ छिन फोरन ग्यवान म्यतस
वर ज़िथ रूप तय नावय हो
मूद्य रिन्द ज़िन्द अभाव जगतस ॥ च्य

अभिमान रोस्त च्यतस च ब्यतस
त्रशवय ताफ शेह् लावि हो
कुन्यर ब्यन्यर न मंज़ मारिफतस ।। च्यतस

रागय पोज़ माज़ मो माज़स रतस
त्राव अपज़्युक चिक चावय हो
यम्य त्रोव तस नो युन अत गतस ।। च्यतस

दज़ दज़ मज़ क्याह् अथ लोल ज्यतस
माज़् च बोय नो हवावय हो
रुजुम न सह् तस्य पत मतस ।। च्यतस

सुय बुय वुछ्न क्याह् ज्याद कतस
गूब्यन्द सहज भावय हो
त्राव भीद माज़्म पानस अच्यतस ।। च्यतस



कुनुय परुन

कुनुय परुन कुनुय सारुन
कुनुय करुन पानस तस तय ।।

लोलकि नारन कोरनम म्य सूर
हुमि यमि खोत यी कोर म्य मंज़ूर
सुद्दूर न म्य ओस कथ छु व्यसरुन ।।

दीश दीश छाड़ुन ह् बी छयनुन
यस वीद ग्यवान सुय पान पनुन
वनुन मुरुखन ह्यथी खरुन ॥ कुनुय

न्यर विकल्प वृथ न्यथ थावय
जुवो सर्व आत्म भाव प्रावय
त्राव दिहि अभिमान लूबस फरुन ॥ कुनुय

यस्य जोन पानस तस हय बीदय
बीदय यति रुद तोत ह्य रवीदय
बीदय वनान अति गछि ड़रुन ॥ कुनुन

वास नाथि चठ मन प्रान जठ पठ रठ
छठ त्राव दम्मय लूबय कपठ
संकठ चलि लोन सूत्य मन बरुन ॥ कुनुय

रात द्यन दम दमा दमनय
सूत्यी ज़ान थव कत समनय
शम नय सू हम सू परुन ॥ कुनुय

छरिसय पानस पूर्यर बन्योम
दूयरं न ज़ोनुम पानय याद प्योम
चोम प्रेंयम अमृत कुनिरस छु दरुन ॥

अकिस ख्यनस ति यिन दय मशी
गूब्यन्द वीरव कीर मन वशी
खुशी रोज गछि जिन्दय मरुन ॥ कुनुय



समाध हृथ

समाध हृथ च्यथ रोजि गरि गरे रोजि गरि गरे
हृरे ॐ तत्सत परे लोलो परे लोलो ॥
सूहृम सू च्यथ ईकागर करे ईकागर करे
छरिथ दय छुस गरे लोलो गरे लोलो
गम चलि शम यियि तस युस सोरे तस युस सुरे ॥
सर्व आत्म भावय प्रावि युस मरे प्रावि युस मरे
तत्र कुस मरि सू कस मरे लोलो मरे लोलो
दुय चलिथ परत पान कुनुय स्वेर कुनुय स्वेर ॥
व्यचार नावि क्यथ भवसर तरे भवसर तरे
सु धर्मस प्यठ युस धरे लोलो धरे लोलो
दिथ समाध प्रमाध गालि जिन्द मरे गलि जिन्द मरे ॥
सूत्य संतन न्यम द्यन द्यन बरे द्यन द्यन बरे
फोल नस भाव पोश तस थरे लोलो तस थरे लोलो
खर्य तन सु मुर्खन तस न कांह् खरे तस न कांह् खरे ॥
परम आत्म ध्यान सुय हो धरे सुय हो धरे
सोर पान सान जोन तम्य हृरे लोलो तम्य हृरे लोलो
यि कथ सारिन्य कथ छि परे कथन छि परे ॥ हृरे
गूव्यन्द वन म तेज़ चार्यन चरे चार्यन चरे
तस ननि युस लोल मन मरे लोलो मन भरे लोलो
नत वननय क्याह् जानख च शूरे जानख च शूरे ॥



वुछ चोपोर

वुछ चोपोर पननुय तमाशा
मुचराव क्य ज्ञान न्यथरा ॥

सुमित्रता प्रसन्नता विद्या
व्यचार शम बान्धव म्यतर
ज्ञान दम ब्ययि समता श्रद्धा ॥ मुच

ततेक्षा समाधानता
वुपराम व्यर्थक म्यथर
अहिंस ब्ययि मूखि यछा ॥ मुचराव

त्रशना ममता वासना
काम क्रूध लूभ मोह मद शथर
दम कपठ ज्ञान ब्ययि आशा ॥ मुच

शुद्ध मन को बनाव चेला
आत्म ज्ञान वुप दोश ह्यथर
करतस चलि योहय दवा ॥ मुचराथ

कर बोज़ द्रयि पुरश अत्मा
सत्संग बुद्ध पोतुर
ज्यवि याञ्ज ताञ्ज मरि माया ॥ मुचराव

सन्तोश खंज़ांची अपना
सीवक वैराग दय शथर
ज्ञान विज्ञान वज़ीर ह्यथ क्षमा ॥ मुचराव

दि हृ दीशस मंज आज्ञा
कर धर्मुक थव सथर
यूब ओध्योग दर वान रखा ॥ मुचराव

क्या कहे गूब्यन्द अहा
न्वरलीफ ह्यु पवम पत्र
छुय भवसर मंज वाह वाह ॥



सुय पानय

सुय पानय अंस्य बहानय हतसा हे
वन हा हाल छिन वुठ फोरन हाय
ज्यव कलन छम कस यि सत वनुन व्यपे
ज्ञान त हैंरान वीद ति तति मंद छानय ॥

यस च छारान सुय चय देवानाय
कथ दर बदर गोरव कति मेले
जान कर पान च हा अन जानय ॥ सुय

छिय वंद सन्त पोरान ग्यवानय
पान मो मशराव पनुन छु चय हे
कर व्यचार नेरी अरमानय ॥ सुय

वन क्या हाल ननि सूत्य यि ज्ञानय
फर्ख न अख रछ छय तस ति च्य
चानि सत्य कुल सिरिय जून चम कान आये ।। सुय

प्यव च्यतस म्य तस न बीद अरव दानय
कन थोवुम सन्त शास्त्र चे कके
वोन स्य नोन अथ क्या करुन ठानय ।। सुय

चोव सम रस मनस मस्तानय
बनि शान्ति फेरि रगि रगे
मस बनि वाणी थव रिन्दानय ।। सुय

गिन्द पानस सूत्य शिञ्ा मदानय
पनव लोरे गिद प्रनव हाके
केंह् रिद गिदन जिन्द मरानय ।। सुय

सर्वम छु गूब्यन्द वनानय
वीदय छु अमिके प्रसाद म्य
शख गम चल्य श्रुति के प्रमानय ।। सुय



न्यरा धार

न्यरा धार न्यर अहार
न्यर वेकार न्यर्राकारो ।।

गुर दया कर मज़ व्यवहार
छुस बन्द ब गोमुत लोक चारो
म्योन कुस च्य सिवा छारि चार ।। न्यर्विकार
दज़ वलिज सीन लोल नार
आर सोन यथिनय हा बे आरो
कोरथम जिगरस म्य पार पार ।। न्यर्विकार

सत च्यथ आनन्द अपार
अखन्ड़ अगाध चोन ध्यान दारो
अक्षय आत्मा च सारिक सार ।। न्यर्विकार
मंज़ म्य सम सार मंज़ बो समसार
जोश आम प्रेयमक हऽक बुकबारो
सम भाव प्रोव यमि मन गव तस मार ।।

सुय बोय नन्यामयि सथ व्यचार
मनि गंड़ शख चलिम यख बारो
तर्य ज्ञान नावि क्यथ अस्य भवसर तारो ।। न्यर्वि
सुहम चे वायान छिय अस्य तार
प्राण सेतारस अस्य ओम कारो
रूम रूम बोलान वन क्याह् दुबार ।।

सोरुय छुय यि भजन नगार
बीदुक अथ कन धारो वारो
म्य च्य न बीद कांह वदिच यि पार ।। न्यर्विकार
पारम ब्रह्मय परम अपार
बारम्बार च्य नमस्कारो
सानि जुव परम शिव टाठि यार ।। न्य

गूब्यन्द लोल कि हा बे मारय
सत गुर वैदस आव चोन आरो
चोव ह्ख अद्वयत अमृत चे दार ॥ र्ध्वविकार



सत च्यथ

सत च्यथ आनन्द विज्ञान के रबो
पान चोन ज़ोन सोन ज़ुव सदा शिवो ॥

नाना प्रकार च्य बजर अन्त रस्य ग्रंथ
छिय करान ग्यावाम अन्त रस्य संथ
अन्त कुन्ि न आख पूर्ण च व्यभवो ॥ पान

माज्य अष्टा दश बोजी त पोरान
वीद ब्रह्मा च्थ च्यनि गीत ग्यवान
ग्यवान शीश करिथ सास बज़ ज्यवो ॥

सरिय ज़ीव देवता त कारनय
चोनुय ध्यान दार नायि दारनय
तारनय च तिमन मंज़ भवो ॥ पान

अ़ि वीदन ति थर थर वदि ति रूद पथ
साद सतज़न सरस्वती मज्य शर ह्यथ
कथ छा म्योन्य अद प्रत्यख च्य ग्यवो ॥

परम आत्म द्दीव सीव चानय न्यथ बो पाद
प्रमाध गलि स्यद द्यव सपद्यि समाद्य
बोज़ फर्याद आर सोन यियि द्यवो ॥ पान

अछय योर गयि तोर म्य च्य बासन
न्यर वासन रूद कथ बकार आसन
अथि श्वासन मनि खूनयो प्रणवो ॥

यी वीदव वोन ती संथव ति वोन
छाड़ान कस तोह्य तस छिन तोह् ब्योन
ओन चोलुम ब्योन जानथ कवो ॥

ब्यन्यर न जाह कुन्यर दोहय ओस
दुय मनि कसिथ चय बोय सपधोस
बोस मनि ताम याम प्ययि ज्ञान प्रवो ॥ पान

गूब्यन्दन जोन रव पननुय जुव
भक्ति बत्सल शेव न स च्यथ कांह ह्यु व
निब मत थिमव तर्य भव यव तवों ॥



तीनों जगत

तीनों जगत के कर्ता आधार है तो हम है
निर्गुण हैं तो हम हैं साकार है तो हम है ॥

प्याला वह पीने वाला मय और मय खाना
साकी है तो हम है खुमार है तो हम है ॥

तिब और तबीब मुसखा दारु शफा पंसारी
गर दर्द है तो हम हैं बीमार है तो हम है ॥

खुदी कलाम और पीर अमीर गरीब रहत
वजीर है तो हम हैं सरकार है तो हम है ॥

बागो बगीचा माली बूटा जमीन और मेवा
बुल बुल है तो हम हैं गुलजार है तो हम है ॥

नसरो नजूय नजाकत सतरो सफा वमानी
शाइर है तो हम है अंश आर है तो हम है ॥

मन्दिरो हरम व गिरज पूजा निमाज और मास
शागिल है तो हम है अजकार है तो हम है ॥

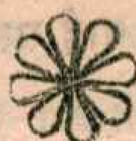
ब्रह्मन व शेख क्षत्री शुद्र वेशा मुसिलम
तस्बी है तो हम है जुनार है तो हम है ॥

सुख दुख यह हालते दो मेरी ही है यह दोनों
मुतफिकिर है तो हम है सरशार है तो हम है ॥

जर जर गरों कसौटी लौहा और लौहर है
तलवार है तो हम है सरदार है तो हम है ॥

मेरा हो खेल सारा देख देख के मस्त बना हूं
सोए हुए हैं तो हम है बेदार है तो हम है ॥

आशक व इशिको माशोक गूब्यन्द तूने जाना
दीदा है तो हम है दीदार है तो हम है ।।



जिसने भ्रम

जिसने भ्रम की फासी तोड़ी — बस वही आज़ाद है
सम अमृत जिसने पिया — बस वही दिल शाद हैं ।।

आप सहित सब है भवगत दुख मेरा निवृत हुआ
ज्ञान ता जो इस तरह है बस वही सन्त साद है ।।

बेद से है खेद होता वेद सन्त कहते है यह
भेद जाने जो प्यारे बस वही प्रमाद है ।।

शुद्ध मन शागिर्द को जो हम समय ताली दें
है मेरा रुह ज्ञान मात्र बस बही उस्ताद है ।।

सब में मंगल है तुम्हारा तू ही प्यारा सारा है
यह नज़ारा देख यारा बस वही समाध है ।।

तीन गुणों से तीत तू है जीत मन पर तीत कर
सङ्कल्प को छोड़ देखो यह बुरी प्रमाध है ।।

आल में जबरुत व नासूत और मल कूत हूत को
हूतल हूत का तू शाहिद सुन मेरी फर्याद है ।।

यह सरुदे दाइमी है यह गरुर दाइमी
काइमी है काइमी सब को क्या अपराद है ॥

यह जो मस्ती हमको आई लुफ्ते एकताई है यह
यह हकीकत आज पाई सतगुरु का प्रसाद है ॥

कुछ न डर दुनिया से हमको हम तुम्हारे हो चुके
यह जहान दुश मन है मेरा एक तेरी इमदाद है ॥

किस को ख्वाहिश है तुझे अब यह बड़ा अफसोस है
ऐ गोविन्दा तू ज़रा सोच क्या तेरी बुनियाद है ॥



विज्ञान का जो

विजान का जो रब है सत चित आनन्द
पूर्ण वही तेरा रूप अनूप है निजा नन्द ।

अस्ति भाति प्रय रूप की दृष्टि से सब ही तू है
तुझ बिन नही कोई तुझ मे है विश्वदानन्द ॥

आनन्द स्वरूप कर याद चित से मिटा दो प्रमाद
क्या है तेरी यह बुनियाद आज़ाद तू नही बन्द ॥

अज़र अमर अगूचर शुद्ध चैतन्य मात्र
आश्चर निर्बकार आनन्द कन्द और निस्पन्द ॥

खुदी का पहाड़ फोडो भ्रम की जन्जीर तोड़ो
विषिओ से मन को मोड़ो पावो परम आनन्द ॥

वहमो गुमान को छोड़ो सत धाम को ही दौड़ो
भगवत से मन को जोड़ो वह है अखन्ड़ आनन्द ॥

स्वयं प्रकाश कैवल आधारो निर्मल
निर्विकल्प और निश्चल अटल और परानन्द ॥

हम हो तुम और तुम हम भेद वासना भ्रम है
ईश्वर का कसम है कहता तुझे है गोबिन्द ॥



अन यति

अन यति वुज्यव तस मन सूरस
नूरस म्युल गव नूरस सूत्य ।।

छि खबर कमिलन पन बर्ग ना हिलन
मन सङ्कल्प ना तुलन च्यानि रायि रोस्त ॥

गर्भ मंज़ कम्य हा कते चय रछान यति तते
रोछ थस च्यय हा तते दोद माजे दायि रोस्त ।।



जलवय गोविन्द है

जलवय गोविन्द है सारे दिल की आखे खोल दे
तब नज़र आयेगा तुझको हर जगह दिलदार है ।।

कुछ नही इस भाग मे बादे खज़ान का दखल है
देख कर दिल फूलता हैं या सदा गुलज़ार है ।।



सन्तो बसन्त

सन्तो बसन्त बहार सतसंग
सार सत संग सब्ज़ार सतसंग ।।

श्रवणय मननय न्यद्यासन
कर नावि साक्षात कार सतसंग ।।

रंग बुलबुल पोशि नूल सन्त साद
लारि डेशि यति गुलज़ार सतसंग ।।

ज्ञान रव खसि हृदयुक पम्पोश
फोलि कासि सोरुय अन्धकार सतसंग ।।

सन्त राज़न हन्दि खोतय राज़य
सन्तन हुन्द धन ध्यार सतसंग ।।

कल्प वृक्ष सन्त साद स्यद करियो
काम नायन यख बार सतसंग ॥
सन्तन सृती कर समागम
फल अम्युक अपार सत संग ॥
व्रन तापन रेन्द ताव शहूली
सऽरि सय फेरि शेह जार सत संग ॥
अभय करि व्रय्न वय भय दूर
छयत करियो नरकं नार सतसंग ॥
भवसर सदुरुक छुय जहाज़्य
ज़ीव नय दियि यति तार सतसंग ॥
तिर्थन हुन्द प्रयाग राज्ञ कुस गव
सुय गव कर नमस्कार सतसंग ॥
समिथ तीर्थ तति छिय सारी
आसि यथ जायि व्यचार सतसंग ॥
कर्मय सरस्वतो धर्म जमुना
भक्ती गंगा कर सत संग ॥
यम्य कोर यि तीर्थ तस छु प्रणाम
सोनुय बारम्बार सत संग ॥
हृदय करि न्यर्मल च्यथ शान्त
वाह वाह क्या रसदार सतसंग ॥
श्रदायि भावनायि मायि प्रेमसान
तोत नस यति आसि लार सतसंग ॥
गूव्यन्द सतसंग नय मस कोर
च्यतसम ज्ञान अमृत दार सतसंग ॥



पूर्ण पूर्ण

पूर्ण पूर्ण ब्रह्म छुयो यि ज़गत पूर्ण मंज़ पूर्ण द्राव
पूर्ण किस पूर्णस रटिथ ह्यो पूर्णय शीश अथि आव ॥

गुरु मुख वन्य दिमयो शूभिदार वन्य दिमयो
हर लूक वन्य दिमयो हर दार वन्य दिमयो ॥

टाठिस भगवान सय सर्व शक्ति मान सय
पननिस पान सुय पननियार वन्य दिमयो ।

नाभि मज़ छरिथय हृदयस खारिथय
त्रकूटी दरिथय ऊों कार वन्य दिमयो ॥

गुरु मुख वन्य दिमयो शूभिदार वन्य दिमयो ।



थलि थलि

थलि थलि वुछतन सदा शिव शिव हय च्योनुय ज़ुव
शिव हय चोनुय ज़ुव ज़ुवो सुय धारनाये दार ॥

सुय धारनारे दार ज़ुवो करबा सत व्यचार
करबा सत व्यचार ज़ुवो च्यन मस न्यरव्यकार ॥

च्यन मय न्यर्विकार ज़ुवो सच्चिदानन्द अपार
सच्चिदानन्द अपार ज़ुवो आनन्दुक भन्डार ॥

आनन्दुक भन्ड़ार ज़ुवो नाम रूपुक आधार
नाम रूपक अधार ज़ुवो सूहम य छुय सार ॥

सूहमय छुय सार ज़ुवो तस्य मन्ज़ कर करार
तस्य मन्ज़ कर करार ज़ुवो गूव्यन्दो ह्यस यू ॥

थलि थलि वुछतन सदा शिव शिवह्य चोनुय ज़ुब ॥



अमर पानय

अमर पानय याद पाव सूरतन सुय भगवान
सूरतन सुय भगवान ज़ुवो मर मर हो चली ॥

मर मर हो चली ज़ुवो वासना हो गली
वासना हो गली ज़ुवो भव रूगय बली ॥

भव रुगय बली ज़ुवो ससता हो वली
समता हो वली ज़ुवो हृदयस मल छली ॥

हृदयस मल छली ज़ुवो हृथ कमल फोली
हृथ कमल फोली ज़ुवो न्यचय यिन ड़ली ॥

न्यश्चय यिन डली ज़ुवो गूब्यन्द प्राव ज्ञान
अमर पानय याद पाव सुरतन सुय भगवान ॥



स्वप्न माया

स्वप्न माया संसार सोरुय संसार छुय भ्रम बाज्य
समसार छुय भ्रम बाज्य ज़ुवो ह्यस सानय यति रोज़ ॥

ह्यस सानय यति रोज़ ज़ुवो सन्तय वऽनी बोज़
सन्तय वऽनी बोज़ ज़ुवो संसार कस द्राव सौर ॥

संसार कस द्राव सार ज़ुवो करबा सथ व्यचार
करबा सथ व्यचार ज़ुवो दयी कीवल सार ॥

दयो कीवल सार ज़ुवो सुय गछि यति स्वरुनुय
सुय गछि यति सुरुनुय ज़ुवो अखर छुय मरनुय ॥
आखर छुय मरनुय ज़ुवो गूब्यन्द गव आज़ाद ॥



शिव शिव

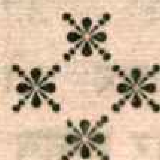
शिव शिव करान शिवय सपद्योस ।
शिवय ओस तय शिवय रुद ॥

सुय म्योन ज़ुव तय बो तसुन्द ज़ुवय ।
ननि तस बनि यस आत्म बूद ॥



पानय बुछमो

पानय बुछमो सुय पान्य पानय
सुयय पानय बोनो कॆंह ।।
पारी लगयो पनधि शिवो
च्य रोस मानय बों नो कॆंह
पूज़ायि दह वय यन्दरे लागय
पूज़ा ज़ानय ब नो कॆंह
यिछ च्य शूभी करनो तिछमा
तोता ज़ानय बनों कॆंह
गूव्यन्द छुय हो सु चोन ज़ुवय
परम शिवय वोनुख यस
स्वप्न मंज़ ति यिन बीद बुद्ध वोपदीय
बीद नो ज़न्यीज़ पान स त तस ।।



डण्ड वथ

डण्ड वथ नमस्कार सन्तन
प्रणाम बारम्बार सन्तन ।।
च्यथ सरल कूमल छि वुपकऽरी
छु अनाथन हुन्द आर सन्तन ।।

तीर त्रविथ वऽज़ो पोत फिरनस
ब्यायि छु सोरुय यख ति यार सन्तन ॥

रग रग रग रग बोलनय
रूम रूम ॐ कार सन्तन ॥

यथ नाव सच खण्ड सत लूकय
तति छु सादन दरबार सन्तन ॥

यिम तसंज़य तोता छि करनय
आसि युस सीवा कार सन्तन ॥

ब्यशनो शिव ब्रह्मा आदि दीव
करान जय जय कर सन्तन ॥

यलि यलि धर्मचि गयि गलऽनी
त्यील प्यव ह्योन अवतार सन्तन ।

हर मुख हर वुछि छिय हर शन
हर सुन्दुय छु हर द्वार सन्तन ॥

सुख मय अभय आश्चर दीश
बऽसनय वयुथ छु शेहजार सन्तन ॥

बाहवञा यर्तन छु तते
सोन्त कालय त बहार सन्तन ॥

भगवान भक्तयन पत छु फेरान
गूव्यन्द चति पत लार सन्तय ॥



सुय म्य

सुय म्य टोठ्योम नमना द्रामो
राधा स्वामी राधा स्वामी ॥

अस्ति बांते प्रेयि रूप सोरुय
धार नाये सन्तव दोरुय
व्यचोरुय सुय वनि आमो ॥ राधा

शक्ति पात तम्य कोरनम ओरय
पन नुय अनग्रह म्य तोरय
ज़ोर ज़ोरय बोज़ सत नामो ॥ राधा

जन्मन हन्दि दोख तय दऽद्यी
कस हय साऽरय च्य ब्यदय
आप दायय चज तमामों ॥ राधा

पार्य लगयो सन्तन सादन
कन म्य थव्याम सत वयन नादन
सन्त पादन कर प्रणामो ॥ राधा

खुल कर्य हय सऽरी तऽरी
तस वुछान छिय चोपऽरी
पार्य पऽरी लग तस शामो ॥ राधा

लोल बोर नम पन नुय पूरय
हृदयिच गट करनम दूरय
नूर नूरय छुय सत दामो ॥ राधा

सन्तव सम्तायि अनृत च्यव
हृदयस वुदय ज्ञान रब गव
च्यव गूव्यन्द सुय सुब शामो ॥ राधा



लयि दारि

लयि दारि त्रोपरिथ कन गछी थावुन
भाव वन सतगुरु त हाव वोनुय ॥

दम ह्यथ दम ओम पान पर नावन
हृदय कमल फोल रावोनुय
नाभि थान तुलिथ हृदयस छावुन ॥ भ

क्यायि ज़ोरय मन गछि पावुन
मस बनि शशि कलि चाववोनुय
प्रान पीज़ शैने शैने त्रावुन ॥ भ

संकल्पन हुग्द वाव रुकावुन
शिनि छटि अद नो राव वोनुय
त्रट बुज़िथ मनस वट गछि दावुन ॥ भ

प्रनव शब्दस कन टाठि थावुन
दम भ्रमिध्य वात नावोनुय
सहस्र दलस मंज़ ठहरावुन ॥ भ

अनि गटि गाशि चोंग ज्ञाल वावुन
मान सरूर पान नावोनुय
गोत गोत मरिथ पान शेहलावुन ॥ भ
रुम रुम पानय ओम भजावुन
शम दम मन शोम रावोनुय
जीथ बनि गोर गीत न्यथ टाठि गावुन ॥
गोफि वतिथ पान शिव मिल नावुन
सोख प्रावुन पज्ञि भावो नुय
कुन च्यत तस बनि गोस गम त्रावुन ॥ भ
अन्द्री लोलक तोन्द्रय तावुन
गूव्यन्द पान याद पाव वोनुय
रिन्दो ज़िन्दय परम पद प्रावुन ॥



समसार

समसार सोदरस ज्ञान पुल
दि तर कर पानो सुल ॥
वैराग कानुल लद अथ
सथ ठयठ भूमि कायि सथ
सम दृष्टी तख्त कुनि रोज़ि न वुल ॥ दि
सन्कल्पन करुन डास
ओमुय करुन अभ्यास
अभ्यासुक दबाव क्युल ॥

त्रशिनायि ज़ल छुय बर्यथय
सतसंग नावि क्यथ तर्यथय
ह्यकखय चठ वास नायि ह्लि ॥
सू के खोरि हम के हम
लोल नम वायि नाव दम
ब्रोंठ वात जल जल हम तुल ॥ दि

सथगुर चरननय तल
श्रात्रन्य शनिकि पऽठय गल
अभिमान गाल बन मो कुल ॥ दि
स्वप्न दृष्टा वथ पान ज़ान
हान कास त्राव दिह् अभिमान
पान सान ज़ान दयी कुल ॥ दि

चय अकि सुय छि अनन्त रूप
चम कावान छि सत वय दीप
दूर कर द्वयतचि बुल ॥
दिह् अध्यास वास नायि ज्जुन
सोम्बरिथ व्यचार नार द्युन
दजि़ अज्ञानुक जंगुल ॥ दितर

ह्यस थव शाह् नय सूत्य
रात्र द्यन खत्य वोथ्य कऽत्य
अमि करन मन बनि शुहुल ॥ दितर
गूव्यन्द सदा सन्तोष्ट
तिमय रुद्य यिम समदृष्ट
आसि ब्रह्म्‌न या वातुल ॥ दि



पज़ि पज़ि

पज़ि पज़ि चे रज़ि लमुनुय वज़ि सूह्म सेतार
तस्य चनियो यस नो यि चम ज्योन मरुन भ्रम छु संसार ।।
गछ़त शरण प्यत परन रटथ चरण सत गुरस
द्वन्दा द्वन्द त्रोवुथ च्य चोवनख आनन्द मस
कोर नखो हा पानो मचि न्यंदरे हुशियार ।। तस्य
दम दमय दम छि करान सूह्म सूह्म सू
पान करु सर मंज़ भवसर स्वरु ओम शिव शम्बू
ह्म त्रविथ छोर सू स्वर अद लगी भवसर तार ।। तस्य
दय यस पचि अन्दर स अचि नचि ह्योरि बोन सरिसूय
हनि हनि वञ्ति तस यियि दय मनि दूर गछि यस दुय
दुय त्रविथ सुय पानय तति न व्यपान गाट जार ।।
वुछत अडयन चय दर नार फोल्य कम गुल त गुलज़ार
तस दयस हो छि यिमय कार क्या जबर सोन सरकार
द्यु तुनय तार आवुयकरार लार कुन रिंदो लार ।। तस्य
रछ़वुने लछिनावे प्रेम अछ पोश छावे
लोल बागस व्यचार ही तमि ही तन सू नावे
ओर योरय छुख च पानय पान्य पानस अथदार ।।
रोज़ बोज़ कन दरिथय सोज़ गूब्यन्दस आव
साज़ सानय सुय अन्दर चाव कुञ्जिरस क्याह कर्रि नाव
अन्दर न्यबरय वुछुन पान दय कुस छु आज़ाद गिरफतार ।।



तोशतो

तोशतो पोश नूल पोशन आव बहार
लोल किस सब्ज़स लोग म्य सब्ज़ार ॥

गोड़ न्यथ गछत च्य निशि सतगुरु
खोदी हुन्द त्राव तति नस सर
सर कर पान मार नफसि अमार ॥ तोशतो

अन्दर म्य च्य म्य च्य न्यबर
म्य च्यय छाड़ान गयि म्य खबर
बुय पानस गालञ्य छु पुरष कार ॥

नय रुद पनञान सूत्य मोहबत
नय रूद गऽरन सूत्य नफरत
सोरूय छु ब्रह्म रूप ई वुछ म्य नाज़ार ॥ तोशतो

गदाहन शाह तय शाह न गदा
करान च्य छुख बोज़ तम सदा
सोरूय पानस छुय यखतियार ॥ तो

नय छुस शही मंज़ बोय खऽश
नय छुस गदायी मंज़ ब ना खऽश
यी मेलि ती हो छु म्योनुय गुज़ार ॥

नय रोज़ि माल तय म्य दौवलत
रिंदो दमय ज़ान गनीमत
दम नय ज़ान थव दमय छु संसार ॥

पान छोल करान शेव शेव अस्मे
च्य बोय बोय ख्य टोठ्योख म्य
गूब्यन्दन वूछय चोपर्य पननु यार ॥ तोशतो



सत च्यथ

सत च्यथ आनन्द गूब्यन्दय
वन्दय चरणन जुव त जान ॥

अदीन स्स्य छि दीन बन्दय
अनजान पर्यमत्य न वीद पुरान
कर दया ही दया स्यन्दय ॥ वन्दय

ध्यान कुय आत्म ह्रु ध मन्दय
थञ प्रन्य ज्ञिाञान बिग्वान्य
वेरि चानि जसुदा नन्दय ॥ वन्दय

व्यठण ज्यठण कृठण राम चन्दय
अविवीक रावनस च मारान
सीव चाञ चर नार व्यन्दय ॥ वन्दय

अच्यत च्यत आनन्दय
पूर्ण चैतन छुख ननान
सुख दुख पर परानन्दय ॥ वन्दय

म्य च्य सूत्य छुम समबन्दय
म्य च छारान म्य चय मो चान
ब गोल चय सुगन्धय ॥ वन्दय

पान ज़ोन कर्य प्रान सन्दय
दम दम सूहम सू सोरान
अजपा गायत्री छयन्दय ॥ वन्दय

स्वप्रकाश आनन्द कन्दाय
नेस्त्रय गोनी शिवय पान
ज्ञान त्राव दिहि अध्यास गन्दय ॥ वन्दय

निष्क्रय न्यर्मल न्यर्द्वन्दय
सदा अप्रोक्ष अध्यष्ठान
मोन साक्षी व्यशुदानन्दय ॥ वन्दय

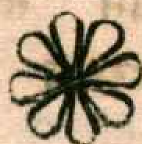
सुय छुय दुय गालू वन्दय
हम्स नाद गोफायि मंज़ यिवाव
अनहद नाद नाद ब्यन्दय ॥ वन्द

मुह कठ कोश वासनायि वन्दय
तस यस गोल दिहि अभिमान
ज्यन मरुनुक त्रोव तमि जन्दय ॥ वन्द

प्रविथ तर छोनिरुक चन्दय
कशिव हम सू नाव तरान
च्य व्यन कँह ना बय वन्दय ॥ वन्द

सन्तोश वैराग रन्दय
दि दिहि लंकर शूभान
रिंद ज्ञान छुख न्यस्पन्दय ॥ वन्द

वीद पुरान छिय शर मन्दय
गूव्यन्दय चान्य गीत गेवान
तोत छुख द्वन्दा द्वन्दय ॥ वन्दय



मनि कासु

मनि कासु चख तय दुय लोलो
दुय त्रविथ पानय सुय लोलो ॥

प्रन वय कामदोनि चोर वीद थन
महा वाक्य दोध सत्गुर चावन
चोव सुय चय ह्योव थन नय लोलो ॥ दुय

न्यत मुक्त अक्षय सोयंम प्रकाश
परि पूर्ण ईकरस ह्यु आकाश
अच्यत सत चिदा नन्दय लोलो ॥ दुय

साक्षी च्यथ गण सु अखन्ड़ आनन्द
न्यर्विकार चेतन सु व्यशुदानन्द
न्यर्मलय न्यर द्वन्दय लोलो ॥ दुय

पानस सान ज्ञान सोरुय भगवान
अस्ति बांति प्रय रुपय सुय नारान
सोरुय छुय सुय कुनुय लोलो ॥ दुय

पान प्रज्ञनाव रूप नाव वरज़िथ द्राव
सोरुय दय दिहि अध्यासय त्राव
तस व्यनय केंह न वुछन लोलो ॥ दुय

थामि मन बुद्ध गय यति पथ छु चोन यार
शिन्या शूबन तति खद मत गार
नाव न्यरमल स मज़य लोलो ॥

मन वानी अगूचर पद युस रुद
पान ज़निथ रिंदय सु ज़िन्दय मूद
यति हरथ न कुन ज़य लोलो ॥
वजिर्थ सूहम छोन सू सत रूद
बूद बन्योय दम दम स्वर सुय सूद
ताकुलय सुर न ज़ुफतय लोलो ॥ दु

बूद नाबूद गव मौजूद कुस कसय
ज्योन मरुन भ्रम किञा अथि जन्मसय
वासनायि किञा लगन जन्मय लोलो ॥
लूब छुय ख्यूब त्राव तस क्याह करि क्राव
वासनायि ज़ाल चठ मुह मादय गाल
दीश काल रोस छुखना चय लोलो ॥

हृदयस यस सन्योमुत ज़ोमय
तस मस वस करान सूहमय
खस गगनस बोज़ प्रनव हुय लोलो ॥ दु

मस गय आनन्द अमृत च्यवानय
वीद थामि गय चाञ गीत ग्यवानय
छुय सोरुय यि गूव्यन्दय लोलो ॥ दुय



सत च्यत आनन्द

सत च्यत आनन्द सत सदा शेवय
जय जय जय जय जय जय बोविनय ॥

रस रस मन न्यू अम्य असवञ
न्यर्द्वन्द न्यर्मल न्यथ लस वञ
मंगल कल्यान ज्ञान सुन्दरय ॥ जय

त्रिगुना तीत न्यर्विकार शम्बू
च्यथ सांक्षी चीतन सोयम्बू
सबो का प्रभू यही देव है ॥ जय

सदा शेवय गव गंगादार
अखन्ड़ आनन्द अनूप अपार
ज्ञान गङ्गा जटि वसान छय ॥ जय

न्यशकल न्यर्मल कल गयि चाञ
ज्यन मरनच म्य मुकलावथ ठाञ
ग्राव साञ कऽसथ छुख मृत्यंजय जय

दीश काल अतोत सु पीर पूर्ण
न्यति मक्त अद्वयत चाञ्ज कुनिरञ्ज
मस करिथ रस रस बन्याव जय ॥ जय

गनीश धनीश शीश तय कीश
च्य ब्रह्मा देवा दीवी महीश
नाव रूप कुय अधार च बोड़दय ॥ जय

अमरीश्वर च अज़र अमर
चाव अद्वयत अमृत असि वर
कर दया अथि छुय वर त अभय ॥ जय

अन्ता करण कैलाश निवासी
ब्रह्म आकार वृति दासय
वुप दविथ पालिथ गलिथ च न्यशक्रय ॥ जय

भक्ति वत्सल शक्ति पात नज़र
कर वर दिगम्बर च शंकर
कर कटाक्षा बनि पापन क्षय ॥ जय

छरिथ हर हर मुख वनि आव
अन्दर न्यबर पानय सोरुय द्राव
च्य पान अस्य बहान च्य व्यन न मुय ॥

अनन्त जाग्रतन त स्वपनन
स्वशक्ती यन च प्रकाश करन
आनन्द गण च्यथ गण दीवय ॥ जय

पान सान शेवय ज्ञान सोरुय
सीव तिहिन्द ज्ञान विज्ञान रवोरुय
सुय त्राव दुय छुय गूव्यन्दय ॥ जय
जय जय जय जय जय जय बोव्यनय ॥



ओम परि पूर्ण

ओम परि पूर्ण नारायण च्यतगन
तन मन अर्पन गछ च्य पथ बो ॥

सास मुख गीत ग्यावान शीशे नागय
रागय यस चोन तस बडय बागय
सरस्वती माज्य वीद शर मन्द छिय ग्यवन ॥ तन

न्यरविकार आधार चय छुख सारिकुय
न्यर्विकल्प गथ कर चयय पथ बो
न्यर्मल कीवल सत च्यथ आनन्द गण ॥

अन्तरयांमी छुख च सर्व व्यापक
छ्यनय मनि गंड़ सारय शक
मीलिथ गीलथ वातिथ च पन पन ॥ तन

लागय पूज़ायि च्यथ बुद्ध त प्राणय
ज़ोनमख च्य सोर पान सानय
क्याह छड़िथ अन वन २ पोशि व्यन ॥

भ्रम फास्य छ्यनिम होशस यन प्योस
सम अमृत दम देम म्य च्योस
यी ओस ती बोस मुकल्योस बो तन ॥ तन
विज्ञान रव कास्तम अगिन्यान गट
फटन निशि मोकल्योस सोरि लट लट
गट गट वतिथ चय मन मूहन ॥ तन
न्यर भय आत्मा च स्वयं प्रकाश
आश च्यानि पापन बन्योव नाश
च्यदा काश चोनुय ध्यान कर क्षण क्षण ॥ तन
चुय ज़ोनमख दिह ध्याता त ध्यानय
हुऽरतस अति बडय २ व्यधवानय
क्या कर जिन्द मर गोम लोलुक सन ॥ तन
अरप सऽरी चऽनी सोरुप
अनन्त अचल अखन्ड़ अनूप
चय न्यरगुन तार वुन छुख सो गण ॥ त
शाम वर्ण चानि स्वरन लोग मंजज़गि तार
बारम्बार च्यय जय जय जयकार
यम भय वस वास चोंल चानि स्मरण ॥
शंख चकर गदा पदम दारिथ
कोर यिमव ध्यान चोन तिम च्य तरिथ
नल्य वन माला हृटि कोस्तब मन ॥ त
न्यति शुद्ध युग न्यदंरायि मंज़ च मसय
गोमुत प्यठ शीश नागसय
लक्ष्मी चरण कमलन छय सीवन ॥ त

कोर ओम नमो नारायणाये
सुरि युस दम दम दमि नाये
तारि सुय वैकुण्ठ भूगिथ मूगन ॥ तन

प्रेम अमृत चाव बुद्ध सात्य शुद्ध कर
वासना द्वयत बुद हृद रद कर
ज्ञान युथ न च्यय पानस फरक अख कन ॥

ब्रह्मा रूप जगतस वुपदावान
व्यष्ण रप पालन रूदर गालान
न्यति मुक्त चोनुय ध्यान हृदयस रवन ॥ तन

न्यथ लस वनि हृदयस मंज बसवञ्ना
हा अस वनि गरड़स रवस वनि
शुद्ध मन गोम चाने चरनूदक च्यन ॥ तन

च्योन नो ह्योक कांसि करिथ व्यसतार
दीश काल रस्ति द्राख चय पथ सार
चय बोय बोय चयमुखंन किथ वन ॥ तन

गूव्यन्द पानस तस म ज्ञान बीदय
ग्यवान यस पुरान त वीदय
मुकल्योरव चय वुञ्ना निश ज्यन मरन ॥ तन



सञ तय वोगञ

सञा तय वोगञा वञा दित यस तय वन्यि दित ताय।
च्यतस प्योमय म्योनुय नाव तस ताय म्योनुय नाव तस ताय॥

पूज़ कर व्यग्थान रव शेवस तय रव शेवस तय
श्राविन शीनक पाठय गजिनस तय २
पान सान ज़ोनुम तानि खस खस ताय २॥
च्य॥ ... ...

लोल नार ज़ाजनम वालिज वस ताय २
लाजनस लोल किस तम्य तोन्दरस ताय २
अन्दरो रछ २ तम्य ज़ाजनस ताय तम्य २
च्य॥ ... ...

माज़स कोर नम तम्य बस बस ताय तम्य २
वार नय रुदम कांसि वन नस ताय कांसि
चऽवनस लोल मस तस्य पथ मतस ताय २
च्य। ... ...

बोय सुय सुय बोय वयज़ि व्यसरस ताय २
ई सन्त वनान श्रोती छस तय श्रोती छस ताय २
चावान सुय छुम सम शान्ती रस ताय सम...
च्य॥ ... ...

वनिथ हाल पनुन ह्यक वुञ्न कस ताय ह्यक ....
लोल तिहिन्द नून प्यवान ज़न ज़खमन ताय ज़न
हीशर न वननस त बन नस ताय त बन नस तय
च्य ॥ ... ...

यूग गन्यान शर्मन्द वीर हरतस ताय वीर हरतस तय
जाय साञ्न सुय मंज़ यियि न वननस ताय २...
श्न्याह ति गछान छुय शिन्यहस ताय छुय २ ...
च्य ॥ ... ...

डाल कोन दिम ज़ालस लाज नसु ताय २ ...
मर मर यम थर गोल वसवस ताय २ ...
ब्यन्यर न कुनि द्राव मंज़ वहदतस ताय २ ...
च्य ॥ ....

पर तोर दज़ान छिय च्यतस ताय २ ...
दरि कुस जिन्द मोर तथ गतस ताय २ ...
सुय सोन पानय प्यव च्यतस ताय २ ...
च्य ॥ ... ...

न ञ्योव बन्योव यस पानस ताय २ ...
नत वन्त क्याह स बेखबरस ताय २ ...
शोंगमुत क्याह ज़ानि हुशियारस ताय २...
च्य ॥ ... ...

सुय च्य दुय त्राव माज़म माज़स ताय २ ...
पान पाव च्यतस लाग म वेह्यस ताय २ ...
ब्रह्मा रन्दरस तस्य ह्यस च्यतस ताय २ ...
च्य ॥ ... ...

वुछ फरख केह न च्य गूभ्यदस ताय २ ...
सुय २ सोरुय वुछ करू ह्यस ताय वुछ कर २
पोज़ वनुन मुर्खन निशि छुय ठस ताय निशि छुय ठस ताय
च्य ॥ ... ...



आनन्द गनय

आनन्द गनय परि पूर्णय
नारायणय कर कृपा ॥

अनन्त अखन्ड़ ही च्यथ गनय
गफलत से हम अब जागा
च्योनुय ध्यानय हृदयस ब खनय ॥

मुहने जालय यिम युथ न ह्यनय
रछि वञ्य लछि नावि कर कृपा
मन ह्यथ गोहम हा मोहनय ॥ नारा

च्यथ बुद्ध मन तन कर अरपनय
क्याह ह्यक वनिथ च्योन महिमा
वीदन ति थर वछ छिय मन्द छनय ॥ नारा

गाल मुह अज्ञान म्य न्यरंजलय
कामक्रूद तमाह कड़ तमना
गलि यि सूत्य प्रेम अमृत च्यनय ॥
सूहम हमसू स्वर राथ द्यनय
न्यर्मल न्यरद्वन्द च आत्मा
पापन सूर गोम च्यानि स्मरनय ॥ नारा
वासनायि म्यानि ज़ाल तम पन पनय
ज्ञान नार सूत्यन कर क्षमा
दयी त्रविथ च्य बोध बुनय ॥
चीतन वासदीव साक्षी मनय
शीश नाग करन च्य नमो नमा
सास मुख गीत च्योन ग्यवान क्षन क्षनय ॥ नारा
मोकल्यी निशि अस्य ज्यन मरऽनय
आहा अजब छु तमाशा
सुय सोर पानय ब न अख कनय ॥ नारा
पोरान शास्त्र परिमत्य म्यनय
अन ज़ान पठय यि छय म्यनि तोता
बन केंह चय छुख हनि हनय ॥ नारा
मंगल बन्याव कोर ध्यान यनय
अथि शंख चखर पदम गदा
च्यय मोर मुकट गरड़ वाहनय ॥ नारा
शाम व्रर्ण हटि छुय कोस्ब मनय
नाल्य वन माला बोज़ सदा
शशि नागस प्यठ च पदम आसनय ॥ नारा

दीश काल रस्ति न्यत मुक्त न्यरगनय
आख वोलसनय भक्तत्यन मुदा
कड़िथ तरिथ च्य सुगनय ॥ नार

यछि हन्दि बाग पछि हन्दि वनय
अन्यि भाव पोशिय कर पूजा
तरि तिम यिम मनि स्वर गोड़ दिनय ॥ नांरा

कुनिरस चनिस नाव क्या वनय
गूव्यन्द छुख च व्यशतू मुखा
चय वुपदावन पालन गालनय ॥ नारा



जल वोन

जल वोन लल वुन छुम लोल नार हय छुम लोल
लछि नाव्य वछ ज़ोलुम यार बे आर हय यार बेआर ॥

मन ह्यत मूहन गोमय यार हय गोमय यार हय
मेलिना शौक तिहिन्दय छुस बेमार हय छुस बेमार हय
गल मा अशिस लजमय दार हय लजंमय दार हय ॥
॥ लछि ॥

ोता लागान कीना वार हय कीना वार हय
कचाह् तेज़िह् लोल तलवार हय लोल तलवार हय
खंजि २ वालिज सीनस पार हय सीनस पार हय ॥
॥ लछि ॥

अनन्त रूप सुय न्यरा कार हय न्यरा कार हय
सुय गनीश ब्रह्म गंगादार हय गंगा दार हय
व्यष्ण रूप युग २ दारिन औवतार हय दारिन औवतार हय ॥
॥ लछि ॥

वस वस त्रावि खसि दशमूदार हय दशमू दार हय
गोफि मंज़ नाल मति रोटुन यार हय रोटुन यार हय
अंग अंग रंग छोत फ्यूर शेहजार हय फ्यूर शेहजार हय ॥
॥ लछि ॥

प्रनव मंज रंग २ चंग सेतार है चंग सेतार हय
वज़ान बोलान ज़न जानावार हय जानावार हय
गोर सय जय जय बारम्बार हय बारम्बार हय ॥
॥ लछि ॥

रंग कुठि पलंग प्रंग शुबिदार हय प्रंग शुबिदार हय
वथरिथ भखत्यव तति कोर करार हय तति कोर करार हय
बंद बर कर बोञ्ज स्वर ओम कार हय स्वर ओम कार हय ॥
॥ लछि ॥

ह्यर फेर मुकुल्योस आमय वारं हय आमय वार हय
सोदरस मंज़ चान्द डब चमकदार हय डब चमकदार हय
ज़ूल तति अवेज़ान रंगा रंगार हय रंगा रंगार हय ॥
॥ लछि ॥

वासनायि सूर यस सपुन सू पार हय सपुन सू पार हय
त्रशि नायि मोम तायि कर्याय खार हय कर्यायि खार हय
दुख मुल मद मुह अंहकार हय मुह अंहकार हय ॥
॥ लछि ॥

सत च्यत आनन्द सु आधार हय सु आधार हय
चेतन मातर न्यर विकार हय न्यर विकार हय
दोश काल रोस्त तस नमस्कार हय तस नमस्कार हय ॥
॥ लछि ॥

मर मर वस वास रूदुम न हार हय रूदुम न हार हय
चोवनस अद्वयत अमृत दार हय अमृत दार हय
प्रेनुक अजब वयाह सबज़ार हय वयाह सबज़ार हय ॥
॥ लछि ॥

श्न्यि शूबन तति खदमत गार हय खदमत गार हय
यूग गन्यान हैरान तति न गुफतार हय तति न गुफतार हय
वननस त न वननस रुदम न वार हय रुदुम न वार हय ॥
॥ लछि ॥

मोंगमस न म्य सुय बकार हय सुय बकार हय
छोह मारिम न तस पथ यि लोक चार हय पथ यी लोक चार हय
तार दिन वोल सुय कोर निस्सार हय कोर निस्सार हय ॥
॥ लछि ॥

दुई थव मंज़यम्य सुय गिरिफतार हय सुय गिरफतार हय
पान ज़ोन यम्य ण्यन तस सु बेज़ार हय तस सु बेज़ार हय
कुन ओर योर ज़ोन चोल आज़ार हय चोल आज़ार हय ॥
॥ लछि ॥

मुल्य गव ज़ाञ्ज सूत्य लोग मय तार हय लोग मय तार हय
वुछ गूव्यन्दय सार हय गूव्यन्दय सार हय
व्यचार तल वुछन कुनि संसार हय कुनि संसार हय ॥
॥ लछि ॥



भ्रम मिटा

भ्रम मिटा ही जटा धऽरी
शेव नाथ लगयो पऽरि पऽरी ॥

लछि नावि लोल च्यानि द्वोद म्य वछ
रछ वञ्ज रछ यियनय मन्दछ
यछ म लाग थक्य प्रार्य प्रारी ॥

कर दया युथ न व्यशियन छिक
मूहकि ज़गत निशि कर न टक २
हऽक आयि बुक अशि टाऽरी ॥ शिव

पम्पोश खोत कूमल च्य पाद
स्योद साद सीवन दिवन समाध
प्रमाद दज़ लोल नाऽरी ॥ शिवनाथ

हटि वासुक च्य जटि गङ्गा
च्यवन भंगा च असंङ्गा
मङ्गा ही त्रिशूल दाऽरी ॥ शिव

चय शेव चय छुख शक्ती
भक्ति चानी छय मुक्ती
सख्ती चलराव पाप श्राऽरी ॥ शिव
ज्ञान चरन सीवानय
ज्ञानीय छि सदा च्यानी
दिह अभि माऽन्नी न संसारी ॥ शिव
त्रे न्यथर च दरिथ
चरिथ भव सर खरिथ
तरिथ अस्य अन वऽन्नी ॥ शिव
अमरीश्वर अमृत चाव
अमर बनाव मोकली आव जाव
ह्राव मोख दोख कास साऽरी ॥ शिव
च्यदा काश च्य कांह् न ह्यु व
स्व प्रकाश च्य वन्द ज़ुव
गाश शान्ति आश चानि तारी ॥ शिव
अज़र अमर आश्चर च हर
विज्ञान भास्कर दिगमबर
शर नेरि वर कर च याऽरी ॥ शिव
न्यस्पन्द सत च्यत आनन्द कन्द
विशोधा नन्द ही दीन बन्द
ज़ुव वन्द बन्द बन्द कपऽरी ॥ शिव
मंगल कैवल न्यशकल
न्यरमल अचल चाञ्न गयि कल
थल थल शिव चौपरी ॥ शिव

हे कृपालो हे शम्बू
चय प्रभू कास क बू
मू हम सू तव व्यचाऽरी ॥ शिव

गूब्यन्द तस म ज़ान केंद व्यन
कर तन मन च्यथ अरपन
शोंगन करन हुशयाऽरी ॥
शिव नाथ लगयो पडिर पऽरी ॥



लोलुन ज्यत प्योम

लोलुन ज्यत प्योम
नत क्योहो गोम ॥

हृथ कमलय म्य वार पाठय फोल
नन्यर गव ब्यन्यर अन्यर चोल
समाज व्यथानस कुन्यर गोम ॥

ह्योरि बुन वञ्न दिथ यस तस नाव
म्योनुय प्यव च्यतस अरमान द्राव
सुय बुय त बुय कुस यिय वन्यतोम ॥ लोलुन

मासम पान प्यठय आसम प्रय
हर शय दय ज़ोन त्रोव यम भय
सोख प्रोव आनन्द अमृथ च्योम ॥ लोलुन

म्यति पत २ ह्याथ च्यत सुय बोय
अत गत मुकल्योम त्रावम दय
बाकय कांह नस रुजम काम ।। लोलुन

त्रयि ताप सन्ताप कुय आम ताव
द्राव गछि राच मंज़ गाशिय म्य आव
शान्ती शंबनम प्योम शेह ल्योम ।। लोलुन

शहर गाम फीर्य चानि भावुकुय दोद
शुद्ध गव हृदय न्यरमल बुद्ध
यछि पछि प्यालन चोम ओम ज़ोम ।। लोलुन

कल्य वीद अति तल्य गयि कारण
शीन ही कुमल्येयि ध्यान धारन
मन म्योन थनि हंदि खोत कुमलयोम ।। लोलुन

द्वयत अद्वयत च शंखाये
गूव्यन्द चजियो ति हिन्द माये
ज्योन मरुन श्रम ओस सुय मोल्योम ।। लोलुन



वन्दयो दुन पादन

वन्दयो दुन पादन यर्द
ही शुद्ध शेव शंकरो ।।

यछि पछि हृन्दि कन्द नावद
भाव सूत्य मनि थाल भरयो
सच्चदनन्द च्यथ डालि लद ॥ ही
बर्यमय खास्य प्रेयम दोद
वलो च्यत अमरो
तमना म्य न्यरम अद ॥ ही
लोल छुम चोन नीरथ हृद
कृपा अमरो श्वरो
वर कर लोल चानि गय ज़द ॥ ही
तंग आस काम क्रूध मद
यिम शथर हा ज़र ज़रो
गालुख अद वयाजि वद ॥ ही
रछतम चय निशि नेक बद
लूख गेलन छि क्या करो
गरि खोत गरि अमि सूत्य थद ॥ ही
भक्ति वत्सल कैवल च्यद
रूपय ही आश्चरो
दीना नाथ रछ अनहृद ॥ ही
ओम कार मात्राथि पद पद
स्वर ज्यन मरन अरसरो
चलन दिह व सी मद ॥ ही
क्या गोय च पूर्ण न्यश बुद्ध
बुछ करत पानय सरो
रोस्त छुख आदि अन्त त मध्य ॥ ही

गूव्यन्द छुख कोताह् स्यद
गुणा तीथ च्योन गरो
थफ त्राव दिहि ड़ोड़ गज़ कद ॥



छांज्याव म्य युस

छांज्याव म्य युस ओस यसुन्दय म्य तमाह्
च्यतस प्योमो सुय बोय पानय छुस अमा ॥
वलिंज दज़मो गोड़ नम लोलुनुय म्य नार
सत गोर लगयो कोरथस मचि न्यन्दरि हुशियार
गट चजमो दोदमो याम ज्ञान्यान शमाह् ॥ च्य
गोमो कुञ्ज्र चोलमो अन्यर त नन्यर गोम
ब्यन्यर त्रोवुम आनन्द अमृथय चोम
कुलय म्य मंज़ मंज़ कुलस ब छुस जमाह् ॥
अवांङ्ग मनस अगूचर यस वीद छु ग्यवान
बडय २ व्यदवान अति यीरन ज़न ति फलि नादान
रिंद मूद्य ज़िन्दय छुय है पननुय आत्मा ॥ च्य
ग्यवान यस वीद त पोरान सुय चोन पानय
सत च्यथ आनन्द परि पूर्ण अधिष्ठानय
कारन तय दीव तस्य छि करान नमो नमा ॥

छुय न वनुन तोरन वनुन क्यास ब वनय
सुय बाये बो कुस गोमो अन्दरी लोलुन सनय
श्रेह चे रेह् गोंड नम अन्दरी म्य जम जमा ।। चय

न्यर्गुण शेवय जानुन जुव पनुन जुवय
अखंड़ अपार तस दोयुम कांह् नो ह्यु वय
सुय प्रज़नाव दुयी त्राव स्वरांदम २ ज़ोमा ।।

युथ छुस त त्युथ छुस अति ह्यथ गय सार्य अरमान
शिन्यहस ति शिन्य गव तति हरान युग गन्यानय
वन क्या वयुथ बो नाबूद तति आलमा ।। चय

नाव रूप वरन गुत्र आश्रम रोस्तुय छुय हो
तिहुन्दुय पानय दीश कालय रोस्तुय सुय हो
पानय जानुन गूब्यदो बन बे गमा ।। चय



मन मूहन ल॓ल

मन मूहन लोल चोन आम
वली शाम सुन्दरो ।।

भाव दोध बर्य २ थव्य म्य जाम
हत मत करत गोन्दरो
तम नाह् नेरि चतो दाम ।। वलो

मनि कय ओम ज़ोम दुध ज़ाम
तत्याव लोल तन्दरो
आत्म ध्यान दानि मंज़ाम ।। वलो

यिख नय नत वट बो जाम
यूगियन हदि यूगन्दरो
क्या गम लूख दिय तन पाम ।। वलो

ओमकार स्वर्याम आराम
आम श्री राम चन्दरो
छरिथ निशि द्राव गाम गाम ।। वलो

सञ्ा वोगञ्ा युस छांज्याम
न्यबर्य त अन्दरो
मनि मंज़ बाग वाञ्ा सुय आम ।। वलो

न्यर्मल न्यति मुक्त न्यश काम
बोज़ाम ज़ोम कुय यन्दरो
राधा स्वामी शेवय द्राम ।। वलो

अन्दर चास तमनाह द्राम
वुछिथ शेब मन्दरो
तति शाम सुन्दर ड़ेशाम ।। वलो

प्रान अपान मिल ना व्याम
हा वुशुन त हू होन्दरो
शिव डयूठ प्यठ ब्रह्मान्ड़ बाम ।। वलो

सहस्त्र दल वात नाव्याम
प्रान शोरिथ बन्दरो
शशि कलि अमृत्य वुज्याम ।।

पोखत कर म्य वुनि छुस बो खाम
प्येमच मस न्यंदरो
वुज्ञ नाव तम दोदुर चाम ॥ वलो

अभिमान काठ सोंभराव्याम
भक्ती नार सन्दरो
दज़ि गूव्यन्द वात परम दाम ॥ वलो



लोल नार सूर

लोल नार सूर गोम वासनायि प्यचे
म्यचे सूत्यन म्युल हो गोम ॥

थोद वथित गयि न्यांदार मचे
सोर दय ज़ोनुम यामथ प्योम
शेतान शिव कुन द्राव बीठ कचे ॥ म्यचे

सुय बुय द्रास युस छोड़ रचि रचे
पथ कुन कंह वुज्ञा नरूज़म कोम
वनान वीदय क्याज़ि जुव क्रचे ॥ म्यचे

सुय बुय बो क्रुस दि जवाब प्रेच
बयं २ अद्वयथ अमृथ चोम
त्रफती आयि त्रशनायि त्तेशि हचे ॥ म्यचे

पञ्य यार्य नस खूच्य लूख यंचे
वैराग शम दम मन कर्योज़ मोम
वाल २ वासनायि कड़ व्यचार वुचे ॥

सत गोरव कर कृपा क्या गोय च्य हृचे
सुय च्य युस म्य हा छ्यार्याम
चट सङ्कल्प मन अंद न ग्रचे ॥ म्यचे

कर्म फल सूर ज्यन मरन चि प्रचे
भ्रम कुय अत गथ म्य मुक ल्योम
बचायि त्रयि ताप लग्य न ताप तचे ॥

गूब्यन्द क्या वनि तोर केंह न प्यचे
वीद ति अथ जायि कोल ह्रो गोम
लोल यस दय सुन्द तस दय पचे
म्यचे सूतिन म्यूल ह्रो गोम ॥



सत च्यत आनन्द

सत च्यत आनन्द दृष्टा मूहनय
राधा कृष्ण राधा कृष्ण राधा कृष्ण जय जय ॥

विज्ञान सागर अजर अमर
शाम सुन्दर श्री मुर्ली मनोहर
कैवल न्यर्विकल्प जय न्यति मुक्तय ॥ राधा

न्यवास दीश काल रोस्त गव रासय
दित ह्यथ ख्यथ च्यथ रोज़न उपवासय
अथ्य वनान वीद सन्त रास गव योह्य ॥ राधा

रास गव गालुन द्वयतुक भासय
रास गव करुन सङ्कल्प सन्यासय
रास गव समाध यग्न व्यथानय ॥ राधा
रास गव पान सान कृष्ण ज़ानुन कुल
रास गव पानस सूत्य करुन कुलस म्युल
रास गव मनोनाश रास वासनायि ख्यय ॥

रास गव यूग गन्यान रास गव भक्ति भाव
रास गव प्रावुन मरी सहज़ भाव
रास गव ज़िन्द मरुन रास सहज़ क्रय ॥ राधा
बुद्ध राधा शुद्ध गयि चानि आशिय
ही न्यरञ्जन मूहन च्यदा काशय
न्यर्मल न्यरद्वन्द स्वप्रकाशय ॥ राधा

जागृत सपुन स्वशप्ती थानय
चैतन्य कृष्ण संद्य गिन्द नव्य थानय
द्वारिका वृन्दाबन मथरा रासुय ॥ राधा कृष्ण
मनि रखमनि वुथन ब्यहन दवन
ख्यवन च्यवन च्य कृष्णस सु स्वरन
कँह न ब्यन ज़ानान छ्य च्य मुय मुय ॥ राधा

वासनायि मुमतायि पूतनायि यछा
मूहन बब नय दिहि अभ्यास ब्यह भरा
चावन गूपाल दाम अकि मारथनय ॥ राधा

अज्ञान कमसन सूज्य कम कम असर
काम क्रूध आदिक मार्यथक ज़र ज़र
न्यरबल करिथ सुति गोल थनय ॥ राधा

बाल कृष्ण वृच गूपिये तम्ब लवेथ
प्रेम रस मस च्याविथ मुकलावेथ
सारिनय हंदि खुत आसख च्यानी य ॥ राधा

अन्द वन्द गूव्यन्द पूशनय भक्ती
अथ्य भक्ती वनान जीवन मुक्ती
सख्ती चज़ कर सर पैदर पय ॥ राधा



समसार सोदरस ज्ञान

समसार सोदरस ज्ञान पुल
दि तर कर पानो सुल ॥

वैराग कानुल लद अथ
सथ ठठ्य भूमिकायि सथ
सम दृष्टी तख्त कुनि रोज़ि न वुल ॥ दितर

सङ्कल्पन करुन डास
ओमय करुन अभ्यास
अभ्यासुक दबाव क्युल ॥ दितर

तृष्णायि ज़ल छुय बर्यथय
सत संग नावि क्यथ तर्यथय
ह्यकक चठ वासनायि हिल ।। दितर
सू के खोरि हम के हम
लोल नम वाय नाव दम दम
ब्रोंठ ऽति जल जल हम तुल ।। दितर
सतगुरु चरणनय तल
श्रावणि शीनका पठिय गल
अभिमान गाल बन मोकुल ।। दितर
स्वप्न दृष्टावत पान ज़ान
हान कास प्राव दिहि अभिमान
पानसान ज़ान दयी कुल ।। दितर
चय अक्षय सुद्य छि अनन्त रफ़
चमकावन छि सतवय दीफ
दूर करु द्वयतच बुल ।। दितर
दिहि अध्यास वासनायि ज्युन
सोम्बरिथ व्यचार नार द्युन
दज़ि अज्ञानुक जंगल ।। दितर
ह्यस थव शाहनय सूत्य
रात्र घन खत्य वथ्य कृत्य
अमि करनु मन बनि शिहुल ।। दितर
'गुब्यन्द' सदा सन्तुष्ट
तिमय रूध यिम समदृष्ट
आसि ब्रह्मण या वातुल ।। दितर



दोध्वस अन्द्री कर छोप

दोध्वस अन्द्री कर छोप क्या क्याह् च्य ब नाद लायना।
लोल नार सूर हा कोर थम कंह् च्य म्योन आर आय ना ॥ दो
श्रावनि शीन ह्य गोलस सत गोरो चानि मायिना
वन्दयो यंद शुद्ध पादन लगयो चानि ग्रायि ना॥ दो
लोग नस तम्य बाल पानय लोल चे नो ऋायि ना
दिहि अध्यास दोद हन हन कोरन कंह् वुय वायि ना॥
मोत ब गोसो कोत म्य गोहम छोर मख ज़ायि जायि ना
छायिन ब्रंथ छिम गञान सत गुरो चानि रायि ना ॥ दो
मचि न्यन्दरे वुज़ नविथ सुत ब कुन द्रायि ना
सुय बोय पानय ओसुस दुय असम छायि ना॥ दो
गुर कृपा यस छय आसन सु बे परवायि ना
स्यदच अछ रछ छि डोलान बर नल तस दायिना॥ दो
भवसरय तार लोगमुत चानि सूत्य कृपायि ना
परम पारय च्य ब कोरथस गोस नो हायि जायि ना॥
पोष्य कर्य च्यतस त मनस चानि प्यठ पूज़ायि ना
समाध ध्यान च्यानि व्यथानय आयिना ॥ दो
युस ब छारान सु ब पानय कोरमो त्राहि त्राहि ना
भ्रम किञ्ा छारनि पानस अस्य चोपोर द्रायि ना॥
कम कम वीर गूव्यन्दों डाल्य मत्य मायायि ना
रोज़ शरन सत गुरन हुन्द्य चरण सायि ना ॥ दो
दोदस अन्द्री कर छोप क्याह् क्याह् ब नाद लायिना ॥



कल वाल

कल वाल चोवथस मय बाय प्याल प्याल
साल यित त्रिज़गथ पाल वोञ्ज सोन ।।

नल्य बो छनसो प्रेम पोशि माल
आनन्द मस म्य चावीय सुय
मीलिथ गछत तस युस छु बेखल रवाल ।। साल

मेलि नय जल जल नत बन मोतवाल
चाल तो दुइ हुन्द बार बोय
जल जल थियि सुय मौक लावि कलि काल ।।

बाल पान फ्यूर मुत छुस बो बाल बाल
बाल पान छोड़ुम न यारय म्य
पानय यारय पान सय हवाल ।।

गजिथम दिह अभिमान च म्य ज़ाल
ज़ान नोव थस पान स्वप्रकाशय
गाश म्य ओनथो मंज़ शेव शिवाल ।। साल

भक्तयन रछुवुन पान दीन दयाल
दुई म्य गंज़ रावियि पानय सुय
कुनुय ज़ानय सुय रटिथ नल्य नाल ।। साल

हनि हनि मंज़ सुय छु दिवुन ड़ाल
रंग रंग तंसजय चालय छय
रिन्दन छुय वलान अद्वयत दुशाल ।। साल

आदि दीव निवन छु गूब्यन्दस साल
अद्वयत चोट दिवान छुस सुय
कुनुय छु सोरुय सुयबे ज़वाल ॥ साल



लोल पोशन

लोल पोशन करेय पोश बनी
न्यस्द्रय गोनी शिवस करू पूज़ ॥

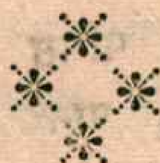
अरग करतो मनस त प्राणस
बुद्धि पोश लाग तस्य पूजि भगवानस
शिनि साक्षी सुन्द छुय म्य सेनी ॥ न्यस

ओमकार त्रशुल लोयनम छलय
दिय अभिमानुक तुल नम कलय
दई जाम छचव गयी न्यथ नाञी ॥

पूज़ा पूज़ि युज़ख सोरुय छु पानय
पानय पानस छु पूज़ करानय
सोरुय सुय छु सञि वोग ञी ॥ न्यस

हअर तस प्यव यूग त गञान
वीद शरमन्द गछिथ छि ग्यवान
आश्चरस गयि बड़ि बड़ि मुनी ॥ नस्य

ईक वट रट मन तय ब्यथि प्रान
सोरूय शिब कुनि नो छु शेतान
गूव्यन्दो पानस द्यु व वनी ।। न्यस



हनि हने मन म्य

हनि हने मन म्य न्यूथम अस वञो शंकरय
गुणातीतय शेव रूपय जान नोव थस च्य गरय ।।

ज्ञान चे गंगायि मंज श्रान कोर गंगा धरय
दिह अभिमान मल म्य छोल हो डुई म्य चच्य हरी हरय
अहं कारस भस्म कोर थम कस वनय भस्माधरय ।।

कर कटाक्षा ही शम्बूनाथ तर अकिक्षन मात्रय
व्यशन शिवय शिव छु व्यशन ज़ोन होव्य शम्करय
टाठि शुभान जिन्द मरुन जिन्द मीरथ नो मरय ।।

परम आनन्द मस ब चोवथस रस म्य लोग अमरीश्वरय
व्यचि कति म्य च्य सिवा बो च्य सिवा हो मरय
जगतचि बुनियाद करतो रिन्द पानय च्यय सरया ।।

सर कोर हो संकल्पन चेञा हा कोर मृत खरय
सदा बूज़ थम मुदा कोड़थम बोय लगय गदा धरय
मस ब कोरथस द्युतुथ आनन्द ही आनन्दी श्वरय ।।

पान परमानन्द पूर्णं द्राख करिथय सरय
भ्रम म्य कोसुथ गम म्य कोसुथ ज़र म्य चोल ही अज़रय
वीद ग्यवि थकि मत्य वीदनं ति वछ थर थरया ॥

कुस म्यवी हो गोथ चोनुय करथ दया सागरय
वञा दि गूव्यन्द पनिस पानस नेर छाड़ुन शंकरय
दुय त्रविथ सुय हो पानय गम म्य चोल दिगम्बरय ॥



वीद थकि मत्य

वीद थकि मत्थ यस छि ग्येवानय
मन ह्यथ गव म्य सुय जानानय ॥
प्रेम च पोशि थर यलिम्य फोजी
मस गव म्य चविथ दुर्यभ्य गजी
दुय अलि गज़तय सुय हा पानय ॥
मयि मारिफथ छुम चावानय
आरि फव चव गयि मस्तानय
मस्त कोरनस वहदथ खानय ॥ मन
कोर म्य पान सर मंज़ भव सरय
हनि २ मंज़ वुछ मख म्य हरय
विद्या तीथ हा हा चोनुय थानय ॥

वीद ओस यिनय ताफ ओस प्यनय
जीव इश्व त्यलि ओस ज्यनय
हर तस प्यव यूग ज्ञानय ॥ मन
वन हा वननय छुन यिवान
गूव्यन्द क्याह गेवि गछि न्यर्वान
गुना तीत हा छुय चोनुयपानय ॥ मन



गूर गूर करयो

गूर गूर करयो ही अगूरो ही अगूरो
च छुखा सो प्रकाश बहा पम्पूरो बहा पम्पूरो ॥
बुछि थन च्यय पंम्पूर, नुरुक नूरो नुरुक नूरो
दिह अभिमानस कोरनय सूरो कोरनय सूरो
सूर गछिथ रुदुख च नुरुक नूरो नुरुक नूरो ॥
च छुरव स्वर तय बहा तंम्बूरो बहा तंम्बूरो
बछुस हो मस तय च तम्युक सरुरो २
प्रेमुक तोवथम म्य हा तन्दूरो ना तन्दूरो ॥ गू
मन सय युस मारि सुय छु बहदूरो सुय छु बहदूरो
वननय म्योनुय कोरुथ मंजूरो कोरुथ मंजूरो
दुय त्राव च्य पान वोथ म्य गोरूरो वोथम्य गररो ॥ गू०

मन पंम्पोशस प्रेमुक व्यूरो प्रेमुक व्यूरो
प्यूर च्यत शाम रंग हा बम्बूरो हा बम्बूरो
रठ तख राग दीश संकल्प चूरो संकल्प चूरो ।। गू०

आदि दीव चोव थस मस भर पूरो मस बर पूरो
दुई हुन्द ह्यस च्य कोरथम दूरो कोर थम दूरो
ज़ोलमय मूह कुय शमह कोफूरो शमह कोफूरो ।। गू०

आनन्द मस च्यथ खोत म्य सोरुरो खोत म्य सोरुयो
राज़ यूग राज़ बोज़ साज़ सन्तूरो साज़ सन्तूरो
गूव्यन्द कलंदर अनि मन सूरो आनि मन सूरो
गूर गूर करयो ही अगूरो ही अगूरो ।।



दम दम क्रम

दम दम क्रम सान दम वाल खार वारो वे
शम यियि त गम चलि हम गलि ओम कारो वे ।।

सत गुरु कर दया वोञ्न क्या म्योन चारो वे
कर क्या बर गोम यावुन लोक चारो वे ।।

आदि दीवस सत गोरस गोड़ कर नमस्कारो वे
शेर बन्दर अनन्दर अचि ज़ि अद बार वारो वे ।।

गोड़ प्रकरम कर यति मूला दारो वे
थान थान फेर नेर बात दशमो द्वारो वे ॥ शम

ब्रह्म रोन्दरय मंज़ द्राद शान्तस लारो वे
शम प्राव सहस्त्र दल तीथ कर करारो वे ॥

विज़ि र वुज़ि शशि कल च्यत अमृत दारो वे
फोलि हृथ कमलय फेरि अद शेह् जारो वे ॥ शस

अनहृद मंड़लय बोज़ तोफ नगारो वे
गोफि मंज़ नाल मति रढुनै पज़ि यारो वे ॥

सत गोर कृपा अति थय बकारो वे
शिन्य छटि अनि गटि गाश अनिदियि तारो वे ॥ शम

भ्रूमदि मंज जोत क्या चमक दारो वे
गतस दरुन चालुन लोल् नारो वे ॥

ज़ून ड़बि मंज़ ज़ूल क्याह् रंगा रंगारो वे
वथरिथ पलंग प्रंग तति शूबिदारो वे ॥ शम

हारव रोस्तुय छुय ज़ुव यति तारो वे
भवसर तारि कीवल सत व्यचारो वे ॥

सम सार भ्रम बऽच्य शूर्य ग्युंदुन दोह् तारो वे
कर व्यचार दयस रोस्त न यति कांह् सारो वे । शम

शम दम वैराग सन्तूश मन मारो वे
मन मोर यिमव तिमय परम पारो वे ॥

ओम गव सूहम ओम सोरूय सारो वे
ओम गव पनुन पान ओम दारि नायि दारो वे ॥

वोन गूव्यन्दन छोढ ज्यूठ करुन न व्यस्तारो वे
नोन सीर वनुन टाठि करान मारो वे ॥ शम



वनि व्यासि च

वनि व्यसि च सथ गोरसय
वन कोस पूज़ा कर सय ॥
वछ सय पतिमे प्रारे-प्रारस दछिने दारे
दम - दम अमरी श्वर सय ॥ व०
वछ सय न्यथ प्रबातस
पूज़ कर शक्ति नाथस
ज़र २ श्री बास कर सय व

वोथ हा सुले मूले
प्रारस तूले मूले
भवानि भूतिश्वर सय व
क्षन क्षन रातर द्यनय
पूज़ा कर तन मनय
गंगीय गंगा वर सय ॥ व
छाज्योम सुबह त शामय
सोज़ुस कोत पैगामय
गर कति करुना करसय ॥

छाज्योम ज़रा ज़र सय
गर छुस मनि मन्दर सय
शक्ति शिव शंकर सय ॥ व

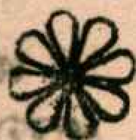
लोल सूत्य लायस नादय
सीवस पम्योश पादय
गरि २ तस आगर सय ॥ व

द्रायस तोशान तोशान
गोन्द कर प्रेयम क्यान पोशन
मुश ताख मुशक अम्बर सय ॥ व

दोह् गोम प्रारान प्रारान
अशि कनि खून छस ह्‌ारान
इय नत अद मां मर सय ॥ व

पक हा सथ गोर राये
वनि दिम जाये जाये
जायि जायि जटा दर सय ॥ व

छोडुम गोबिन्द नावय
भाग्य वानि भक्ति भावय
विजि़ विजि़ ब्यशम्बर सय ॥ व



मंगुन हय छुम

मंगुन हय छुम मंगित ओनुम,
मंगल करि पानु गूप्यन्दु गू ॥

कमल सरस अन्दर वुछुम,
कमलि रोछुम गूव्यन्द गू
ततिय वुछुम ततिय हय छुम
मनि मंज़ रोछुम गूव्यन्द गू ॥

तस्य निशि भोवुम
तमीय होवुम
तोनुय छोवुम गूव्यन्द गू
छुय म्योन मोलुय
गूव्यन्द कोलिय,
वोव तम्य ब्योलुय गूव्यन्द गू ॥

सूहम लोलय तम्य दिचह शोलह
सीरय बु रवोलय गूव्यन्द गू
सोगनम मूलुय दितनम अतूलय
अनिथ म्य तूलुय गूव्यन्द गू ॥

मुछुम गोबुय बानहछ दोबुय,
लभिथ म्य लोभुय गूव्यन्द गू,
लभिथ पानय नोन जानान
क्षनि भाग्यवानय गूव्यन्द गू ॥



माता राज्ञनि

माता राज्ञनि दया कर
ओरय मुचराव तय च बर
मऽज राज्ञन्या दया कर ॥ ओ

जगतिच्य छख च माता
सारिच्री छखय दाता
क्या ग्यवब च्योनुय बजर ॥ ओ

आसविन्य छख दयावान
भक्तन छख चि बखशान
मांज हुन्द छुय च्य थज़र ॥ ओर

शिवस शक्ति चि आसान
मुह् गट छक चि कासान
शक्ति पातिच्य नज़र कर ॥ ओ

सर्व व्यापक च आसान
जायि जायि छकय भासान
तुलि मुलि छुये च्योन भर ॥ ओ

दरबार च्योन छु प्रज़ालान
प्रथ तरफ गाह् छु त्रावान
वुछ नस किच्य दितय नज़र ॥ ओ

मायि हत्य आयि लारान
डेढि तल ठिये प्रारान
अख कृपा दृष्टि च कर ॥ ओ

सिध वाञ्नि तन छि नावान
तीज़ ज़ल मन छख सावान
मन कुय छखय गाशर ॥

डयक सीत्य प्रदिक्षन दिवान
साष्टांग परण प्यवान
सन्मुख असि निचि च तर ॥ अर

तुलि २ व्यन छि चारान
रंग २ पोश छि सुम्बरान
शेरि लागोय नेरि शर ॥ ओ

अशि वानि गुढ़ छिय दिवान
मनि फलि अर्ग छि लागान
अथ च दारतय ओरय सर ॥ ओर

प्राण कुय दीप आलवान
भावकुय दुध छि भावान,
भाव सोनुय कबूल कर ॥

अपिज्य पज्य मंत्र परान
यज़र छकय चिय ज़ानान
गलतस चि करतय स्यज़र ॥ ओर

कड़तय चि असि अरमान
रोज़ तय सदा मेहरबान
छक सना तन चय अमर ॥ ओ

बन्सरी छु च्येय कुन वनान
अक होत जारी करान
वुन्न ति दितय अभय वर ॥ ओ



च्यानि रोयुक

च्यानि रोयुक च्यानि खोयुक चानि मोयुक छुम कसम ॥

सिर्य मन्दछन ज़ूनि गव गश
च्योन हुसुनुय वुछिथ
चय म्योन जुव च्य न कांह ह्युब
चानि रोयुक छुम कसम ॥

गुल छि मन्द छान दर गुलिस्तान
सुम्बलिस तान सुत्य ह्यथ
वुद्ध अम्बर अतिरि नऽफय
चानि बोयक छम कसम ॥

वुछ अकिय मोये अवेज़ान
कुल ज़मीनों आसमान
दीव कारन जीव सऽरिय
चानि खोयुक छम कसस ॥

गोवेन्दुन चई दरमन्द
ब्योन न्तय बद बयो
मोल मऽज्य सोरूय कने
चानि खोयुक छ़ुम कसम ।।

ज म ह्यकयो ज़ाह ब वनिथ
थि च छ़ुख तथि हो लगय
कुन वनुन त्यय छ़ुम न फोरान
चानि कुनि रूक छ़ुम कसम ।।

नून वछाव मंज़ सोद रस
पय ह्याने ब्येयन वनव
पान्न सुय गोल कस वने वोञा
चानि सनिरूक छ़ुम कसम ।। च्या

ऋम किञा द्रास छारने च्य
पान् चय ओसुख पतव
बय ना आसो कौन वने ।
चानि ननिरूक छ़ुम कसम ।।

बय ना रूदुस कुनि शाये
च्यानि माये वलि चोपोर
रोस्त न च्यय छ़ुय अख हवावय
चानि गनिरूक छ़ुम कसम ।।

पाऽन्य पानस आख वुछने
द्राख गूव्यन्दा बनिथ
ब्याख च्यरोस योर नो कांह
चानि कुनि रूक छुम कसम ॥



तोशान छ्सा

तोशान छ्सा बपोश लागय
यित मो सत गोर म्यनि आगय ॥

सतगुरु लगयो सत संग सय
पम्पोश किस हिविस रंग सय
यिन चानि वुज्य हेम पोश नागय ॥

सत गोर लगयो पऽिर पऽरी
कऽस थम ज़न्मन हन्ज़ खऽरी
फोलुमुत छुमा प्रेमुक बागय ॥ यि

सतगुरु सथ बोल नऽवथस बो
सत की वाव्य तोल नऽवथस बो
तन मन ब अथि कुन लागय ॥ यि

सतगोर आमुत छुमा चोन ल ल
ज्योति रूप हावुन छुय चोन कोल
द्यन त राथ ह्यमयो च्य ब ज़ागय ॥ यि

करयो च्य किच पोश माल बो
च्यानि पुछि छोह् दिवान छसा बो
रंग २ चऽरिमय च्यनि रागय ।। यि

गोन वखनान छस द्यन तय राथ
हाव वोञ्न दर्शुन भाव प्रभात
करिम न तफ़ज़्फ़ दरिम न मागय ।। यि

मदरा बो नेशि बोद्ध छसना
शीतल पानय शेद्ध छसना
बल राव भवसर की दागय ।।

सत गोर उदास गमच्य बो
च्य पत दास द्राम च छसा बो
न्यशकल वुज़ नाव स्मरच ज़ागय ।।



मोय मऽरिफ़थ

मोय मऽरिफ़थ छुमय चावानय
यारि जानान पनने वानय ।।

सन्य वोगञ्न वन्य दिवानय
साकय बनिथ आव ननिवानय
मस चऽविन गयि मस्तानय ।।

मलरि २ चव गयि देवानय
ओर योर सुय रुद पऽिन पानय
दोगन्यार नय रुद अद दानय ।। यरि

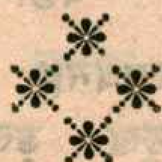
ज़र ज़रय सु बतिथ छु पानय
पीर कमिल साकय छु पानय
दई सत्य वुछ द्राव नूरानय ।। यरि

बानन यलि तुल मय ठानय
नप नपय द्राव चम कानय
सास भास्कर तति मन्द छानय ।। यरि

योरुक च्योनुय छुय बहानय
ओर मस्ती दी यलि सु पानय
सनिरय मंज़ नेरि दुर्दानय ।। य०

शमह्स पथ नेरि परवानय
गछि दज़िथ प्रावि न्यरवानय
तीज़ मन्ड़लस सुत्य गछि रलानय ।। य०

बन्सरी प्रारान तसिन्द थानय
न्यायि अन्ज़ रावि नेरि अर मानय
मेलि जानान बनि यख सानय ।।



चई सोरुय

चई सोरुय त बुई बहानह
हा जान नह वन्दयो जान ॥

शर मन्द छुस ब अनज़ान
परि मति छिम न वीद पोरान
दया करत म दया वानह ॥ हा

तारि गमत्येन च तारनह
फटि मत्यन बोठ खारान
आर ऋति छिय च्य अस्य प्रारानह ॥ हा

अन हद मंड़ल थुस ब सानह
प्रन वुक ज़ीर बंम बोज़ान
तस तोर य छि नाद दिवानह ॥ हा

शेरि किञ्ज नेरि युस फरज़ानह
अमृत तोर छुय वालानह
शेशि कलि गलि गलि चेवानह ॥ हा

इग्द्राज़ दीव ह्यथ यिवानह
सलामि तस छिय भजावानह
वछान केंह न छुख वनानह ॥ हा

अच्छ रछ छस तम्बलावनह
सुनो तति छुख ड़लान
गोफायि पथ युस गछान ॥

अष्ट सेज़ह छस पत लारानह
सुनो स्योद छुव्र वुछान
चरनन छिस म्योठ दिवान ॥

दशमो नाद युस बोज़ानह
त्रे कारन ति तस छि प्रारान
दूई त्रविथ सुय आसानह ॥

दम लव दम दिथ दरदान
अथि ह्यॆथ बोठ छिय खसान
सूहम ज़ॆरि प्राण अपानह ॥ ह०

होश पोश नूल छुख तोशानह
ब्रह्मान्ड़ पशि थर फोलान
कुञ्जि रुक ओल छुख येरानह ॥

मन न्यूथम हा गिन्दानह
हनि हनि चई छुख बासान
मुर्खन निशि छुख देवानह ॥ हा

में च छारान मेच मोचान ह
मे सान सोर कुन नारान
मे चै मिलवन गयी ज्ञाञानह ॥

समाध असामाध समानह
नविकल्प च्य क्या हान
साक्षो सतचितनन्द पानह ॥

चई साकय त चई मय खानह
पञ्चि पानस छुख मय चावान
चई छुख मय तय चई पय मानह ॥ ह

चई दिह घ्याता तय ध्यानह
कर क्या ध्यान छुस मन्द छान
त्रिगुनाह तीत च्योनुय छु थानह ॥ ह

सवप्न दृष्टा वथ छुख च्य पानह
प्रज्ञ नविथ पनुनुय पान
यिमव ज़ोन तियय मस तानह ॥

संकल्पन करिथ फानह
चई रोज़ान द्राम अरमान
रिन्दव गिन्दुय शिन्य मैदानह ॥ ह

ब चई यति छुन रोज़ान
हैरतुक च्य मै लोयथ कान
रिन्द जिन्द मूद्यि अति हैरानह ॥ हा

चई शमाह त चई परवानह
पान्ज पानस गतह मारान
वार पाठय ज़ाल दिह अभिमाह ॥ ह

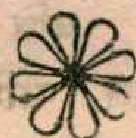
नत कुस बन्द कुस मोकलानह
ब्रम चलिथ छुय ननान
कुसू मरद कस ज़नानह ॥

नत कुस ज़ाव कुस मरानह्
ब्रमह् किञा युन गछन रोज़ान
ब्रम चलिथ रिंद आसान ॥ ह्

छ्यथ च्यथ करिथ करानह्
कँह् नो छुख पानय ज़ान
ओर वोर छुख चई नारानह् ॥

सो प्रकाशि छुख चई प्रज़लानह्
सरिसथ चई गाश अनानह्
च्येथ साक्षी बड़ि भगवान ॥ ह्

चोर बीद अरदाह् पुराण
गूब्यन्द गीत छुय ज़ेवान
समाज़ सोख नज़ वे थानह् ॥



लोल आम

लोल आम लोल बन नावस
नावस लग सय बो ॥

गोस गम पननी बावस
क्याह् च्य कोर थम मदनो
वाद क्या छुम याद पावस ॥

सोनह् मुचरविथ ह्रावस
ईयम यलि रोबरो
पेश कश सोरुय व थावस ॥ ना

तनि तनय मिलनावस
खोनि क्यथ कर सहो त हो
पान पनुनय लरि सावस ॥

राज़ हंस कोरनम कावस
तोशि ना ब लोतलो
पम्पोशि तीन ही ब छावस ॥ न

सु छु वुछान भक्ति भावस
कंसीय नो दियो दको
राज़सी नय वुछि सु वावस ॥

वति कोसम वथ रावस
लोल पोशि छक सय बो
चरणन प्यठ कल थावस ॥ न

लुक कथन कन नय थावस
क्याह् कोरनम म्य बदगो
लूख त्युलि तन ति टावस ॥

हृदयस मंज़ वथ रावस
लोल आमुत छु म म्य लो
पान पाद न पुश रावस ॥ न

आलवन पान आल नावस
ड़ेशन यलि सु खोश खो
गूव्यन्दस बस छुय हावस ।। नावस



वाद्द छुय पूर

वाद छुय पूर नाद ब्यद सय सूत्य रोज़
दीवी बोज़ सोज़ छ्यन्द सय सूत्य रोज़ ।।

मशरविथ सम्सारीक सोख त दोख
पुशरविथ पान दयि सञ्ज़ि वति पख
वातख अलख गूव्यन्द सय सूत्य रोज़ ।।

आर च्योनुय यियि परमीश्वरसय
दिल फिदा कर पनीनस दिल बरसय
सत गोर सय दीन बन्द सय सूत्य रोज़।। दी

यलि दर्शुन बनि त्यलि ननि सोरुय
गूव्यन्क्य अद त्यलि नयि सोरुय
बनि सोरुय आनन्द सय सूत्य रोज़ ।।



आश्चर अमर

आश्चर अमर छुय स्वरूप च्योन
छुय नमस्कार हा सोन सोन्दरो ।।

सत च्यथ आनन्द अलोक्यख
च्यय आत्मा म्योन सोन्दरो ।।

न्यथ नवि खोत नोव वीदय ग्योव
प्राणि खोत हा प्रोण सोन्दरो ।।

प्रथ कुन्ी तीज़स मंज़ च्योन गाश
शूभायि मंज़ शूभ वुन सोन्दरो ।।

ऋषि मुनी यूगी सन्त साध
ध्यान दारान आय च्योन सोंन्दरो ।।

चेन नुक च्येनुन होशुक होश
गूव्यन्द सुय प्रय म्य सोन्दरो ।।



दित दर्शुन

दिन दर्शुन म्य पननुय
वन्त च्य क्या कम गछी
करत दया हे म्य भे अन्त ।।

वन्त

सथ बोज़ सथगुरु

सथ बोज़ सतगुरु छुम शक्ति नाथीय
म्य शक्ति पाथय करिथ गोम ॥

नोन जानानय वन्द स जानीय
तम्य सुन्द ध्यानय धरिथ गोम ॥

सतगुरु शब्द यलि गोम वनिथ
मनचि वाजे खनिथ गोम
पापन त पोन्यन त्यलि गोम हरिथ ॥ मथ

न्यबर दोपनम अन्दर अचुन
दीह द्वारि कांयि नचुन छुम
सम न्यथ सुमन्दरस तरिथ ॥

बोनय असिथ ख चस ह्योरुय
सोरुय सोरुय हरिथ व्योम
युस गुरु प्रेय म्य ईयीय बरिथ ॥ यम

कुकिलि हन्दि पाठय दितुम दमई
वुछुम हमई सूहम सू
सूहस त हमस अपोर तरिथ ॥

गुरुन दोपनम छोपय छोपय
छोपय नपय नपय छय
वुछ नप नपय गोट प्यव हरिथ ॥

मंज लोक चारस सोदा गारस
अहं कारस दुतुम नाद
नादान गयस सोदा करिथ ॥

बुजर वुछुम शमन शमन
उों मन रटम रुवन जाय
यिम आयि शमन तिम गई तरिथ ॥

लल देदि थोवय तन्दुर भरिथ
मन सूर कठिस गरिथ गोम
भाग्यवान रूज़िय जिन्दय मरिथ ॥



करु वोज़

करु वोज़ सोनुय चार लोलो
सतगुरु दार अवतार लोलो ॥

यथ संसारस मन्ज़ ह्यन्य आय
अनुग्रह च्यानि सूत्य बनि सोन पाय
तारु वोज़ यमि संसार लोलो ॥

अयव्चारस मन्ज़ गयि सरिय
करु वोज़ च्य पाननीय यऽरी
जायि जायि छुय अन्दकार लोलो ॥ सत

कासंग मंज़ च्य असि बोठ खार
सत संग सय कुन लाग संज्ञ नाव
तार दियि सत व्यचार लोलो ॥ सत

सतगुरु छया असि च्यानि आश
हाव बोज्ञ सतसंग कुय प्रकाश
सत्य लूक च्योन दरबार लोलो ॥ सत

यन प्यठ जन्मस च्य योर आख
मलिस माजे निशि च्य ज़ाख
कोरुथ च्य पनुन चार लोलो ॥ सत

हंसन सत्यी थविथ ज़ान
तम्य सूत्य वुफ नोवुथ पनुन पान
खुल गयी सऽरी द्वार लोलो ॥ सत

दतात्री आख अवतार दरिथ
भव सागरस कत्या च्य तरिथ
मोक लविथ पापन्य बार लोलो ॥ सत

कल्प वृक्ष छुखना से च्य
मंगान युस यी दीवान तस ती
बरि बरि छिय अम्बर लोलो ॥ सत

नावय चोन छुय गूप्यन्द कोल
दोह् खोत दोह् छुम गननय लोल
भक्ति दियि बारम्बार लोलो ॥ सत

सतगुरु च्योनुय छुय दयाल
सात सात विज़ि २ सोनुय ख्याल
करु वोन्य असिति पारम्पार लोलो ॥ सत

पुशि भाव वन्यिमय च्यनि तोत्ता
करतम याद वोन्य म्यति साथा
धारनायि युथ घ्यान दार लोलो ॥ सत

अन्य छस करान मान तिमनय सऽति
भवसागरस तरिथ अज़्तानि कूति
तारु वोन्य म्यति च्य तार लोलो ॥ सत

बद्री छुय मनसेय च्योनुय श्रेह
सात सात हृदयस म्यनिस ब्येह
छम बज़ान दिलचे तार लोलो ॥
सतगुरु दार अवतार लोलो ॥



गुल सय रोस

गुल सय रोस हय गुलज़ार व्यसिये
सु छु सोनुय सतगुरु द्वार व्यसिये ॥

सतगुरु सोन क्या ओस शुभान
ती वुछिथ दीवन छु मन लू भान
करि तम्य सरी हुशियार व्यसिये ॥ सु

वुछनय न तम्य मुढ तय ज्ञाणी
सारिनिय क्युत क्या ओस सानी
मोधुर क्या तसुन्द गुफतार व्यसिये ॥ सू

वुछुनय न तम्य पुरुष तय त्रिय
आसिय न तमिस मन सिय दुय
कोसुन सारिनय अन्धकार व्यसिये ॥ सू

ज़न ओसुय फोलवुन पोशे बाग
क्षन क्षन मनसिय छुम वुज़ान राग
बुल बुलस रोस खरि गुलज़ार व्यसिये ॥ सू

चमनन मंज़ ओसुय सु गुलाब
ज़न छस वुज़ान अन्दरी खाब
खाब मंज़ गयि हुशियार व्यसिये ॥ सु

आसितन फोलवुन पोशे बाग
गुलालन छुय दिल सय दाग
वुछ कुस सोन नज़र व्यसिये ॥ सु

फोल वुन बागा ओस शूभान
वुछन वाल्यन मन लू भान
ज़न छु गोंड़मुत तथ नार ब्यसिये ॥

गूब्यन्द कोला ओस नामी
सारिनय भक्तन हुन्द स्वामी
दतात्री मुनीश्वर अवतर व्यसिये ॥ सु

पम्पोश मोख क्या ओस शूभान
होश रसित्यन होश ओस दिवान
तस ओस मेहर बान दयाल व्यसिये ॥

पालिख पूरहस वँयकन्ठय
मालिख थोवहय ओसुस जय
सन्थन हुन्द हय सर कार व्यसिये ।। सु

वीदस व्यसतार द्यु तनय तम्य
ब्योन ब्योन हविथ द्यु तनय तम्य
नन्य पठय गीतायि हुन्द सार ब्यसिये ।। सु

सत सुयि सूत्य तस असिय प्रय
सात सात करवुम ओसुय लय
द्यु तनय हविथ ऊँ कार ब्यसिये ।। सु

गुन वखनान रात तय द्यन बो
मन किञ्न सात सात सोरान बो
भद्रि हुन्द हय गुफ्तार व्यसिये ।।
सु छु सोनुय सतगुरु द्वार ब्यसिये ।।



म्य ज्यूगि

म्य ज्यूगि द्यु त ज्यूगि पावरय
दोह् राथ वुछमय खावरय ।।

पछ करत म्यनिस वन नसय
क्या जान ज्यीव प्यठ अननसय
बूजिथ करेम कुस बावरय ।। दों

ज़र ज़र ज़र सुन हालि म्य
ओला वुछुम प्यठ तालि म्य
दम दिथ हम सन छिम परय ॥ दो

दम दिथ खच सय भ्रोर कुनुय
सूहसत हमस कोर कुनुय
यारन म्य करनम यावरय ॥ दों

वयाह अन्दर क्या न्यबरय
डीशिथ ब छस बे खबरय
छुम रछरुन मां रावरय ॥ दों

छु शयि रजिथ यियि कोत
म्य सूत्य पानस नियि कोत
दऽज़ रज़ त न्येरेस मां वरय ॥ दों

गो छयन सोरुय म्य योरकुय
गब कन म्य आलव तोरकुय
खस पावरय वोञ आवरय ॥ दों

जाया म्य वुछ मय क्या ज़बर
नय शुमशानय नय कबर
शाहन छि शाही टावरय ॥ दो

कोंह सर करिथ छिय बोन कुनुन
कोंह फेरवन्य छिय चोन कुनुय
कोंचन गऽमच छय कावरय ॥ दो

कँचन छि आकाशस मुदय
तिमनय छु प्रेकाशिय बोदय
रठ मूर्खस निशि माहबरय ॥ दों

यियि मूर्खस निशि दय लये
च्येयि लाल कुय लोला मोये
दय ज़ागि सूत्यी ज़ावरय ॥ दों

चव भागिवनब सुय मोये
क्याह चीज़ छुय हातम तये
सुय ज़र सुर ज़र ज़ेवरय ॥ दों

लोलन गंडय अनवार म्य
गूव्यन्द नावय सार भ्य
वावस म्य कर नम वावरय ॥ दो



ब सोज़

ब सोज़ वनय शबान
जानान बोज़ुम कनय ॥

आश्चर वुछुम इलाह
न समान न सिला
दोगनि गरि मय दसवान=दुर्दानह

दरिथ रोज़ुम दस्तय
लागय अस्तय अस्तय
खावर चुछमय खोबान=ताबान

लालन करिमय मालय
नालय रोटमख नालय
यक्स वुछुम यक्सान=रवान

मस च्यथ आयम मस्ती
हऽवम म्य हम हस्ती
पेचस अन्दर पेचान=मस्तान

द्वोन यलि सपुद म्युलुय
त्रशिवन्य करम बुलुय
शाहन अन्दर शाहान ॥ हमशान

पीरन धुतनम हऽविथ
वीरस सीरा वऽविथ
द्वय त्राव रोट मस दामान ॥ दवान

बूज़िथ करतम यऽरी
खऽली वुछुन नऽरी
पऽविथ धुतुनम निशान ॥ कमान

वैराग शास्त्र गरिथ
लोलकि अलमास वरिथ
न रुद तीरय न कमान ॥ निशान

सोरुय होरुय मोरूय
ह्यरि तिखचस ह्योरूय
वज़ान वुछुम ग्रजान ॥ खजान

म्यचे न दरियावय
वावस अन्दर वावय
नोवुय वुछुम नवान ॥ चवान

ब्यन्दय त रूदि नादय
न साद ताये सादय
न सत सतूर शमान ॥ ब्यमान

गोरन सूत्यो मायय
नीरिथ छि न्यबानय
वुछुम पननुय पानय ॥ भगवान

गूब्यन्द चय भागिवानय
वुछुमय नव न्यदानय
आना करिथ फानय ॥ द्यु नदान



ओम सोरुप ओम

ओम सोरूप ओम सारो
ओम कारो ब्यचारो ॥

चारो करुच लुकचारो
चार चारि अथ केह् भजन
समसार भ्रम दोह् तारो ॥ ओम
व्यचार करत वारो
तारो लगी च्य
ध्यारो रोस्त येमि समासारो ॥ ओम
छुस अन्नत अपारो
धारो धारनायि ध्यान
स्वप्न दृष्टा वथ सारौ ॥ ओमकारो
सूहम सू सेतारो
वारो लोल अथ वाय
प्राण अपानच तारो ॥ ओमकारो
न्यति ज्ञान सुख आधारो
छुस दम २ यी ग्यवान
वज्ञान रव सर्वाकारो ॥ ओमकारो
आदि दीव विघ्न ह्रतारो
बारम्बारो कर
गुरन तिमन नमस्कारो ॥ ओमकारो
कुस मृकुल गिरफतारो
कल्पयथ बन्द मूख्य छय
न्यत मुक्त हो च यारो ॥ ओमकारो
ख्यथ च्यथ न्यर आहारो
गंगनवत अलीप पूर्ण
बोज साक्षी न्याराकारो ॥ ओमकारो

शम प्रावख मन मारो
हम गलि ओम स्वरन सत्य
ताफ शोहलि फेरि शहजारो ।। ओमकारो

च्यतस सत्य ओमकारो
लय करू रात्र द्यन
जिन्द मर बन परम्पारो ।। ओमकारो

दीश काल रोस्त व्यस्तरो
ह्योकि म्योनुय कुस करिथ
रोस्त बे पुनि पाप आज़ारो ।। ओमकारो

तोर असि न तार दिपि तारो
ओमकारो 'गूव्यन्दस'
स्वर ति दोद्मुत छु लोल नारो ।।



सत व्यचार भमन

सत व्यचार भमन फासि सूत्य मारान भ्रमच्चर
सूर गछान ज्ञान नार सतो वासनाये ।।

कर क्याह सतगुरु यावुन म्ये सूर
केह बन्यम न रोस्त चानि दयाये
केह कोरम न अथ मंज स्यठा म्य फयूर ।।

पंज़र केर्यतन पानस तिमेल्यतन सूर
वृथ दर्य २ न्यथ ख्यतन ति लाये
पोज़ वनुनय मुर्खन निशि म्येवूर ॥ सूरा

श्वासन ज़ान थव वासन करू दूर
आसन दार तिय केह् न परवाये
मन मार कर व्यचार छुय स्यठा यिकूर ॥ सूरा
आन्द अमृर्यथ चोवमो म्य भरपूर
लगयो लगयो सतगुरो चानि कृपाये
होसिल बन्योव अब्दी म्ये सूरूर ॥ सूरा

व्यषय मुछ वुछ म आसन त्यय स्वर्ग हूर
स्वर्ग दच अछ रछ रोज़न त्यय दाये
बे परवाये बन दिहि् अघ्यासलेर लूर ॥ सूरा
हम कुय हम तुल सूकुय वाय खूर
यम्य वाय तसुंज़ नाव आवलनि द्राये
संसार सागरस कोर तमी अबूर ॥ सूरा

दुई चख हसद यिमय छि मनुष्यस कसूर
लागान छिस यिन गछनचि क्राये
प्राव पुख कर व्यचार यियी सबूर ॥ सूरा
दिहि् दृष्टि त्राव समदृष्टिबन चति पूर
मुकली ज्यन मरनुक वुह्य त वाहे्
मन पम्पोशसस सत च्यथ आन्नद बम्बूर ॥

मुकल्योव चुरासी लख चोल म्ये ग्यूर
चख दुय त्राव सुय बो कस नाद लाये
शख चल्य ज़ोन पनुन पान नूरूक नूर ॥ सूरा

छारन क्याह् न्यबर च्यत लोल मस मधूर
दुयी त्राव तुल सुय छय पर्द छाये
वुछख जायि जायि सुय हाज़िर हज़ूरा ॥ सू

अवांग मनस अगूचर सु ज्ञान सद्दर
दफ सुय बोय बर मो केह् वाये
पोज़ वननुय अपज्यार्पन गछि कठूर ॥ सूरा

दिहि अध्योस्य संदि खुत काहनो मोकूर
ज़ाल दिहि अभिमान 'गून्यन्द' ज्ञान क्राय
च्य मंज़ सोरुय गोमुत ज़ोहूर ॥ सूर



लोल छुम शिव चोन

लोल छुम शिव चोन च्य सत च्यथ आनन्दय
चन्द्रम त चन्दुनुय ह्यव शुहुल कर म्य मन ॥

थर छम बर मा करि मूहनो तूर
खाम सय सत गोरो छय स्यठा क्रूर
कासि तूर लोल नार च्यय न्यर्द्वन्दय ॥ चन्द्रम

वन वन सूती ओत कॅंह न बनान
सनान कोन कॅंह च गाल दिहि अभिमान
वञ्ज वञ्ज कन्य पत्यि गोधा पोञ्ज मन्दनय ॥

आत्म व्यचारि नावि वयथ तार तर
पान सान हृर ज़ान सोरुथ चरा चर
न्यर्गुण शेवय पान गछि व्यन्दनुय ॥ चन्द्रम

न्यर्मल व्यग्यान समन्दर सुय
सत गुर सय शरण गछ प्यत स्वर सय
च्यथ बुद्ध मन प्रान तस पज़ि वन्दुनुय ॥

कृपा कर म्य भक्ति वत्सल कैवल
मङ्गल कल्यान र व ही न्यशलल
शीतल न्याय म्योन सोर गछि अन्दुनुय ॥ चन्द्रम

चानि आश वाल वाश बन्द बो कोर सो
च्यदा काश युन गछुन त्रोव तोर सो
स्वप्रकाश लोल छुम च्य आनन्द कन्दनुय ॥ च

स्वता न्यरविकल्प न्यर व्यकारय
सदा अपरोक्ष अक्रय आधारय
ही सदा शेव बोज़ तो गूब्यन्दुनुय ॥ चन्द्रम



मन मंज़ लिस

मन मंज़ लिस मंज़ सच्चिदानन्द लालो वे
गूर गूर करयो गूब्यन्द गूपालो च्येय ॥

कर यियि मूहन रात दोह् यिय ख्यालो म्य
लोल आव स्यठा शाम सोन्दरो यितो सालो वे
यित दित दर्शुन कर कृपा कृपालो म्य ॥ गूर
नित सूती म्य मत करत अवड़ालो म्य
राधा कृष्णय नल्य छन्य पोशि मालो च्यय
दीना नाथो करु दया दयालो म्य ॥ गूर

भख्ती मुक्ती दियि ज़ुव वया गालो च्यय
तोता करान च्यान्यन भक्तियन कालो वे
लोल मस चोवथस कोर थस मोत वालो च्ये ॥ गूर
मस गोस कसु वन चव माला मालो वे
स्यद तफ गोमय अथि मठ ज़प मालो म्य
मन यर्पायि गोमय तर्पायि चय नल्यि नालो म्ये ॥

आमुत बु ह्यन छुस मोकल व तुह् ज़ालो म्य
तार दिम कौशिव भव सर कर बालो म्य
मन ह्यथ योरय छल करान बाल ह्यलो म्य ॥ गूर
नचनावान छुम आकाश पातलो म्य
व्यचार वैराग चक्र अमिस गालो म्य
नतनो बनि कैंह् खसन प्यठ जहालो म्य ॥ गूर

शर मन्द अति वीद कारनन ति ज़ालो छय
शर मन्द ग्यवान बान वयाह् अद ज़ालो म्य
अजर अमर ज्ञान र व अकालो च्य ॥ गूर
छिय वीद ग्यवान अखन्ड़ बे मिसालो च्य
आंवांग मनस अगूचर ला ज़वालो च्य
परि पूर्ण छुखन मंज़ दीश कालो वे ॥ गूर

आधार न्यर्विकार सारि कुय रखि पालो च्य
वन्दयो दोन पादन बो कपालो च्य
सरस्वती राधि कायि चोन द्युत लोल प्यालो म्य ॥
वन तस गूब्यन्दस यियि शुद्ध बोद्ध व्यशालो वे ॥



जय जय कार

जय जय कार तिमन सन्त पुरुष
यिम बन्येयि सम दृष्ट ॥

सूहम त्रावि जपि छोन सू
सास बद्य मंत्र जादू
पोरन न तस कर्यतन ति यष्ट ॥ यिम

यन्द्रय करान छिय कार
पनुन २ च म हार
स्वधर्म प्राव बनम भ्रष्ट ॥ यिम

सत च्यत आनन्द स्वभाव
न्यर्विकार चोनुय द्राव
सम च्य मंज़ येष्ट अनिष्ट ॥ यिम

मऽरी प्रावो सहज़ भाव
कैवल कैवली भाव आव
आवागव नुक चोल कष्ट ॥ यिम

दयि कूप तस युस स्वरि न पान
ब्यथि गुरन हुन्द जुवो जान
पापन हुन्द छुस अर्यष्ट ॥ यिम

सत व्यचार बारम्बार
कर तो पूर दयो ओत सार
ज्ञान बनि अज्ञान गछि नष्ट ॥ यिम

कर क्षन २ ब्रह्म अभ्यास
दीश काल व्यव चोन स्यवास
ख्यथि ख्यथि ओत करम दीह पुष्ट ॥ यिम

गूव्यन्द ज़ान सोर हतो
सम तायि अमृत च्यतो
गूव्यन्द रुद सदा सन्तुष्ट ॥ यिम



आत्म ध्यान दार

आत्म ध्यान दार दारनाये
वासनाये चठ तो ॥

सत गोर छुम चोन साये
सखिय मूहनि लठ तो
कम पुरुष ड़ल्य गयि जाये ॥ वास

खोच ज़ुव मुह मायाये
कंम क्रध लूभ चठ तो
वीरव ति पोर व्राहि व्राहे ॥ वास
दीश दीश फीऽर व्रशिनाये
बऽड वीर च पथ हठ तो
ज्यन मर नच लगिन क्राये ॥ वास
ल्यूख यियि कर्म लीखाये
तथ ज़ाह गछि न गठ तो
व्राव वस २ वुह्य वाये ॥ वास
खोदी हुन्द पर्द छाये
थोद तुल जठ पठ तो
दय वछख अद जायि जाये ॥ वास
समादी व्यथान आये
सन्यव कोरुय न हठ तो
छोड़ युत सु असी द्राये ॥ वास
सूहम बे परवाये
सार्य संङ्कल्प चठ तो
पोज़ वननस बरम वाये ॥ वास
सम अमृत पजि़ माये
च्य करिथ ग्रठ ग्रठ तो
अद छुय नमू नमाये ॥ वास
कल्य काल काल कायाये
नियि व्राव याव यठ तो
अष्ट स्यज़ त्यय बनन दाये ॥ वास

यूग्यन्दर अन्दर चाये
प्यठ गछिथ छ्य शिनि छट तो
चायि बे वायि गुफाये ॥ वास

वोंत कांह् गुर कृपाये
नत वीरन ति नठ तो
शेव खोश ङोम पूज़ाये ॥ वास

गूव्यन्द यमि वुपाये
मुकली दिञ्ञ लठ लठ तो
पान ह्यथ शेव कुलि शाये ॥ वास



यियि तनय सोन

यियि तनय सोन ज़र ज़रो
अम्ररीश्वरो हरो हो ॥

विज्ञान गण श्री शिव शङ्करो
कांसि प्रेयम यम थरो हो
चोनुय म्य गङ्गा जटा दरी ॥ अमरी

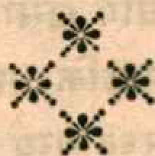
अद्वयत अमृत चाव अमरो
अथि च्यय अभय त वरो हो
अमर बनाव वर अज़रो ॥ अमरी

स्वयं प्रकाश च्यन मातरो
अवांग मनस अगूचरो हो
अस्ति बांति प्रयि रूप च्य ज़र ज़रो ॥ अमरी
सूरुम लोकचार वुञ्ज क्या करो
गोमो यावुन भरो हो
कृपा कर तम श्री सत गुरो ॥ अमरी

ज्ञान चरन कमल चाञ्ज न्यथ स्वरो
वसान लोल ओश जरो हो
सोज़ आम रोज़ बोज़ तम आरचरो ॥ अमरी
अन्दरी पानस छुम यी शरो
करो जि़न्दय मरो हो
कड़ तम शर म्य ही आश्चरो ॥ अमरी

वर कर शक्ती पात नज़रो
अनज़ान छुस दर बदरो हो
दया करतम दया सागरो ॥ अमरी
गम सार्य कास्तम दिगम्बरो
आमुत छुस ज़गत अरो हो
म्य रछ रछ बनि परमीश्वरो ॥ अमरी

गूव्यन्द पान स्वर व्राव अरसरो
चठ वासनाये परो हो
अद फेरखना गर पत गरो ॥ अमरी



भगवानो गयि च्यानि

भगवानो गयि च्यानि म्य ज़ान
हान चीजमो म्य सऽरय ॥

सोर दय ज़ोन तम्य पान सान
ममुता यम्य मऽरय
त्रशवय ताफ तस शेह् लान ॥ हान

वीद यति पंथन लगान
कांह् पनुन तति न गरय
प्यव ह्रतस यूग गन्यान ॥ हान

शिनिह्य सोवायि शूभान
तति शुद्ध बुद्ध ति चारय
तिर्फालि नादान बनन छु व्यदवान ॥ हान

सलिख मलिख सपदान
पलिख त चाक वऽरय
दीवता ह्यथ छिस डोलान ॥ हान

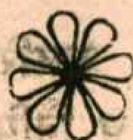
अष्ट स्यज़ पत पत लारान
चोन लोल तस धारय
स्योद प्रोद ज़ाह् छु ख न बुछान ॥

जीवन मुक्ती बगि खसान
सम दृष्टि सड़कि सारय
करान प्रारब्द गुर्य्य दोरवान ॥ हान

हर मुख शेवय छि ज़ानान
कंसि सूत्य थवन न वारय
तिमनय छिय वनान मस्तान ।। हान

पान वारे यिम प्रज़नावान
दय़ तिमन पाप बारय
तिमय सदा सन्तुष्ट रोज़ान ।। हान

गूव्यन्द द्राय च्यति अरमान
तर नस कांह् न तारय
न्यस्त्रय गोनी शिव चोन पान ।। हान



दिह् दोह् आवुय

दिह् दोह् आवुय सोरनय
क्या वुनिति छुखना मोरनय ।।

सूरुय लोवचार ज़र ज़रय
गोयना ह्तो यावुन बरय
कुन बुछत पनन्यन ज़ोरनय ।।

कसरे न ज़ाह् करुथ यलाज
पानस च्य नाह्कय खोरुथ रिवाज
पज़ि जायि कति छुय फोरनय ।। व.

क्या गोय च्य नोव २ बदं करन
प्रोन कोरनुत छुखन स्वरन
पत्य मुय वुनि छुखन होरनय ॥ व.

त्रावुन प्यायि दम कपठ
आशि पाशि वासनाय चठ
बोज़ मो वनुन सोन वोरनय ॥

चिकचाव कथ प्यठ सऽ बरून
कऽल्य काल अखर छुय मरुन
स्वर पान पनुनय फोरनय ॥ व.

संसार हो ज़लरिज़ाल
वोन मो च यियि काल
पानय ज़लरि पान मोरनय ॥ व.

यमि नो स्वर योत यिथ यि पान
सुय जन्म २ छुय नचान
खर बन्य २ बोर सोरनय ॥

संसार सोकल हय स्वप्ना
सुख पाया जिसने जाना
न्यथ अन्यथ तम्य व्यचोरनय ॥ व.

न्यबरी ओतय वनम वाज़
दुय चख हसद मल नाग पाज़
पोज़ यम्य पान वटि खोरनय ॥ व.

बाल पान पानय गोय सरय
भवसरय च्यय ज़र ज़रय
गोविन्दन पान तोरनय ।। ब.



यीच ह्यकख तीच

यीच ह्यकख तीच शोद्धी
करत बुद्धी हा ज़ुवो ।।

ग्रज़न छम लोल नदी
वज़न ओमा ज़ुवो
न माह् च्यय गयि स्यदी ।। कर

कॅंह् नो बनि वद्धि वदी
काल टाठ काया ज़ुवो
चल्य ह्यथ ति लरि लथ लदी ।। कर

संकल्प कर्यज़ि रघी
वुछ तमाशा ज़ुवो
चोन सरूरे स मद्यी ।। कर

छाड़ान यस छ्यन्य पद्यी
ह्युय चय अमा ज़ुवो
चमान वनि यिञ कदी ।।

दय दिथि तार छ्य स्यदी
द्यव यियस, दया ज़ुवो
भ्रमन कर्य कम गदी ॥ कर

आत्म ज्ञानी छि थदी
तिम नऽय नमा ज़ुवो
कांसि हंज़ न तिमन बदी ॥ कर

शोदी बनि जल खोदी
त्राव तो गोय क्या ज़ुवो
प्रावुन सरुरि अदबु़ी ॥ कर

गूल्यन्द वीदच यि व्यदी
सुय चोन आत्मां ज़ुवो
लोल नारय अस्थ हा ददी॥



लोल नार हुयव

लोल नार ह्यु़व तेज़ न कांह् नार
तमि सूत्य जिगर बुज़ुम
यार प्योम बे आर व्यसिये
वार नय वन नस छुम ॥

पान स्नान शिव सोर ज़ोनुम
आनन्द अमृत चोम
प्रथ वखतय सूहम सू
बोलान छिम रुम रुम
मज़ रुत क्याह् दज़ दज़स
बाकय कांह् रुज़म न कोम ।। यार

मुकल्योस भ्रम निशे
तति थय यामत कनन गोम
युस म्य छज्याव सुय बोय
वीदुक भजन यि डुम डुम
ज़ोन पूर्ण पान पननुय
युन गछुन मोक ल्योम ।। यार

सुय बुय छुस आवाहन
नारायनस करियोम
ज्ञान अंगनस मंज दिहि
अभिमान ग्यव हुमुम
श्रेह चे रेहह हन हन मन
ज़न मुबक कोफूर दोज़ुम ।।

शोर बन्दर चायि अन्दर
रुत मन्दर ड़ेष्योम
शुकल सोन्दर शेव नाथय
ज़ाल रोट परान ओम
व्यगन्यान भास्कर सु शंकर
अज्ञान शीन गाज्योम ।। यार

ओम गूव्यन्द गूव्यन्द ओम
हम गोल त ताफ शेह् ल्योम
च त बू तय हु त यो तय
गव सोर जगत गुम
श्रोक्ता वत्ता सु पानय
कस वन क्याह् बन्योम ॥ यार



कह्यताम २ मनि

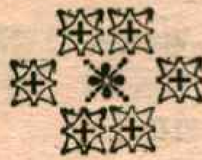
कह्यताम २ मनि दुय चजिम
फोजिम व्यचार बागस ही ॥

प्राण चि कुकिल बोलनि लजिम
सूहम सू वुञ्ञ कथ जागस
सू सोन जुव जोन जाह् बुद्ध न ड़जिम ॥ फो

तफ जफ करान हन हन गजिम
च्यथ बोद मन प्राण ब्रो लागस
पुजि तस लायख वोञ्ञ ऋय तजिम ॥ फो

ध्यवीक तश्रीर अभिमान वीर थजिम
ज्ञान नार जाज्य तफ मुह मागस
अज्ञान तर चज समता वजिम ॥ फो

क्या वन वञ्जि वञ्जि ताल ज्यव म्य फोजिम
ग्यवान म्य आत्मा आगस
वीद गूव्यन्दस द्वयत बुद्ध चजिम ॥ फो



ईश्वर गर सोनुय

ईश्वर गर सोनुय यित
दर्शुनवित मोकलव अस्य ॥
अमृत दर्शुन दित नित
चानि खऽतर प्यवान अस्य वस्य २
अछ्य लोस वतन वुछित ॥ दर्शुन
बनि मनि सोख सन मोख यित
दुख मिटि सर्व शक्ति सस्यति
बनव अस्य गछव न छित ॥ दर्शुन
यावुन कलि काल दोदरित
मंगान अस्य न लरि जायि हस्य
श्वसि दर्शुन हाव कुञ्जि हीत ॥ दर्शुन
त्राव वस वस ह्म त यित
युस चोन जुव वञ्ञा वन तस्य
गूव्यन्द हा ब्रह्म दित ॥ दर्शुन



समतायि अमृत च्यथ

समतायि अमृत च्यथ जिन्द मर्यज़े
श्रेह सान सोर्यज़े सूहम सू ॥

पननिस स्वधर्मस प्यठ धर्यज़े
परधर्म त्राव नरुक छुय
थोद वोथ ज्ञान न्यथर मुचरज़े ॥ श्रेह

वैराग विवीक वीर ह्यथ चर्यज़े
सत संग सनतूष सम काबू
चलन यंदर्यये चूरन फरिज़े ॥ श्रेह

करनस न करनस वुछना कर्यज़े
और कुछना कर्यज़े प्यारो तू
गन्यान सोथ वनि भवसर तर्यज़े ॥ श्रेह

वीद ति छिय वनान केंह न व्यसर्यज़े
कर पान सर च्य सुय हूँ ब हूँ
पान पाव च्यतस ज़ाह न मशिरज़े ॥ श्रेह

पान सान सोर शिव मनि यी मर्यज़े
छुय वनान च्य सतगुर परम प्रभू
परमात्म ध्यान क्षन क्षन दर्यज़े ॥ श्रेह

सत च्यथ आनन्द आत्मा ज़ंयज़े
साक्षी दृष्टा न्यति शुद्ध शम्बू
जव पनुन सुय ज़ान दिहि अध्यास खर्यज़े ॥

ओम तथसत न्यथ प्रभात पर्यज्ञे
गूव्यन्द सोरिज्ञे गूव्यन्द गू
मद रसित्यन सूत्य द्यनत रात बर्यज्ञे ॥ श्रेह



हे निरञ्जन दीजे दर्शन

हे निरञ्जन दीजे दर्शन, कीजिये कृपा अब मुझे ।
इन्तज़ारी कर रहा हूं, आईए इस शब मुझे ॥
टिक टिको बांधे पड़ा, देखता हूं राह को ।
गश है पड़ी मेरे दिल को ताब नहीं कुछ अब मुझे ॥
क्या कसूर हम ने किया है, दूर रहता हम से क्यों
हो गया भी हो अगर कुछ, माफ कीजे सब मुझे ॥
क्यों दया तुमको न आती, हम को क्या रोना ही है ।
आंसू आंखों से है जारी खुष्क दोनों लब मुझे ॥
क्यों जुदा हम से तू रहता, रहम हम पर तू करो ।
तेरी फुरकत ने जलाया, यह हुवा गज़ब मुझे ॥
दिल की मेरी बेकरारी तब मिटेगी जी ज़रूर ।
शुब दर्शन तू कृपालो देवेंगे जब मुझे ॥
प्रेम के अग्न से सीना हुवा बिरयान है ।
हो गया गूव्यन्द बेताब कर नज़र यारब मुझे ॥



अरे प्यारो करो व्यचार

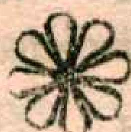
अरे प्यारो करो व्यचार सकल समसार स्वप्ना है।
सिवा ईश्वर के प्यारो, यहां कोई न अपना है ॥
उठो हुशियार हो जावो
सभी गलफत को मिटावो
लगावो ईश से मन को
अगर कँवल की चाहना है ॥
मनुष्य दिह को भी पाकर
सुरे न आपको जो नर
नरक का डर उसी को है
नरक में उस को तपना है ॥
न रहती हश मतो दौवलत
हकूमत और नाहिकमत
तू गफलत क्यों करता है
यह फानी कारखाना है ॥
सब विशयो से मन को मोड़
हिरन की तरह तुम मत दोड़
तृष्णा छोड़ यह दुनिया
सुराबे के समाना है ॥
तुम दो त्रा इससे मत खावो
करो सोच असलियत पावो
जगावो जलद अपने को
गनीमत यह ज़माना है ॥

यह काया जल जायेगी
न माया साथ आयेगी
न माई बाप पुत्र भाई
धर्म एक साथ जाना है ॥

हरि का नाम दिल से जाप
मिटेंगे तुम को तीनों ताप
मिटेंगे पाप तब सारे
अगर सुख तुझ को पाना है ॥

यह दिह जो काल का हैं ग्रास
इस पर रखना क्या विशवास
सभी वसवास का सन्यास
करो अखिर को मरना है ॥

गूव्यन्दा तू हुआ हुशियार
है बालक खेल वत संसार
तेरे दिल ने किया करार
सब संसार पछाना है ॥



हाव दर्शुन अकाल काल

हाव दर्शुन अकाल काल कलिकाल
कालकि काल काल सम हारय ॥

नाल छुस दिवान ग्रज्ञान जन नाल
नाल मति रटहृथ गंगा दारय
नाल थफ दिमहृय वुछ हृथ तय लाल ॥ क
भाव हृय गोस गम यितम कृपाल
ह्यन आमृत बो मंज व्यवहारय
त्रिजगत पाल सोन यित यमि साल साल ॥ क

आमस निशि ड़ोल मुत छुस मोत वाल
दोदमुत छुस चानि लोल नारय
ह्यन २ च्य रोस कोड़ कमि कशाल ॥ क
वृछुना ह्यव नेरि मंज हसा फाल
कर यियि यसुन्द छुम खारय
तिहुन्द दुर्ध्यर तोताञ्‌ किथ चाल ॥

दया अदीनन दीन दयाल
कर वर बोज तम जार पारय
बेकस प्योमुत छुस बो कमि हाल ॥
अनुग्रह यस चोन सू कति सा जाल
मूह ने बन्द गछि समसारय
चव दाम तम्य व्यचार अमृत प्याल । क

ही शंकर आश्चर क्याकर जाल
यम थर कमथ बाल यारय क
वन्दयो पादन च्यान्यन कपाल ॥
चोन ध्यान सन्योव बन्योव मन आल
म्योन लोल च्यानि न्यर विकारय
च्यय वुछान चोपयँ चानि ख्याल ॥ क

प्रारान गूव्यन्द ह्यथ प्रेम पोशिमाल
भक्ति वतसल केवल अपारय
सन्मुख त्रिस दिस डाल रटो नाल ।। काल



रछि वजे लछि

रछि वञो लछि नावे
वछि २ दिञा हो चलिम ।।

सत च्यथ आनन्द अपारय न्यविकारय जय २
न्यर मुक्त केवल सारय अवारय जय जय ।

अज़र अमर दये न्यमये जय जय ।
न्यरद्वदय मृत्यज़ये न्यर मये जय जय ।।

अवांग मनस अगूचरय आश्चरय जय जय ।
अक्रयये च्यन मातरय दिगम्बरय जय जय ।।

वनि हनि २ दय हो यिवो मनि दुय दूरय करिव
सञा वोगनि छारून नो ब्रोठ कनि छु पान सीख

युस ,म्य छांज्याव म्य निशे द्राव आरम आम मनस
छुप न कलाम सुब न शाम तोर अभाव रात द्यनस ।

वद्य २ गित्य हो गयाम पद्य छन्याम छायि
न्यश बोद स्यद त सादय अस्य हा लोल न चनि तयि ।

मार मति मार कोरथस लऽकचार लोल नार दद्य।
भार बुक आय वार सोन बोज़ छ्यन्यायि छाड़ि २ पद्य।
छायि गित्यन ब्रथ्य गछान वुट २ मन छुम करान।
सत गोर च्य ह्यु व नस कांह छुस वुछ नय पशान।
विज्ञान र व ही कोशव द्यव सोनुय आय आर
यव तव भव सरस गव गूव्यन्दय पार ॥



ही सदा शिव सीव

ही सदा शिव सीव चान्य पाद
दद्य म्य अपराद च्य जय जय॥

सत च्यथ आनन्द न्यर्मल अगाध
कैवल च च्यन मययी
सादन हुन्द चय छुख साद॥ दद्य

शिव चोन ज़ुव गाल प्रमाध
वुछ चय सुय सुयी
सम भाव प्रोव यिमव तिमय साद॥ दद्य

पननुय कर स्वरूप याद
कर वासनाये ख्ययी
सत गोर वाक्यन ह्योजि दाध॥ दद्य

न्यमधान सत्य कर्यजि सम्वाद
बर दोह त राथ चलि रवयी
स्वर महा वाक्य छु दयी नाद ॥ दद्य

व्रशना मोमता बड वोपाद
व्राव चय पानय दयी
वासनीय हिश कांह न व्याद ॥ दद्य

ज्ञोन यिमव पान तिमन रुद्य शाद
चोख विज्ञान मयीयो
वृखत या गृहस्त सू साध ॥ दद्य

यिन गछनुक मोकल्योव म्याद
चोल मर मर वह्य वही
असि मंज न अन्त अन्त मद्य आद ॥ दद्य

व्यथानय आयि समाध
गूव्यन्द चति न्यर भयि
स्वर थन शिव कोरनय प्रसाद ॥ दद्य



सर्व शक्तिमान कृपा

सर्व शक्ति मान कृपा निदानो
विज्ञान र व शिव बड़ि भगवानो ॥

वर वोत वाद पाल ज्याद नस पजि
च्य बगँर काह् छुम न लजि वति बोज् पजि्
शरणे आसय छुस बो प्रारानो ।।
शक्ति पात नज़र कर वर अख कटाक्षा
भक्ति वत्सल न्यर्मल कम गछि च्य क्याह्
पूज़ायि लागय दिह् अभिमानो ।। नि

न्यर्गुण सगुण चय दुशवय हो
अस्ति बांति प्रयि रूप हा च्य ब लगयो
भक्तयन मुक्ती बनि च्यानि ध्यानो ।। वि
यस प्यठ दया च्यनि तस नो काह् गम
तस यम करान तोता यस चोन प्रेयम
त्रेशवय दुख चलन बनि कल्यानो ।। वि

चोन छुम प्रेयम स्वयं प्रकाशो
हम गम कास तम च्यदा काशो
चोन क्षन क्षन ध्यान छस धारानो ।। वि
गीत चोन ह्यकि कुस ग्यविथ तीथ च गुणनय
अवांग मनस अगूचर वीद वननय
साद सतज़न ख्यथ गयि अरमानो ।।

चय सृष्टि थ्यत समहारय करान
दोश काल रोस्त ग्यवान च्य वीद तय पोरान
आश्वर च सोन ज़ुव छुख शुभानो ।। वि
च्य नंज़ अनन्त ब्रह्मा बिष्ण रोदर
फोक डूञ्ञा ही यीरान च्य ज्ञान सोदर
सत च्यथ आनन्द छिय वीद ग्यवानो ।। वि

ओमकार स्वरूप अनूप कँवल
आज्ञान दादि बल पूजि व्यचार ब्यल
कर शेव शंकर तन मन प्राणो ॥ वि

आव जाव भ्रम संसार सोर मशराव
भक्ति गूव्यन्द ज्ञान यूग अथि आव
आप सहित सर्व को शिव जानो ॥ वि



दयो च्योन दर्शुन म्य

दयो च्योन दर्शुन म्य गोछ
योछ अज़ ताग्न वुग्न हावतम ॥

समसारस ओनथस गोछ
समतायि अमृत चाव तम
पननि तरफ य़ुत तन मन ति कोछ ॥

वासनायि म्यानि कड़ ड़म्बि लोछ
अत गत निश मोकलाव तम
दज़ि लाग तस ज्ञान नार क्रोछ ॥ योछ

ज़ल कुनय तरंग तय पोछ
तरंग नाव नहाव नावतम
च्य चय सोख्य असि योछ ॥ योछ

वीद काम दोन बनाव म्य वोठ
विज्ञान द्वोद व्यठ रावतम
अधोन गूव्यन्द स्यठा ओछ ॥ योछ



लोल नार म्य

लोल नार म्य सीन ज़ोलुथ
कोन पोलूथ वाद ताय ॥

जान छुन गछुन यि गोलुथ
वाद कम पज़ि न ज्याद ताय
क्या बन्योख युत दोर चोलुथ ॥ को०

मरव हो नख न बोलुथ
वाद अस्य स्यद साद ताय
यिन ड़ालख किन ड़ोलुथ ॥ कोन

छुय यि गूव्यन्द कोन पोलुथ
बे कस उफ ताद ताय
रछथतन क्याज़ि चोलुथ ॥



दय सोरुय रफ़ ताय

दय सोरुय रफ ताय नाव नहावनाव
प्राव सहज् भाव भाव बड़राव ।।

पायस प्यत होशस आजाव जाव
मोक लाव ज्योन मरुन मर २ त्राव
हाव भाव रूप नाव नाव सय अभाव भाव ।।

सन्तूषुक तोन्दरय च तपाव पाव
पान याद थाव ज्ञान चोट पाक नाव
आव जाव ची बोछि चलि मथ दिखाव खाव ।।

अपज्युक छुन त्रविथ चक चाव चाव
चाव मनि वोछ वीदच गाव बनाव
विज्ञान द्रोद सूत्य मस बन नाव नाव ।। प्रा०

सुधर्मस प्यठ मर भ्रम सिटाव टाव
तुल्यतन ति मुर्ख मुर्खन यि स्वभाव
व्यचार कुलि मुर्खन हुन्द स्वभाव भाव ।। प्रा०

शम दम वैराग मन शोमराव राव
त मत पान हतस मोकलाव
प्यत स्वरस छुय न अख हवाव दाव ।। प्रा०

द्राद शान्त मन्ड़लस ग्रुस वाचाव चाव
वथ शीरथ ह्यरि बोन नचाव
खोत रटिथ सु हवाव हवाव वाव ।। प्रा०

व्यचार देगि विज्ञान अन पकाव काव
लूबक टाव टाव करि न तस ख्याव
रुत द्राव वार अन्न अथ वुछ छाव छाव ॥ प्रा०
ज्ञान ज़ल सूत्य वार तन मन नाव नाव
न्यर्मलस मंज़ चाञ्‌ पान म मशराव
गूब्यन्दम मन मंज़ शान्ति त लाव लाव ॥ प्रा०



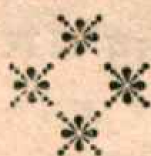
शिव ज़ुव ज़ान पनुन

शिव ज़ुव ज़ान पनुन कर च्यथ ईकागरत
ब्ययि केंह मत करत जिंद मरत दित समाध ॥
असति बांति प्रयि रफ पान चोन सर बसरत
आश्चरत च्यन मातरे त न्यर्मल अगाध
वांग मनस गूचर अवांग मनस गूचरत ॥ ब्ययि
ज़ान पान ह्यथ सथ च्य शिव जरह ज़रत
करत दूर मनि दुय हसद गाल प्रमाध
विज्ञान सागर च अमर त अज़रत ॥
कोरुमत क्रोवनुत सोर मुत च मशरत
मुचरत ज्ञान न्यथर करत पान याद
करनस न करनस वुछना ओत करत ।
सूत्य संतन न्यम द्यन २ रात भरत
भरत लोल १ त्य मन सीव तिहन्द पाद
अमर पान हावनय चलो यम थरत ॥

वुछ व्यचार सुय वुय गोख कथ दरबदरत
अन्दर त न्यबर त छारान दिवान नाद
कस चय मति कति यियि अथि पान स्वरत ॥

दम दम ह्यथ न्यथ ओम ओम परत
मरत मनि ओम चलि ज्यन मरनची व्याध
मरत ज़िन्द त्यलि छु पोज़ त्राव वनुन चरत ॥

कुस ज़ानि तस गूव्यन्द छु पोज़ परत
न्यर्विकार सारि कुय योह्य छु बुनियाद
गूव्यन्द अति वीद सन्त ख्यथ गयि शरत ॥



तार छन भव दियि

तार छन भव दियि तार
व्यचार तो ओमकार ज़ुवो ॥

सोमि कथ कर सौम व्यवहार
सोम शोंग सोम हुशियार ज़ुवो
रोज़ सोम करिज़ि आहार ॥ व्यचार

ओम कारय व्यचार छुय सार
प्रथ सात बारम्बार ज़ुवो
शम यियि करि पारम्पार ॥ व्य०

वासना त्राव आसन दार
श्वासन ह्रस वाल खार ज़ुवो
सूहम सू सूत्य वुशचार ॥ व्य

ईकान्त त शान्त बन मन मार
करख साक्षात कार ज़ुवो
ज्यन मरन निशि बनी मोकजार ॥ व्यचा

सत गोर कृपा अच्च बकार
अनि गट कासि यख बार ज़ुवो
यियि गाश छटि पक नस वार ॥ व्य

ब्रू मधि मंज़ वतिथ प्रार
अद द्वाद शान्तस लार ज़ुवो
ब्रूमधि मंज़ खस कर करार ॥ व्यचा

ज़िन्द मरत छुय नमस्कार
च्यत सम अमृत दार ज़ुवो
त्रशिना फुटी फेरि शेहजार ॥ व्यच

रुत वया प्रेयनुक सबजार
गूल्यन्द कर नज़ार ज़ुवो
शेत्रय चोपे'र कति समसार ॥ व्यच



गफ़लत से उठ ज्ञान

गफ़लत से उठ ज्ञान दीप को जलाव
पुशराव दयस पानय ज़ुवो ॥

मन से सब संकल्प हटाव
ज़िन्द मर कर दय ज़ानय ज़ुवो
कोरमुत क्रोवमुत स्वरमुत मशराव ॥ पुश०

आहिस्ता त्रिकूटी पर चड़ाव
प्राण सूहम सू रानय ज़ुवो
रटिथ दिस माल प्रमादय त्राव ॥ पुश०

मन जीथ मन पर आज्ञा चलाव
वासनायि गाल छन ज़ानय ज़ुवो
वासनायि पक्षोयन हंज़ पख फुटराव ॥

सच्चिदानन्द है जिसका स्वभाव
दुयी त्राव सूय भगवानय ज़ुवो
चय छुख व्यचार कर पान याद पाव ॥

जीना मरना भ्रम है आव जाव
धारनायि धार आत्म ध्यानय ज़ुवो
तरख च मरि प्राव सर्व आत्म भाव ॥ पुश०

याद कर स्वरूप भ्रम को मिटा
सब का आधिष्टानय ज़ुवो
हाव भाव द्राव केवल रूप तय नाव ॥ पुश०

सतगोर चरणो में मन लगाव
वन्द तस तन मन प्राणय ज़ुवो
गूव्यन्द त्यलि छुय नो चय कांह् वाव ॥ पुश०



पत च्य मारान

पत च्य मारान गत च्य पाम्पूर
सूर गोम पानस वलो वलो ॥

यित दित दर्शुन ओस तो दस्तूर
यिख न चठ जाम सूर मलो मलो
वोठ लायि मार पान कर कुञ्ज छार क्रूर ॥ सूर

मार मटि खसी चार कर ज़रूर
आर यियि नय भक्ति वत्सलो सलो
शक्ति पान नज़र कर च ज्ञान सदूर ॥ सूर

चामर दुप दीप आलवय कोफूर
गोड दिमय अशि के ज़लो ज़लो
जटि गङ्गा हटि वालिथ विहूर ॥ सूर

विज्ञान भास्कर शंकर त्राव नूर
वटन आमुत पम्पोश फलो फलो
हाव मऽख दःख कास अज्ञान अवूर ॥ सूर

चानि लोल दऽख वोथ मत रोज़तम दूर
हाव तम दर्शुन बलो बलो
भर गव यावुन लोऽचार वुञ्च सूर ॥ सूर

कल्यान र वु शेव कर तम मंज़ूर
शीनकि पाठय विगलो गलो
चानि ध्यान सूत्य प्राव अब्दी सरूर ॥ सू

मारि युस मनस तस्य दपान बोहदूर
मारि ते तिमन गलो गलो
मारुन सू क्याह ोज़य स्यठाह कूर ॥ सूर

गूव्यन्द कुलिस च्यत प्रयमुक व्यूर
प्रारान भवसर ड़लो ड़लो
यित सुवह शाम म्य बनिथ पम्पूर ॥ सूर



विज्ञानुक सुमन्दर सु

विज्ञानुक सुमन्दर सु शङ्कर हा टाठे
आश्चर अजर अमर परम इश्वर हाटाठे ॥

श्री मज्य सरस्वतो शरमन्द रुज़ अती
करान अस्तुती वीदन ति हा हा हा टाठे ॥

यति वीद तस पुराणय कारन ति हारान
अमि हाल क्या करानय असि हि नर हाटाठे ॥

कत ताकत यिहुन्द गीत ग्यवि यिम छि गुणा तीत
हीथ करिथ वनन सोन पनुन बजर हा टाठे ॥
कर सना म्य यियम शुभ दर्शुन सु दियम
नियम सूत्य पानस नेरियम शर हाटाठे ॥
रेह गंड़नम लशे जाह माय तिहंज़ न मशे
जाम तन सूत्य अशे गयम तर हा टाठे ॥
वनतस म्योन बोज़ि नाद कांछा सुसोज़ि नाद
रोज़िना कन दरिथ बोज़ि अर चर हा टाठे ॥
छुकस कर म्य बुलगार ब्यधि यियम पनुन यार
बल यख दम ब बेमार वैद सतगोर हा टाठे ॥
अशि कनि खून ब हारस प्रछिनय म्य बेमारस
मारस नत पानय ख्यम ज़हर हा टाठे ॥
यू कोता सु बे आर खुश छुसां करुन मार
अशिस म्य लजिम दार गोस न असर हा टाठे ॥
आर कोन छुस यिवान दर्शुन कोन दिवान
रिवान छुस ब अमी करितन नज़र हा टाठे ॥
कोर नस तम्य ब बेताब सुज्य तन खतया जवाब
ओस बोड़ लाभ ती म्य छुस दर बदर हा टाठे ॥
सीनस गयि म्य पारय न्यविकार यारय
दारय अथ स्यठाह तेज़ लोल खंजर हा टाठे ॥
लोल नार सूत्य ज़लिन शीनसय पठय गलिन
वलिन जोयि जोयि म्यूल सागरस हा टाठे ॥
यरि लूक ना ब संगान परि लूक ना निरवानय
भक्ति दान कीवल दियितन वर हा टाठे ॥

मारन कथ वञ्ना छोह् सोरान आयि दोह् दोह्
हारस सपद्यव पोह् ग्यिनि लोग बुजर हा टाठे ॥

माज्य ज़निम सुगणय मोल ज़ोन न्यर्गुणय
अरपनय ब दोश्वुञ्ना छुम आसर हा टाठे ॥

गूव्यन्द कथ च रिवन यिम खस्य कूत्य छि चवन
ग्यवन छुख स्यठाह् मीठ लोल च लहर हा टाठे ॥
विज्ञानकुय समन्दर सु शंकर हा टाठे ॥



शरमन्द वीर ति रुद्य

शर मन्द वीर ति रुद्य मन्ज़ मायाये मज़ मायाये
परान छि व्राहि व्राहे लोलो व्राहे लोलो ॥

काल शाह् सूत्य वज़िरन मारन ग्राये मारन ग्राये
सुय पगाह् गदा गदाये लोलो दाये लोलो
नेरन फरन ड्यूठ वोन ड्यूठ वोन नाये ॥ परान
पाद यस आस मलन हूर तय दाये हूर तय दाये
सुय पगाह् फेरन ताप क्राये लोलो क्राये लोलो
खोर नन वोरुय करान वुह्य वाये करान वुह्यव वाये ॥

क्याह् कम गछी अथ चानि बार गाये चानि बार गाये
ईश्वर गोर थवि साये लोलो साये लोलो
अस्य शरन दोह्य तोहि आये तोही आये ॥ परान

मार कर्य त्रशनायि ब्ययि आशाये ब्ययि आशाये
बडय बडय वोर वासनाये लोलो नाये लोलो
दः ् द्य ुत स्यठा यमि मोमताये यमि ममताये ॥

साद सथ जन खुश सुत्य समताये सत्य समताये
शान्ती ति विद्याये लोलो विद्याये लोलो
पान सान शिव ज़ोनुख जायि जाये ज़ोनुख जायि जाये ॥

बया भरुस अपिज़ि प्यठ यथ कायाये यथ कायाये
कलि काल काल करि जाये लोलो जाये लोलो
ख्ययि कांह् नत होचि दज़ि कुनि शाये दज़ि कुन शाये ॥

ईश्वर गोर कर सोन उपाये सोन वोपाये
सायि त्राव बेपरवाये लोलो बाये लोलो
गूव्यन्द हायि ज़ायि गछम पननि छाये पननि छाये ॥ परान



परम ब्रह्म ईश्वर

परम ब्रह्म ईश्वर नमू नमा
क्षमा कर क्षमा कर क्षमा कर क्षमा ॥

यतम स नितम म्य दितम दर्शुन
दया कर दया कर दया कर दया
अस्य तन मन धन च्य अरपन करव
कृपा कर कृपा कर कृपा कर कृपा ॥

छि प्रारान यि लारान चय ओरय
सदा कर सदा कर सदा कर सदा
छि शरमन्द आनन्द कन्ध च बोज़
वफा कर वुफा कर वुफा कर वुफा ॥

च सन्मुख यि सुख दि द:ख सोनुय
दफा कर दफा कर दफा कर दफा
म्य चोन यूग रुग कासि ती छुम दवा
शफा कर शफा कर शफा कर शफा ॥

अच्यथ च्यथ बनाव तम म्य मन तयबोध
सफा कर सफा कर सफा कर सफा
छु गूव्यन्द रान च नारान वर
यछा कर यछा कर यछा कर यछा ॥



दयस पानय च पुशराव

दयस पानय च पुशराव यि दिह् मशराव देखो
ननी तस युस अन्दर चाव अजब भक्ति भाव देखो ॥

फोलुय होश पोशि कुल च तोशान कोन बुल बुल
ब रोशन छुस न बिलकुल बहार हो आव देखो ॥

म्य हो गरि खाते गरे फली गुल लोल थरे
भरी मंज़ मनि छरे करुम अज़ क्राव देखो ॥

सोंम्बर्य पोश छत्य वोज़ली ब आसय ह्यथ च्य ड़ाली
म्य मोकड़ अज़ च खाली चमो कर ग्राव देखो ।

अजयब लोल सब्ज़ार वुछन सूत्य बलि बेमार
यि बोलान जानावार तम्मना द्राव देखो ॥

अलान छय पोशि लंजे च ब्यह् दिथ लंजि पंजे
वुछान छुस ब प्यठ प्यंजे यिमय पोश छाव देखो ॥

भरी रस मस प्यालय यितम सालय च लालय
ब प्रारान कमि हालय मलालय व्राव देखो ॥

गुव्यन्द यस ओस छारान यस कित्य पोश चारान
च्यतस प्योस ध्यान धारान तस म्योन नाव देखो ॥



म्य मन बोर भक्ति

म्य मन बोर भक्ति भावय, च म्योन विश्वास देखो ।
च्य प्ययिनय पास सोनुय, शरन च्य आस देखो ॥

म्य नो परवाय कँह् गम, अगर गेल्यम ति आलम ।
फकथ चय स्योद म्य वुछ तम, शरन च्य आस देखो ॥

म्य च्य पान पुशरोवुय, यि समसार मशरोवुय
यि मन अमृत चोवुय, चोलुम तलवास देखो ॥

कुस मरि कस मारि हो यम, म्य जोनुय ज्योन मरुन भ्रम
म्य चोन स्यठाह् छु प्रेयम, गल्यम यम त्रास देखो ॥

शरम क्या पजि़ कथे म्य, छारुन खोतुम रथे म्य
छरिथ आख अथे म्य लोबूम जन लास देखो ॥

चव म्ये समरसय, बनी मद होश मसय
यि संसार मोठ तसय, कोरुख अथ वास देखो ॥

अमां कें्ह छुम न व्यचान, ब रोस च्य कें्ह न मुचान
अन्दर अन्दरी बो न चान, कोरुम अभ्यास देखो ॥

तोरुम पानय सोरम ओम, बन्योसय मसत बेगम
वुछुम करान सूहम, श्वास वश्वास देशो ॥

गूव्यन्दस द्राव अरमान अमी च्ये मटि कोर पान
बनेययस च्यानि ज्ञान, आस व्यकास देखो ॥



कसर म्याञ कर

कसर म्याञ कर दफा दीवी
म्य प्यठ कर अज़ कृपा दीवो ॥

ब च्यय पथ कर तन मन धन
अर्पण च्यय न्यूथम मन
तना अथ्य मंज़ नफा दीवी ॥ म्य प्यठ

च्य छुयना कांह् ति वनन म्योन
म्य छुम लोल चोन यित सोन
वनय नोव प्रोन जफ़ा दीवी ॥ म्य प्यठ

म्य बेमारस कर नज़र
म्य समयिकि जोश खोतमुत ज़र
यम्य दादिस कर शफा दीवो ॥ म्य प्यठ

म्य चय कुन रात्र द्यन मन
वुथन बेहन ख्यवन चवन
करुन चोनुय ज़फा दीवो ॥ म्य प्यठ

ज़न चमकन सास बद्य चन्दरम
यि मुख चोन कास बुन हय गम
म्य शम दम कर दया दीवो ॥ म्य प्यठ

च बोज़ म्याञ्ञ नाल रठ नालय
यिमय बाय या नितम सालय
बो मोत वालय हपा दीवो ॥ म्य प्यठ

म्य गूव्यन्दस शुद्ध बुद्ध मन
कर च्यथ शीतल चन्द्रम ज़न
च्य ब्यन कांह नय सफा दीवो ॥



बरिथ प्रय करतो

बरिथ प्रय करतो क्रय
वुछतो गरि चानि दय ॥

वोनुय छरिथ छ्यनख
पतो पान ती ब नख
म्य क्या कोर यि ह्य ह्य ॥ वुछतो
यस छारान सु चययी
फ़कत कास च दुयई
नेरी शर चली भय ॥ वुछतो
सर्व जीव दीव कारणय
यसुन्द ध्यान दारनय
करानन छुय जय जय वुछतो
पुशराव तस कुनिस पान
नेरी अद च्य अरमान
मशराव ज्यन मरनुक भय ॥ वुछतो
त्रावख यलि दिह् अभिमान
बनि त्यलि तसन्ज़ ज्ञान
मनो नाश वास ना ख्यय ॥ वुछतो
कुनुय मान कुनुय ज़ान
कुनुय पान ज़निथ मान
यि वथ स्यज़ पज़ कथ छय ॥ वुछतो
म्या जोनुम पनुन ज़ुव
सु शिव यस दोयुम न कांह् ह्यु व
ज्ञान सोदुर मृत्यंजय ॥ वुछतो
यी वनख यी खनख
ती चय अखर बनख
ति वन बसू न्यरामय ॥ वुछतो

च्यय बो बहानय
सु सोरुय छु पानय
ननी त्यलि ह्यख यलि पय ॥ वुछतो

गूव्यन्द पान पुशरविथ
सोरुय केंह मश रविथ
ग्यवान ह्यथ लोलञ्जा नय
वुछतो घरि चानि दय ॥



बोज़ तम बोज़

बोज तम बोज तम, क्या म्य भगवान गोम
बोज तम म्योन ॥

ठान रोस बान गोम
मायि रोस दान गोम ॥ बोज़ तम०

गंड़ रोस्त ह्योल गोम
पाहिल रोस ख्योल गोम
फल रोस्त ह्योल गोम ॥ बोज़ तम०

मेव रोस्त कुल गोम
मुशक रोस गुल गोम
ठठि रोस्त कदुल गोम ॥ बोज़ तम०

आसन रोस्त लाफ गोम
शेहलि रोस्त ताफ गोम
ववन रोस्त वाक गोम ॥ बोज़ ताम०

तोरि रोस्त छान गोम
चारि रोस्त दान गोम
माल रोस्त वान गोम ॥ बोज०

स्वर रोस्त ग्यवुन गोम
नार रोस्त प्यवुन गोम ॥
सग रोस्त ववुन गोम ॥ बोज़०

गोरि रोस्त गुपुन गोम
नून रोस्त स्युन गोम
बोज़न रोस्त वनुन गोम ॥ बोज़

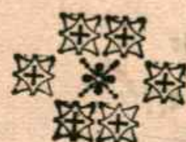
सोन रोस्त सोनुर गोम
लाल रोस्त मोनुर गोम
माजि रोस्त शुर गोम ॥ बोज़०

रंद रोस्त तख्त गोम
श्रव रोस्त मुख्त गोम
दादि रोस्न सख्त गोम ॥ बोज़०

कपर रस्त्य वज़न गयि
राज रोस्त प्रज़ा गयि
धर्म रोस्त लज़ा गयि ॥ बोज़०

द्वोद रोस्त कऽय गयि
लोल रोस्त दर्य गयि
पुरुष रोस्त त्रिय गयि ॥ बोज०

ड़ोनि रोस गुल गयि
पानि रोस कोल गयि
प्यवन रोस चोल गयि ।।
अथ रोस्त नर गयि बोज़
टोंगरि रोस्त पर गयि
पश रोस्त लर गयि ।।
अर्थ रोस्त पाठ गोम बो०
धन रोस्त हाठ गोम
फाल रोस्त प्राठ गोम ।।
छु शर मंज़ मनि बोज़०
गूव्यन्द कस वनि
तस ननि यस बनि ।। बोज़ तम म्योन



जय जय आनन्द गण

जय जय आनन्द गण
विनती सुनो रे भगवान ।।
वैकुन्ठ नाथ आवो
सन्मुख मुख दिखावो
मिटावो दुःख निरञ्जन ।। वि०
आकर साथ लीजे
कृपा हम पै कीजे
दीजे शुभ दर्शन ।। वि०

मेरे दर्द का ईलाज
वैद से न होगा महाराज
मोहताज तेरे हैं मोहन ।।
मनोहर तेरा मुख विο
दर्शन से हटे दुःख
सुख प्राप्त हो उसी क्षण ।।
तुझ से फखत यह दान विο
मांगते है भक्ति ज्ञान
निरवान शुद्ध बुद्ध मन ।।
साधू फकीर सन्यास बिο
उन को तेरी आस
उदास फिरते बन बन ।।
सेवू चरन कमल विο
शीतल तेरे है कोमल
फल पावों जाऊ अर्पन ।।
दर्शन देके प्रसन्न विο
करो हे पर परा नन्द
गुव्यन्द को नारायन ।। विο



शिव शंकर ईश्वर

शिव शंकर ईश्वर गर सोन वोल
भक्ति वत्सल सर्व शक्ति मानो बोज ।।

आकाश पृथ्वी लूक पाताल तल
प्रथ कांह ज़ीव च्य्य छारानो बोज़
पूर्ण ब्रह्म अश्चर सर्ब मंगल ॥ भक्ति

लोल दिम पनुन त्युथ युथ न ज़ाह् वोड़ल
होशकि होश प्राणकि प्राणो बोज़
श्वस वनि रस रस मन न्यूथम छल ॥ भक्ति

प्रारान छिय जल वुल चय मूल तल
तारि गमत्यन च्य तारानो बोज़
शरने आसय अचल अटल ॥ भक्ति

ह्राव तम मुख दुख चलि ही वेमल
विज्ञान रव शिव नारानो बोज़
भवसर चानि दर्शन पम्पोश फोल ॥

पूज़ा करय बोज़ पोरि प्यठ लोल ब्यल
भक्ति भाव पोश छुस छारानो बोज
मनि सर गोऽ दिमय बो अशि केज़ल ॥ भक्ति

यमि पूजायि त्रयि ताप रूग बो वल
आश तोश छुख च जल कुमलानो बोज
त्रफ कर शक्ति पात दात पनने खल ॥ भक्ति

गर आमुत गूव्यन्द छुखो कर्म फल
आनाथ प्रारान भगवानो बोज़
विनती कन दार तार तम कैवल । भक्ति



नादा बु मरिमन्दि

नादा बु म रिमन्दि लायान छसय,
राधा बु गूव्यन्दु प्रारान छसय ॥

यिख नय तु बर गछु दूर्यर स्याने,
ह्यख नय खबरहा मरबु शरच्यानि
जर जर औश हारान छसय ॥

बाल पानप्यठ व्रायस मच बनिथिय,
लूकु लज़ाये पथ यच त्राविथिय,
रात दयन नाव च्योनुय स्वरान छसय ॥

च्यानि लोल, पुछि गीमुतम्ये यच हौल
बाल चन्द्र हाव मोख वाक्य च्यन पौल
लोलु पोश च्यानि वेरि चारान छसय ॥

तन ज़ाज थम म्य लोल नारय
मन चूरि न्यूथ वारवारय
तनु मन धन अर्पन करान छसय ॥

राज़ाना बनावथन बार थस लोल
लोल हच वरथन पोलुथ च्ये कोल
छाल मारान वतऽ छारान छसय ॥

मुर्ली नादा रसूल त्रावुथ
मुह्नी रूप सुन्दर होवुथ
सय रूप मन मंज़ बु धारान छसय ॥

बन्सरी नादु मन म्ये तम्बूलोवुथ
राधा स्वामी चये प्रकटोवुथ
सुय ध्यान धारनायि धारान छसय ॥

दोपथम बुय छुसय मऽज्ञ तय मोल
त्राविथ छ़्नुनु छा च्योन कोल
दिचथमनुन नज़रा यथ हालस छसय ॥

वाद कोरुमुत पनुन पालुन गोछ
दूर्यर च्योन म्ये नो चालुन गोछ
हारान ओश बु चालि चालि छसय ॥

सन्तन सीत लोग मुत च्ये करार
आसान छस बो यति बेकरार
गमऽच्यिर बु उदास बेकस छसय ॥

आसम न खबर ह्यक च यूत दूर
लोलन च्यान्य कोरमुत म्ये थचमूर
बोला वुछ वोन्य कमि हाल छसय ॥

गूव्यन्द कौल छुय नाव च्योनुय
कमलायि छुय ना भाव च्योनुय
क्षण क्षण च्यानिस ख्यालस छसय ॥

बन्सरियुन ओसुयस्यठा लोल
तीम सिन्दु मोख अदु वोयुथ डोल
कमला बु सुय सोज़ बोजान छसय ॥



च्यिय हो ओसुख

चियि हो ओसुख हनि हनि
राधायि कोडुख वञो ॥

रव उदय गोख पूरिलने
प्रव व्ययि तस मञो
तवु प्रज़ल्योख हनि हनि ॥

तस भोवुथ गोडु सोरुय
मुचरिथ थोव थस च्ये तोरुय
योरथस तु छुय धन्य धन्ये ॥

सऽल कोरनय तमि गगनस
मऽल ओनुनेय ज़गतस
कलि काल अथि ज़गि तारनये ॥

प्रज़नोवुन पान पनुनय
अदु होवुन सारिनिय
शहजार फ्यूर च्यानि वन्ये ॥

भवसर तमि कीत्य तारो
असि छये सऽय हितकारी
भक्तन आमच गट कासने ॥

आगुर छुक चि पान्य पानय
सागर सो ननि वानेय
कतरन आमुच म्युल सो करने ॥

राज्ञायि दोर पानय ओवतार
वोत सारिनिय उपकार
असि आमित तस शरने ॥
कमलायि हिन्दु कृपायि सीत
बन्सरियस बनेय जीत
पूज्ञ करान ताहि सु मन्ज़ मञ ॥



कुनुय औसुम

कुनुय औसुम = कुनुय रोज़ुम
कुनुय थोवनस = गौरन बु शब्दस
कुनुय नो कांह = कुन्यर पानस
म्युल म्य गछिय = गोरस त पानस ॥

शाहस खोतुम पम्पोश माये
शाहस ओसुस ज़ूने ग्राये
शाहस आयम गोर सन्ज़ छाये
शाहस वोलनस निशे पानस ॥ म्युल म्य

रच्छी वुछ योम = गोरय सोरय
रच्छी वुछयोम = सोरई मोरय
रच्छी गय्यम रोवुम मोलय
रच्छी थोवथस मंज़य ज्ञानस ॥ म्यूल म्य

नव्यर वुछम = नव्यर न जांह्
नौवय नौवय नौवय न कान्ह्
बुइय छुस नौवय = नव्यस पानस
न्यविस जहानस = न्यव्स मकानस ॥
पोशस दपान गछ रोज़् छाये
पोशय छुस पकान = पोशय ढ़ाल्य
माय छ्यस पोशस = गूव्यन्द नावस
त्राव्यस कथे = थस जानानस ॥
म्युल म्य गछी गोरस त पानस ॥



अस्यि ओस

अस्यि ओस कुसतान्य
अस्यि वुछ क्याह् तान
कोत सना गव सु सोनय प्रकाश ॥
गठि मन्ज़् कड़थई
गाश हव्यथई
अड़ ल्योक त्रविथई चोल सू आकाश ॥ को
गाशा ओसुय = वन पोह्स मन्ज़ई
कोत सना गछव = वोञ्न अस्य दास ॥ को

गूव्यन्द सोन छु प्रजलान
चम्कान छु माहे तांबान
राधा स्वामी आमत ओस
दयाल सुन्दुय बनिथ दास ॥
सैलाब खारयई = वत्य सारय छच्ढथई
सूहम रठि थई = बनिथ गव पाथ परम प्रकाश ॥
दमह दुय्त म = दमह छोड़मय
खारथ वुछ मय = राधाय निशे
सु ज्योति प्रकाश ॥
बद्री त राधायि = खोनि मन्ज़ ब्यहत्य
पोशन वुछई = दिलस मन्ज़
गूव्यन्द गाश ॥



सोन सतगुर गवय

सोन सतगरु गवय परम धामय
परम शिवन सोहय वोर पानय ॥
आमुत ओस अवतार दरिथ
अस्यि पपियन गव पाप हरिथ
दितुनय तम्य असि अमृत धामय ॥
कासाऽन अस्यि जन्मच खऽरी
कर नय तम्य कचा यऽरी
कासऽन अस्यि जन्मच हानय ॥ परम
दतात्री मुन्नीश्वर ओस आमुत
संसार पुछि ओसुय जामुत
मोकलविन शेहर त गामय ॥ परम

सास बदिनय वर तम्य द्यु तुनय
मायायि हुन्द जर तिमन चोटुनय
म्यति पननुय शर ह्य द्रामय ॥ परम

नूरुक नूर ओसुय शूभान
तस ड़ीशिथ मन ओस लूभान
करुन वैयकुन्ठ कुन प्रस्थानय ॥ परम

वति दिवता तय ब्ययि कारन
जायि २ तस अस्यि प्रारान
सूज़ हस पलिक तय व्यमानय ॥ परम

मोक लोवुय तम्यि पनुन पानय
रुज़िस नय जन्मच हानय
त्रिकारन छिस तति प्रारानय ॥ परम

तम्य ह्योतनय यलि तोत सखरुन
रुम रुम बोलान ओसुय ओम
दयाल सन्त ह्यत ब्रोठ तस आसय ॥

इंन्दराज़न रुद कति बोलुन
तसुन्द वाक्य किथ पठ्य पोलुन
बद्री योहय छुय अरमानय ॥ परम



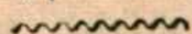
सोन सतगरु ओस

सोत सतगरु ओस भाग्यवानय
विषन भगवानस सूत्य तस ज़ानय ॥

तोरय सुय ओस बोज् वानय
करिहे कुस तस सूतय मानय
ज्ञान सोदरय ओस आसनय ॥ वि
परम पदवी ओसुय प्रविथ
नन्य पठयी द्यु तनय हविथ
बीद व्यस्तोरुय तम्य पानय ॥
रुम २ सू ओसुय ललवान
जाय जाय तस ओसुय मोलवान
शिव त ब्रह्मा तसन्दय प्राणय ॥ वि
राधा स्वामी सुय पानय
तस पुशरिथ पनुनुय पानय
तस सूतिन गव वुफानय ॥ वि०
सालिग्राम ओसुय प्रज्ञलानय
नूर तम्यि सन्दि व्रूर चलानय
यती कोरनय पानस फानय ॥
इथ पाठय कृष्णस सूत्य अर्जुन
तिथ पाठय सुय तंसुन्दुय फरज़न्द
निरञ्जन ओस सोरानय ॥ वि
श्री रामस सूत्य यिथ पठय हल मत छु आसान
भगवानस सूत्य गूब्यन्द कोल बासान
ज़िन्द पानय प्रोवुन न्यर्वानय ॥ वि
बद्री प्रथ विज्ञ ई छु बासान
सतगुरु छुमय खुर कासान
दयाल ह्यथ तति आ सानय ॥ वि

॥ ॥

सन्त कथा



1 कथा भक्ती हन्ज वन्य म्यबूजमच छम
दयस नो कँहति त्युथ ठोठ युथ छु प्रेयम ॥
2 सदा शिव द्राव अकि दोह् गोवरि ह्थ
करिन लग सल्ल वननय ब्रशबसय वयथ ॥
3 पकानय अऽस्य वति प्रेयमय ग्यावानय
तिथुय वागुर तिमन आवुय मियानय ॥
4 सदा शिवन ब्रशबय प्यठ वोठ छिन्य
नेजिर यामय गोवय मैदान तिमन शुन्य ॥
5 करनि ल्वग जायि अथ प्रणाम डन्ढवथ
वुछय गीरी दोपुन क्याह् ताम छय कथ ॥
6 तिथुय छीन गीरिये वोठ कोरुन प्रणाम
प्रिछनिलजि शम्बू हस कम्य सुन्द यिछु यि दाम ॥
7 वनुस फीरिथ शिवन् योरय असानय
नेत्रन दारि औसुक ओश वसानय ॥
8 शम्बू लोग वननि ही गौरी वुनय बोज
अमा मन सावि धानय गोड करिथ रोज् ॥
9 गछिथ यह सास वरिये वोथन सदय
करान आसनय सत संग साधय ॥
10 वनिथ क्याह् हाकि ज्यव सुमरन करिथ मन
सो जायि छृच युथ छुय व्यशन भवन ॥

11 तिहिन्दनय पादनय प्रणाम कोर म्येय
थोवुय करिथ म्य ब्रोंठिय वोनमय च्येये ॥
12 यि बूजिथ गौरिये अयावु असोनुय
होत पोत फीरिथय ब्रशबस रव सोनुय ॥
13 शिवन दोप गौरियै छय्ख बोज नादान
च भक्तन हुन्द महिमा छखन ज़ानान ॥
14 ज़पन छुस नाव यमि सुन्द राथ तय द्यन
सु रामय फेरनय पत पत छु भखत्यन ॥
15 ब वाये वायि अकि दोह् बैयकोन्ट चास
वुछुम खल्ली स्वर्ग भगवान न तति द्रास ॥
16 वनिथ क्याह् हाक वापस यिथ छननिथ प्योस
बछुम पथ कुन म्य वुथ सन्थन निशे ओस ॥
17 छुयी म्योनुय रूप साधय सतजन
म्य छिम टऽठी लगय तिहिन्दन ब चरणान ॥
18 वनय क्याह् भखित मानय म्यऽनि प्राणाय
करन तिम प्रेयम गङ्ग जलय छि श्रानय ॥
19 तिमन न कांह् मल न हृदयस तिम छिर्न्यमल
सरल च्यथ ब्ययिछि उपकऽरी त निशकल ॥
20 छुस असली रूप म्योनुय योत सोरुय
तिमय गयि स्यद यिमव जोनुय व्यचोरुय ॥
21 करन तिम सऽरसय मज़ ओंम ओंमय
परन तिमनय छि रुम रुम ओंम ओंमय ॥
22 स्यठाह् शरमन्द गयि दीवी ति बूजिथ
दुबारह् खऽच सोब्रशबस डन्ढ वथ दिथ ॥

23 खसिथ शम्बू ति द्रायि वऽन्यी कैलास
वनन शम्बू अमिसय दासन द्वन्दय ब दास ।।
26 बनिथ यलि आव सन्थय पान भगवान
बलय राज़स मोन्गुन त्यलि तम्य द्युतुसदान ।।
25 अमा पुश प्योस तोते अर्ध पादय
द्युतनस ज़व पनुन कोरनस न वादय ।।
26 तुलिथ ब्रह्मांण्ड प्यठ अख पाद होवुन
दोयुम खोर तल पाताल वात नोवन ।।
27 युथुय ब्रह्माजीयस मां नज़रि सुय गव
छलन बापत ब्रह्मा जी तुजयदिव ।।
28 सु छलिथ चरनो दकय च्यव गव प्रसन्न तमिस मन
तवे दोपमय लगय बो सन्त चरणन ।।
29 फिरिथ बाकी गडस थोव प्यठ कलसम्ये
छु गंगा नाव कोरु मुत अथ ज़लस म्ये ।।
30 लगन साधन हुन्दि खोर यतिथय बोज़
तिम छिय बडि तीर्थं शख त्राव खोश रोज़ ।।
31 बोथन ब्येहन तिमन छुय म्योन ध्यानय
वुछानय तिम चौपऽरी पान सानय ।।
32 वुछानय छिय चौपऽरी गौरिये म्ये
गछन योत २ त्युहुन्द प्रकरम छु सुय म्ये ।।
33 तिमन छयना समाधो राजि़ रोशन
तवे दोपमय लगय बो सन्त चरनन ।।
34 तिहुन्दुय ख्योन त च्योन गयि म्यानि सीवा
ब्यय केंह करनय सो गयि म्यानि पूज़ा ।।

35 शीन्गुन तिहुन्ददुय छुय डन्ढवथ करुन म्ये
छि कथ तिहन्ज़य करनि गोथय ग्यवञ म्ये ॥
36 निरुदय करन रोस्त छुख चति निरुदय
तिमन छुय द्वर गोमुत काम कूद्याय ॥
37 सऽर्यनछि कर यिमनय नमस्कार
यिमय दिववनि छि यथ सम्सारसय तार ॥
38 छि यिम अटल वऽथो यथ भवसरस मज़
करिथ व्यवहार निर्मल छिय गरस मन्ज़ ॥
39 तिहन्दे दर्शनय पापन बनन नाश
उद्धय गछूनय मंने मंज़ ज्ञान प्रकाश ॥
40 बनन छुय साद संगय सूत्य मुक्ती
बनन अटल श्रदा वाननछि भख्ति ॥
41 यमिस बनि साध दर्शुन तसछि बडिड़ भाग
तमिस करनय सोफल गवतिर्थ प्रयाग ॥
42 तमो कर्यधान तफ तिर्थ सऽरी
तमी कर्य तिर्थनय हन्दि श्रान सऽरी ॥
43 अकिस सातस ति साधन निशि ब्यहनस
सु फल छ्य यी करिथ तप वरिय सासस ॥
44 बडयन योन्यन हुन्दुय फल साध दर्शुन
दयो गूव्यन्दस गोछ यी दोहय धुन ॥
45 कर सतसंग युस अद सूत्य सन्थन
वनय महिमा तम्यस अद कूत आसन ॥
46 करन तिम यस कृपा तस क्याह वनोनुय
वुछन तिम शिव ज़ौपऽरि ज़ुवछिय पनोनुय ॥

47 गछिथ तिर्थन छु अख फल ज़ीव प्रावन
यमिस सन्तय छि सम्रवान तस छु चौगन ॥
48 वौनुस गौरीय दोयुम सन्तय कथा वन
स्यठा गोम पऽद प्रेयम छस थविथ कन ॥
49 वननि लोग गौरिये कुन पान शम्बू
सु शम्बू सोदर यस कल्यान कुय छुय ॥
50 भरत खन्ड यमि सन्दे नावूक छु यथ नाव
वनय बिलकुल छोटुय कथ वार कन थाव ॥
51 भरत राजस यले वैराग आवृय
सु सन्तन साधनय छारान द्रावय ॥
52 यछा अऽसस मनस मंज़ ह्यम ब उपदीश
तमी अमि सन्कल्प किञा कृत्य छऽडिन दीश ॥
53 दोह् अकि वातनय वोतुय तपोवन
वुछिन अति रंग रंगय साघ सतज़न ॥
54 वुछिन यूगी मुनीश्वर ब्रह्मचारी
वुछिन मन्डेज सादन हन्ज़ चौपऽरी ॥
55 अजब ईकान्त यामत नज़रि आसय
मनन योछू नस करुन गोछ यति निवासय ॥
56 वुछिन गंङ्गा वसान बोलान शिवय शिव
स्यठा खोश गव भरत राज़स वुछिथ ज़ुव ॥
57 वुछिनि ल्वग ग्वूर यिमन मन्ज़ कस ब धारन
भरत राज़ ओस मनस मंज़ यी व्यचारन ॥
58 शरण गछि २ प्युवुय सारिन परन सुय
नेत्रन डालनय सन्तय चरणय ॥

59 वुछुन अन्द कुन यिमन सज् अख छु साधा
अलोक्यक अछ सुत्चरिथ यस समाध ॥
60 स्यदय यूगी ज्ञानी वोद वानय
जत्यव्रय शान्त रूप शुभायि मानय ॥
61 मन चरणन मलन ज़न ज़नि जोरा
भरत राज़न ग्रुथय वुछ तुजिन दोरा ॥
62 धुतुन प्रणाम बारम्बार अतिनस
थोवुन सतसंगसय अति कन लोगुस रस ॥
63 ग्यवान अऽिस विजि २ भक्ति अमृत
युथुय ती बूज् भरतन तस गयी सथ ॥
64 वथित चरणन करुन प्रणाम ब्ययि तम
शरण ग्छथय परन ध्यव वोन यि अद तम्य ॥
65 ज़न्म कत्याह गयम स्य तोहि छारान
स्य लबिमव अज् वोञ्ज कहि ताम कहिताम ॥
66 छिवना तोहि दीन बन्दो ज्ञान सागर
दया दृष्टि करिव तोहि वरिव स्य ईश्वर ॥
67 शरण आस भक्ति वत्सलो कृपालो
अनाथस प्यठ दया करतो दयालो ॥
68 यि बूजि्थ तस गोरव दिति मटि मटे
दोपुहस कैंह न फिकरा असि च मटे ॥
69 प्रणामा दिथ भरत जी खोतय जंगल
अनिन फल फूल तऽलसी पूजि् कित ब्यल ॥
70 करिथ आव सू गंङ्ग्य जल ति श्रानय
अथस वयथ अर्ग पोशि ब्यल पानय ॥

71 गोरु पादन निशे थविन कोरुन म्यूठ
करिथ प्रणाम गुलि म न्डथ पत्थर ब्यूठ ॥
72 छिना सत गोर दयाये हन्दि न्यदानय
भरत भक्तिस धुतुरव सत नाम दानय ॥
73 गोरव पानय मुचरिथ थोवुस तोरुय
दोहय दपहस करुन क्याह गछि ति सोरुय ॥
74 गछिय कँह दोह त्रिवीनी तीर्थ आवय
करनि सरवरय लगि बरनी चावय ॥
75 गछनि लगि साद्य ग्रहसती यात्रये
तुलिख डेरय पत्यकिन हत्थ द्राये ॥
76 भरत राजनि संगी गयि अज्ञ्याये
गछव अस्ति गुरन मंगनि आये ॥
77 गोरव दोपहरव अच्छा गछिव स्यठाह जान
करिथ प्रणाम गरुन तिम द्रायि दोरान ॥
78 भरत जी पान ब्यूठ सेवायि भापत
मलनि ल्वग गोर पादन आज्ञ्या हाथ ॥
79 वोनुस गुरुनय च कोनो घोख भरतो
अम्युक कारण छु क्याह प्रछनीय छुसय बो ॥
80 भरतन फीरथिय द्रोप ही भगवान
समिथ तिर्थय छि यति नस तुहुन्दि चरण ॥
81 यि बूजिथ कोर गोरव भरतस शाबाश
बनि नोन बुज हन्दिन नेत्रन च्य जल गाश ॥
82 गोरव भरतस वोनुय वोञ ब्येह च न्यबर
फिरिथ थविजि च पत कुटि यायि हुन्दबर ॥

83 ब कर आराम च गछ फेर न्याबर बेह
करी रवोश यखतियारय करत छु र्दSछ ॥
84 करिथ प्रणाम भरत भकतय न्यबर द्राव
वनय कोता मने मंज़ ओस तस भाव ॥
85 फिरिथ बर थोव नम्य कुटियायि हुन्दुय
त्युथुय ब्यूठ्य सु युथ रुज़स नज़रय ॥
86 गछिथ परहा प्र्धशे सात मरथन
वछिन गुरिनय प्यठ त्रिय तार दोरन ॥
87 स्यठा मलीन वुछिनख नऽल्य वस्त्र
कनन ज़ेवर कुहुन ज़न ओस शस्त्र ॥
88 स्यठा मोकुय वुछिथ गयि तस ति नफरत
भरतनय कर नय कर यिमव कथ ॥
89 गुर्यव प्यठ वोठ छिन्यख नन वारि आये
ज़ने त्रशिव्य तिमय कुटियायि चाये ॥
90 अचिथ अन्दर कोरुख कुटियायि बन्दबर
मलनि लजि सन्थ चरणन द्राव खय शर ॥
91 भरतस गव यि शख क्याह ताम छुय कथ
अचिथ बर बन्द यिमवय क्याज़ि कोर अथ ॥
92 भरतय वुछिनिल्वग यिम नेरनय कर
गछिथ पहरा न्यबर तिम द्रायि सोन्दर ॥
93 नज़र यामत प्ययस मचुरुय तिमव बर
भरत मनसय अन्दर लोग करनि आश्चर ॥
94 वुछिथ भरतस यिमय गयि अकल तस दंग
वुछुन आश्चर युहुन्दुय रूप तय रंग ॥

95 स्यठाह तिम रूप वानय तीज़ बरिथय
मनोहर क्या सोन्दर पैराव करिथय ॥
96 भरतस आव देमाग सपुद सु मोहतर
पकन तिहिन्दे हरन ओस मुशक अम्बर ॥
97 खसिथ त्रनवय गुर्यनय दार त्रऽवख
भरतस बुथ पनोनुय वार होवुख ॥
98 यिथय पऽठिन वुछुय भरतन पगाह ती
वुछमुत काल ओसुस आश्चर यी ॥
9) तिथय पऽठयी तिम आईय त द्राये
भरतय बेयिअद रुदय ज़ागे ॥
100 युथुय तिम द्रायि गुर्यनय खसनि लजे
भरतन थफ करअ पत्य किन करिथ जय ॥
101 भरतस कोर तिमव फीरिथ जयकार
भरत लोग प्रछिनि तिमनय वुछन वार ॥
102 दोपुनख नाव क्याह छुव तोहि माता
दोपुस गङ्गायि छस गङ्गायि जमना ॥
10 यि छय माता सरस्वती त्रेयम ज़नि
म्य नय थरवय खथिय काह कथ वनयननि ॥
104 भरतन याम बूज़ कोरनख प्रणामय
भरत राज़य व्यचारीन लोग यि तामय ॥
105 दोपुनख योर तोहि अयेव क्याज़े
मनस मंज़ छयम गमच्चि अख शंखाये ॥
106 तुहुन्दुय रूप ओसुव बोंड़ मकुरूय
वुछुन छुस ओर नीरिथ अऽन नूरुय ॥

107 अम्युक कारण छु क्याह माता वनिव जल
सथय वनिज्यम त कोंह वनिज्यम न छल बल ॥

10? यि बूजि़थ व्रनवय लजय असऽने
वनान्य अद लजि गुरिनय खसऽने ॥

109 भरतो भ्रम च्य गोमुत छुय मनस मज्र
छि किथ तिम संकल्प नारायनस मंज्र ॥

110 भरतो मन च कर गोड साविधानय
च्य क्याह गोय भ्रम च अऽसिथ व्यदवानय ॥

111 त्रिबीनी तिर्थस लगिमत्य त्रे दोह् वऽत्य
छि तोत आमत्य स्यठाह् अज्र पऽतीय यऽत्य ॥

112 स्यठाह् रत्य आयि भक्त कांह नय पूर
करिथ पापव न ह्योक हय सोनुय दूर ॥

113 तवय यिहन्धन रणन निशि असि वऽत्य
छि अजि़किस समयस पूर्ण यिमय यऽन्य ॥

114 अगर यिम तोत यिहन असि त्यील न युत ओस
अवय योत यिथ असे सन्कल्पय कोस ॥

115 स्यठाह् तोर आयि पऽपी कोरुख श्रानय
छलिथ मन प्राण व्यज्र पऽठय धितुख शानय ॥

116 तिमन चलि सानि श्रानय पाप सऽरी
तिमय असि लगि त अस्य सऽपन व्यकऽरी ॥

117 छिन ययिस पाप तोत तामथ हरऽनय
न योत तामथ लगन सन्तय चरणनय ॥

118 तवय अस्य सन्थ चरणन आयि शरणे
हरनि लोग तीज्र अस्य पाप हरने ॥

119 लगन यामथ छि तिर्थस साध चरणय
बनन निर्मल सु अद पापय छि हरदनय ॥
120 छि सऽरी पाप सऽनिय तिम ह्यवानय
मगर सन्तन न यिम केंह् छिथ करानय ॥
121 छि यिम रोज़ान हवालय ईश्वर सय
छु वऽतिथ ईश्वरऽय सुय ज़र ज़रसय ॥
122 छु कर्मुक फल दिवन सुय पान ईश्वर
यीमस यी वाति दी तस ती बराबर ॥
123 करन यिम साधनय हन्ज़य छि न्यन्दा
छि यिम पापय खसन अद बन्य क्याह् ॥
124 छि यिम सन्तन त सादन ग्येलनय बोज़
यिमय पापय तिमनय स्येलनय बोज़ ॥
125 करन निन्दा दिवन साधन छि पामय
तिमन क्युत ईश्वरन थोव यी वनत्मय ॥
126 ह्वडन असनय कडन ब्रंड यिम छि सादन
खसन पापय तिमन यिम बारि थव कन ॥
127 बरन भावय करन तोता छि सन्तन
मिन सन्तन हुन्दय पोञ्ज फल छु मेलन ॥
128 न सन्तन छिय पोञ्ज तय पाप रोज़न
वोनुय असि प्रेयेम किञ्ज छुख कन च थावन ॥
129 यीमस सन्तन हुन्दुय योत भय चव्रावय
सु सन्तय दीव किञ्ज ब्रूंठि आवय ॥
130 वनानय यी तिमय त्रनवय द्रायें
गयय तिम तोत यति ब्यठ ब्रोंठ आयें ॥

131 भरतल्वग दपनि हय हाय हाय हाये
यि क्या क्वर म्य यि क्या बोज़ गोम वाये ।।
132 गरू न्यर्मल छि मनसय क्याह् गयम राव
मनस मंज़य गोरय न्यन्दा करम हाय ।।
133 म्य पानय नरकसय मंज़य करम जाय
ज़िन्दय मोर वाति ज़ालुन यी छु उपाय ।।
134 वनन शास्त्र छु प्रायाच्चित अम्युक यी
ग्वरय न्यिदा कर वुन पात की छुय ।।
135 भरत जी पाने ओस पन्डित पटीय
सु ज़ानन कथ कथय क्या वातनय छुय ।।
136 खसिथ जंगल अनुक ज्युन कोरुख अम्बार
दोपनय ज़ाल पानय करिख व्यचार ।।
137 गुरुस गोड आज्ञञा ह्यथ गछि युनुय
तवय पत पान ज़ालुन पज़ि करुनुय ।।
138 नतय खऽस दूशिसय प्यठ ब्याख अपराद
दवन २ गुरुस निशि गव रटिन पाद ।।
139 वदन २ गुरुस वोननय वृतऽथ्य
दियिव आज्ञा म्य पानय ज़ाल वोञ्ज बय ।।
140 गुरुन दोपनस भरतो छुख च मूर्खय
करन कोनो छुख व्यचार केंह् चय ।।
141 तिर्थ सपुद ब्ययि म्यानि दरशनय शऽद्ध
च्य कति छिय पाप वोञ्ज ती कोन छय बऽद्द ।।
142 भरतन याम बूज़ुय आव तस होश
दवन २ चरणन लाऽगनय पोश ।।

143 दिह्य ज़ालख यि दिह छा चोन बनतम
भरतो क्याह गवुय अथ बुनि छुया भ्रम ॥
144 मनन व्यचार पाप दिह् सय क्रथ च्य पुशरुथ
च नय दिह मयन च्य वयाज़े पान मश रुथ ॥
145 च छुख निर्मल करिथ क्राविथ त सोरुय
अंहकारय किने खोतमुत च्य बोरुय ॥
146 अंहकार त्राव त्रावुन गव हतो यी
न ज़ानोन य ज़गत गछि नय च्यत बुय ॥
147 परे छन भाव त्राव प्राव ब्रह्म भावय
शिवय ज़ान पान सानय प्रथ ह्वावय ॥
148 योह्य निशचय च दर कर बा व्यचारय
छु आत्म न्यविकल्पय त्राव व्यचारय ॥
149 भरत बूजिथ बन्योवुय निर्विकल्पी
बन्याव जीवन मुक्त दवन दवानय ॥
150 यमराज़न यमय ह्वतन वोनुनय
समय भरतस छुय वोञ्‌न गछि अनोनुय ॥
151 धर्मराज़नि कलमय केह दीतव
टिकानय गयिजि भरतुन जीव अनव ॥
152 वुछुख अन्दरय त न्यबरय शिव सु गोमुत
ब छुस भरतय अम्युक अभिमान प्योमुत ॥
153 वुछिथ यी अश्चरस यम दूत संपनि
लगी पोत २ चलिन ह्यति हय कडिपंन ॥
154 तिमव वोन क्याह हावव धर्म राज़स
छु यति सोरुय शिवय वोञ्‌न क्या वनव तस ॥

155 कडोनुय कुस निमोनुय हाय तोरूय
अन्दर न्यबर बनयोमुत शिव यि सोरूय ॥
156 गयि यम दूत शेछि हऽथ धर्म राज़स
तोहे महाराज असि सूज़िव निशि कस ॥
157 भरत नय नाव मात्र ताञ्ग तोरय
बन्योमुत अन्दर न्यबरय शिव सोरुय ॥
158 बननि लग्य धर्म राज़स यम केकर
चूली चूरे वुछिथ सुय चायि थर थर ॥
159 च या मारख ज़ि सन्त तय साद्य सऽरी
तिहिन्द उपदीषनय यिम जीव तऽरी ॥
160 करन उपदीश छिख आत्म ज्ञानय
तवय तिम च्य ति असि छिय बुथफिरानय ॥
161 लगन यिमनय छि सन्तन हिन्द चरणय
बनन निर्मल तिमन छिय पाप हरनय ॥
162 कख क्याह् असि च क्या करख तिमनय
छि सायस सन्त सतगरुय यिमनय ॥
163 करव क्या असि सन्तन निशि न केह् ह्योक
सिर्फ असि दिह अभिमानी अनिथ ह्योक ॥
164 धर्म राज़न वोनुख बुजिव थविव कन
न गछि ज़ाह् तोत गछुन यति आसि सतज़न ॥
165 तमी सातय वते गौरी तोतुय गोस
सिखिम दृष्टी किनी वुछुमय स्वरन ओस ॥
166 ब छुस सोरूय कुनुय चीतन दोवय
छुसय सारी निशे अतीत ते बुय ॥

167 मनुक धर्मय कथन च्यन्तन छु सोरूय
ब चीतन अमि ति निशि छुस अतीथय ॥
168 अतथिय अमि ति निशि छुस अतीथय
वनन पानस सुयी ओसुय म्य बुछमय ॥
169 म्य वोनमस ही भरथी दन च धन्य धन्य
स्वरूपस पननिस छुख म्यूल मुत वोञ्ञ ॥
170 भरतन ओर असुना छुनिथ वोननम
म्य मन्ज़ म्यलुत न म्यलुन छा च्य छय भ्रम ॥
171 छु मायाये त दृशस मंज़ यि म्येलुन
म्य च्यऽनिस अन्दर नय पजि च्ये तेलुन ॥
172 म्य वोन मस यलि चय चीतन सोरुय
त्यले चय दृश अदृष्य म्यलुन न म्युल छुय ॥
173 भरतस छोप गयि गव न्यर्विकल्पय
अवस्था तस बनेयो क्या वनय बय ॥
174 म्य तव पत वोनुस दोयि लटि भरतो
च वन कुस छुख म्य पृछानय छुसय बो ॥
175 यि बुज़िथ भरतनय तमि यिज़ि न केंह वोन
तमी विज़ि भरत भावय तस विशे छचोन ॥
176 गछिथ केह काल वनने लोग छु आश्चर
छु पानय शिव प्रिछन पानस कथय कर ॥
177 म्य वोन मस ही भरत च्यय निशे आस
ब कर आत्मनि रूयय शख म्य चय कास ॥
178 म्य निशि गछ दूर वोन भरतन म्य फीरिथ
भावाचे पद सुज़ीव किन ह्योकन नीरिथ ॥

179 दोयुम कुस छुम्य ब्योन सुय ब च्य हाव नय
बूर्यमि रूत्य छुसय चीतन गनय ॥
180 वनन यी गव भरत ब्ययि मन्ज़ समजय
सु गोय मन्ज़ त्रानिय सारेय अपज़य ॥
181 विद्ध भुक्ती ति प्रऽवन परम पदवी
वनी तमिसिन्ज कथय पानय म्म वुछथय ॥
182 शिवन दोपनस ज़ि यिम सन्त आश्चरी छिय
स्यठाह प्रसन्न यी बूथि गयि सो गौरी ॥
183 दोपुस दीवी म्य वनतम वार पऽठो
छि किथ तिम आस वऻा यिम च्यानि टऽठी ॥
184 शम्बू नाथन वोनुस फीरिथ वनय बोज़
अमा गोड सावि दानय मन करिथ रोज़ ॥
185 स्यठाह दुर्लभ छु प्रज़नावून भक्त जन
वनयथि आस वऻा छिय तथ च थव कन ॥
186 अमा बोज़ तोति केंह तिहिन्दी च लक्षन
करन उपकार रात्र धन छि सथ ज़न ॥
187 गृहस्ती आसनय या तिम विरक्तय
म्य निशि दोनवय हिवी छिय तिम त भक्तय ॥
188 करन उपकार साधन पननि वंऽसे
दिवय तिम सरिनय सऽख दु:ख न कंऽसे
189 तिमय गयि साध यिम पर उपकऽरी
तवय वोनमय लगय बो पऽरि पऽरी ॥
190 तिहुन्द हृदय छु रागय दीश रोस्तुय
दयाये हन्दि न्यदानय ज्ञान सोस्तुय ॥

191 उधुगी आस वञ्ञ तिम छिय जित्यद्रय
करन ज़ीवन सतुक उपदीश निर्भय ॥
192 सहज़ यूगुक अभ्यासी तिम छि साद्यय
उत्तम यूगी तिमय गयि थव च यादय ॥
193 यिमय सन्तय छि छुख सरल सोभावय
छु भख्ति वत्सलय अदत्यु हुन्द नावय ॥
194 महा ग़ंभीर च्यथ निर्मल छु साधन
तवय वोनमय लगय बो सन्त चरणन ॥